मंत्र साधना सिद्धि विशेषांक

मई 2010

मूल्य : 24/-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

आसुरी महाकल्प तंत्र

शनैश्चरी अमावस्या तंत्र

चन्द्र ग्रहण और अप्सरा

मंत्र जप से सिद्धि

A Monthly Journal

तु कहै पोथिन बाची, मैं कहूं आंखिन देखी

ज्ञान रूपी गंगा, क्रिया रूपी यमुना, वाणी रूपी सरस्वती का मेल है -

सद्गुरुदेव के अमृत वचनों में, जो सिंचन कर देते है
साधकों के हृदय और मन को।

जिस वाणी में है -
ब्रह्मा का ज्ञान, शिव का ओज और
विष्णु का तेज समाहित है -

ऐसे अमृत प्रवचन सुनिये बार-बार -

ऑडियो कैसेट/सी.डी

- ✧ गुरु मुखी स्तोत्र
- ✧ भजन कुछ कर ले
- ✧ नारायण नारायण
- ✧ सद्गुरुदेव
- ✧ भजन सागर
- ✧ तू व्यापक डाली डाली है
- ✧ ध्यान योग
- ✧ गुरु हमारी जाति
- ✧ अब तो जाग
- ✧ कुबेर पति शिव शक्ति साधना
- ✧ पारदेश्वर शिवलिंग पूजन
- ✧ शिवसूत्र
- ✧ महाशिवरात्रि पूजन
- ✧ षोडश गुरु पूजन
- ✧ विशेष गुरु पूजन
- ✧ गुरु वाणी भाग १-२-३
- ✧ सिद्धाश्रम महात्मय
- ✧ मंजुल महोत्सव-९८ भाग १-५
- ✧ महातंत्र साधना शिविर-९५ भाग १-६
- ✧ महासरस्वती स्वरूप साधना
- ✧ ऐं बीज साधना
- ✧ बसन्त पंचमी साधना

वीडियो सी.डी

- ✧ एकादश रुद्र साधना शिविर
  वाराणसी-९८ भाग १-६
- ✧ महाशिवरात्रि शिविर-९७ भाग १-३
- ✧ निखिलेश्वरम् महोत्सव
  इलाहाबाद-९३ भाग १-३
- ✧ गुरु पूर्णिमा
  हैदराबाद-९७ भाग १-३
- ✧ निखिलेश्वरम् महोत्सव
  गोधरा-९२, भाग १-३
- ✧ राज्याभिषेक दीक्षा
  दिल्ली-९७, भाग १-६
- ✧ निखिलेश्वरम् महोत्सव
  जोधपुर-९२, भाग १-३
- ✧ सिद्धाश्रम
- ✧ सिद्धाश्रम प्रश्नोत्तर
- ✧ गुरु पादुका पूजन

न्यौछावर प्रति ऑडियो कैसेट - 30/-
न्यौछावर प्रति ऑडियो सी.डी. - 30/-
न्यौछावर प्रति वीडियो सी.डी. - 60/-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट, कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : 0291-2432209, फैक्स : 0291-2432010

आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

आत्म - प्रकाश

॥ ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

सद्गुरुदेव

स्तम्भ

वर्ष 30 अंक 05
मई 2010 पृष्ठ 88

साधना

दीक्षा

स्तोत्र

विशेष

प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी)

प्रधान सम्पादक
श्री नन्द किशोर श्रीमाली

कार्यवाहक सम्पादक
श्री कैलाशचन्द्र श्रीमाली
श्री अरविन्द श्रीमाली

प्रकाशक एवं स्वामित्व
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
द्वारा
सुदर्शन प्रिन्टर्स
487/505, पीरागढ़ी,
रोहतक रोड, नई दिल्ली-87
से मुद्रित तथा
सिद्धाश्रम 306 कोहाट एन्क्लेव,
पीतमपुरा, नई दिल्ली से प्रकाशित

मूल्य (भारत में)
एक प्रतिः 24/-
वार्षिकः 258/-

:: सम्पर्क ::
सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोनः 011-27352248, टेली फैक्सः 011-27356700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342031 (राज.) फोनः 0291-2432209, टेली फैक्सः 0291-2432010
WWW address - http:/www.siddhashram.org E-mail add. - mtyv@siddhashram.org

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'मंत्र–तंत्र–यंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क–कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायं, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु–संत होते हैं, अतः उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद–विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद–विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद–विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 258/– है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता–असफलता, हानि–लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

☆ प्रार्थना ☆

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्रयदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचिता ॥

'हे मां! तुम्हारा स्मरण करने से समस्त जीवों के भय का नाश होता है, और शांत–चित्त से स्मरण करने से अत्यन्त शुद्ध बुद्धि तुम देती हो। दरिद्रता, दुःख और भय का नाश करने वाली तुम्हारे सिवा कौन है? सर्वजनों के उपकार के लिये तुम्हारा चित्त सदा दया से सुकोमल रहता है।

☆ ज्ञान का दीपक ☆

रात्रि का अंधकार वातावरण को अपने आवरण में छुपाने लगा था। सांध्य प्रार्थना के बाद गुरु ने अपने प्रधान शिष्य को पुस्तक सौंपते हुए आज्ञा दी कि इसे आश्रम के भीतर प्रकोष्ठ में रख आये।

शिष्य पुस्तक लेकर भीतर गया किन्तु तत्काल लौट आया और घबराये स्वरों में बोला – 'भीतर सांप है गुरुदेव'।

'कोई बात नहीं', गम्भीरता से गुरुदेव ने कहा – 'मैं तुम्हें सांप को कीलने का मंत्र बतलाता हूं, तुम भीतर जाकर इस मंत्र का उच्चारण करो। सांप अपने आप भाग जायेगा।

शिष्य ने वैसा ही किया, थोड़ी देर बाद वापिस आया और **बोला – 'गुरुदेव!, सांप तो अपनी जगह से हिला भी नहीं है।**

'कोई बात नहीं, हो सकता है मंत्र को तुमने पूर्ण श्रद्धा से नहीं जपा होगा, जाओ और मंत्र में मन लगा कर दोबारा उसका जाप करो'।

'जो आज्ञा', कह कर शिष्य भीतर चला गया।

'सांप तो ज्यों का त्यों पड़ा है गुरुदेव' शिष्य ने कहा।

'ओह! गुरुदेव ने कहा – 'तुम दीपक लेकर भीतर जाओ, वह भाग जायेगा।'

शिष्य दीपक लेकर भीतर गया। थोड़ी देर बाद लौट कर बोला – भीतर तो सांप था ही नहीं गुरुदेव, वह तो एक मात्र रस्सी थी किन्तु मुझे अन्धेरे के कारण सांप का भ्रम हो गया था।

गुरु के मुख पर मधुर स्थिति उभरी – 'वत्स!, यह भ्रम–जाल ही संसार के समस्त जालों का कारण है। भ्रम अर्थात् सत्य पर असत्य का भ्रमात्मक आवरण। यह भ्रम तब तक दूर नहीं हो सकता जब तक कि ज्ञान दीपक का प्रकाश हमारे पास न हो। अतः यदि भ्रम, दुःख एवं भय से बचना हो तो ज्ञान के प्रकाश को निरन्तर बढ़ाते रहना आवश्यक है।

शिष्य अवाक् था, उसे भी अपने गुरु से ज्ञान प्रकाश की एक हल्की किरण मिली थी और उसकी हल्की झाईं से उस शिष्य का अन्तर्बाह्य रोशनी से झिलमिला उठा था।

पूर्ण शिष्य भाव स्वरूप
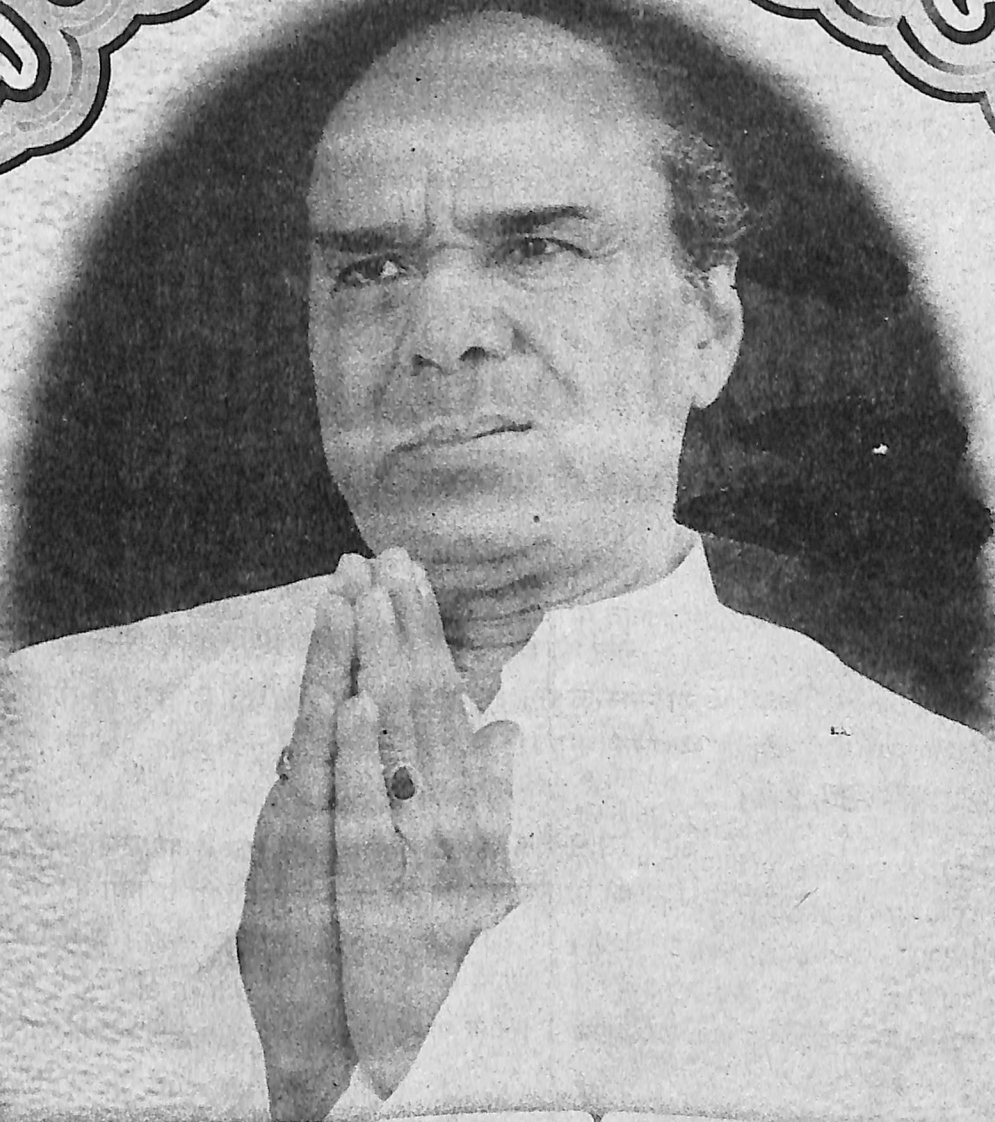
जै हनुमान ज्ञान गुण सागर

सद्गुरुदेव कहते हैं, शिष्य बनना जीवन का महानतम् कार्य है और शिष्य में ज्ञान, गुण, चतुराई, शक्ति, शौर्य, साहस होना ही चाहिये। साथ ही आलस्य उससे दूर रहे। शिष्य बनने में आनन्द ही आनन्द है क्योंकि समर्पित शिष्य बनते ही गुरु हृदय में स्थापित हो जाते हैं। हनुमान का उदाहरण देते हुए गुरुदेव का यह प्रवचन वास्तव में गुरुपूर्णिमा का ही प्रवचन है, जिसके प्रत्येक शब्द को ध्यान से समझें -

शिष्योर्वतां शिष्य सदैव जीवं
प्राणं च आत्मा बल चैव ज्ञानं
चिंत्यं विचिंत्यं देवत्व मेदवं
शिष्यत्व रूपं शिष्यत्व दिव्यं।

हनुमत सैव्य ग्रंथ है, जो आपने देखा नहीं है। हनुमान जैसा विद्वान और शिष्य पृथ्वी पर अभी तक कोई पैदा नहीं हुआ। शिष्यता की वे पराकाष्ठा थे और विद्वता कि भी पराकाष्ठा थे।

हनुमान को हमने देखा है राम के सेवक के रूप में जब कि जहां भी शिष्य शब्द का प्रयोग होगा वहां हनुमान का नाम लेना ही पड़ेगा और उन्होंने अपने जीवन में तीन ग्रंथ लिखे। उन तीनों ही ग्रंथों में हनुमत सैव्य लगभग 115 श्लोक हैं और एक-एक श्लोक एक एक हीरे की तरह है।

...और उस पुस्तक के बाद जिसने भी लिखा है वह उस पुस्तक की नकल ही की है, उस पुस्तक का सारभूत लेकर ही चलाया है। वह ग्रंथ अपने आप में बेजोड़ है और बचपन में मुझे वह पूरा का पूरा ग्रंथ कंठस्थ था और आज भी है और मैं उसके प्रत्येक शब्द को, प्रत्येक श्लोक को अपने जीवन में उतारने की कोशिश करता था जब मैं शिष्य था। शिष्य मैं

आज भी हूं क्योंकि शिष्य शब्द अपने आपमें समाप्त होता ही नहीं है।

इन श्लोकों का सार जब मोतियों की तरह गले में पहना होता है तो अपने आप में वह एक साधारण शिष्य देवता बन जाता है और इतना बड़ा देवता बन जाता है कि राम स्वयं हनुमान को कहते हैं, कि तुम भरत से भी ज्यादा प्रिय मेरे भाई हो।

तुलसीदास भी कहते हैं

जै हनुमान ज्ञान गुण सागर ....

आप ज्ञान और गुण के सागर हैं, और तुलसीदास जी आगे कहते हैं कृपा करो गुरुदेव की नाईं।

जैसे गुरु कृपा करते हैं वैसे ही हनुमान आप कृपा करें। गुरु की कृपा देवताओं से भी ज्यादा उच्च कोटि की कही जाती है।

तुलसीदास यह भी कह सकते थे कि कृपा करो इंद्र की नाईं या कृपा करो विष्णु की नाईं। वे ऐसा भी लिख सकते थे। मगर वे विद्वान थे और उन्होंने कहा कि जितना दयालु और जितना अद्वितीय स्वरूप गुरु का हो सकता है उतना और किसी का नहीं हो सकता।

जब तुलसी ने हनुमान चालीसा लिखा तो उन्होंने इसी शब्द का प्रयोग किया और कहा कि आप ज्ञान और गुण के अद्वितीय सागर हैं और आप क्रोध में अग्नि स्वरूप हैं कठिन से कठिन कार्य करने में आप अग्रणी रहे हैं, फिर भी आप गुरु की तरह हम सब पर कृपा करें।

इस से इस बात का परिचय मिल जाता है कि गुरु क्या है और शिष्य क्या है? और जब तक हम उस भाव को समझेंगे नहीं तब तक हमारे जीवन में कुटिलता बनी रहेगी और कुंटिलता का अर्थ है नीचे गिरना।

आप चाहे पुरुष हैं, चाहे स्त्री हैं, आप शिष्य तब कहलाएंगे जब शिष्य की कसौटी पर खरे उतरेंगे। मैं अपने को भगवान कह दूं, मगर जब भगवान की कसौटी पर खरा उतरूंगा तब मैं भगवान हूं। शिष्यता की कसौटी पर आज मुझे घिसा जाए और मैं उस कसौटी पर खरा उतरूं तो मैं शिष्य हूं। गुरु की कसौटी पर खरा उतरूं तो मैं गुरु हूं।
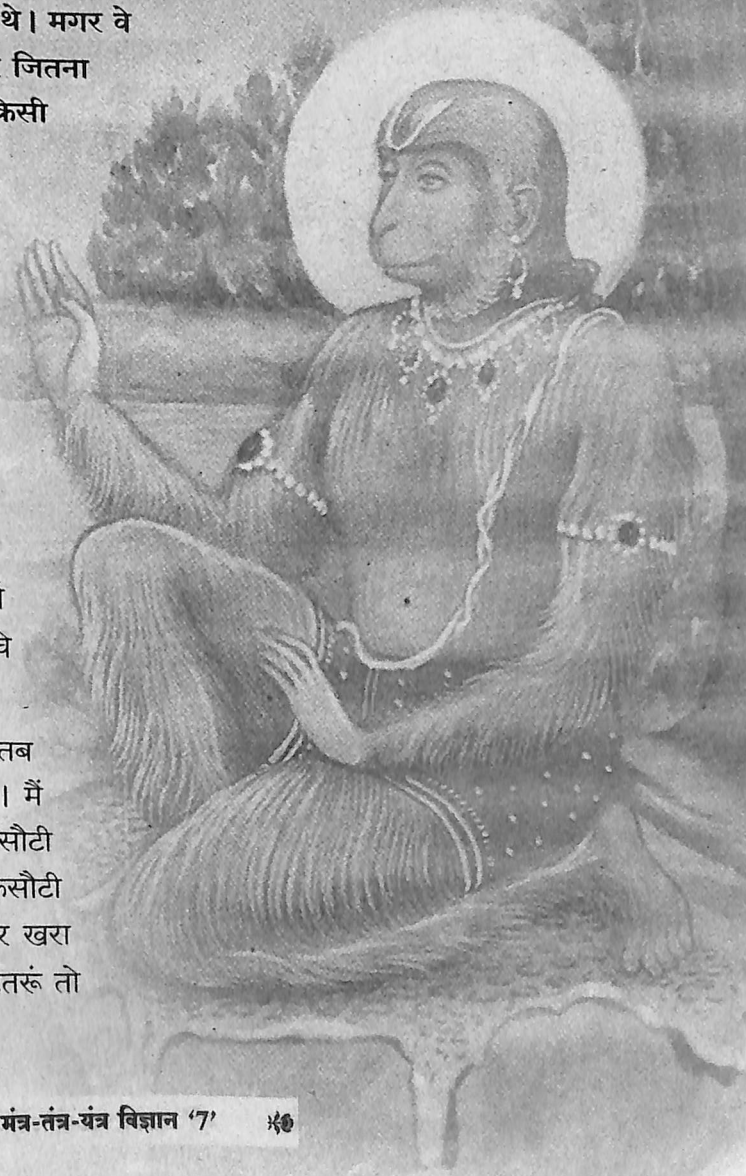
क्रोध तो मैं भी कर ही सकता हूं। दोनों आंखों को सूर्य और चंद्रमा कहा गया है। एक आंख अपने आप में सूर्य के समान क्रोधमय और अग्निमय होनी चाहिए और गुरु की दूसरी आंख बहुत शीतल और पवित्र भी होनी चाहिए। कोई क्रोध में जलाकर शिष्य को समाप्त करना गुरु का कर्त्तव्य नहीं है। ...परंतु किसी भी शिष्य में अंदर पाप हो, तो उसे क्रोध के माध्यम से जलाकर के और शीतल जल से स्नान कराकर के उसे सही अर्थों में शिष्य बनाना, वह गुरु का धर्म है।

हो सकता है सामने वाला शिष्य नहीं बन पाए और हो सकता है बहुत जल्दी बन जाए। मगर संसार में यह हनुमान का उदाहरण है कि वह शिष्य देवताओं से भी अधिक पूजा जाने लगा है। भारतवर्ष में राम के इतने मंदिर नहीं होंगे जितने हनुमान के हैं।

राम कृष्ण और अन्य देवताओं के इतने मंदिर हैं नहीं। उनके मंदिरों को जोड़कर जो संख्या बनती है उससे भी ज्यादा हनुमान के मंदिर हैं, उस सेवक के मंदिर हैं, उस शिष्य के मंदिर है। इसका तात्पर्य है कि गुरु से भी उच्च कोटि की कोई स्थिति है तो वह शिष्यता है।

जब जीवन का सौभाग्य उदय होता है तो व्यक्ति गुरु नहीं बनता, जब जीवन का पुण्य उदय होता है तो व्यक्ति शिष्य बनता है। हनुमत सैव्य अद्वितीय ग्रंथ है जिसे वास्तव में हमें प्रकाशित करना चाहिए और प्रकाशित करके वितरित करना चाहिए। हो सकता है कोई चिंगारी किसी को लग जाए और सौ दो सौ में कोई एक शिष्य बन जाए। हनुमान के स्वयं के भी कोई अस्सी हजार शिष्य थे। नल, नील, जाम्बवन्त तक ने हनुमान को अपना गुरु माना। यहां तक कि सुग्रीव ने भी हनुमान के चरणों में सिर रख कर कहा कि तुम्हारे समान कोई गुरु नहीं बन सकता।

पूर्णत्व परिपूर्ण
स्वरूप भवतं
हनुमत महां राम
वै पूरा
गुरुर्वं सहितं
पूर्वं शिष्यं
गुरु मेवं च
उच्चते।

जहां गुरु शब्द आएगा वहां हनुमान शब्द आएगा और जहां शिष्य शब्द आएगा

वहां भी हनुमान का नाम आएगा।

मगर हनुमान ने कहा है, मैं गुरु नहीं बनना चाहता हूं। मैं जितना आनंद शिष्य बन कर के ले रहा हूं उतना आनंद तो पृथ्वी पर कोई देवता ले ही नहीं सकता।

और हनुमान गुणों के भी सागर थे, ज्ञान के भी सागर थे और चौबीस घंटों में एक बार भी उनके अंदर आलस्य और कुटिलता नहीं आती थी। और ऐसा भाव नहीं आता था, कि अगर हम कल सुबह देर से भी सो कर उठेंगे तो गुरु क्या कर लेंगे? जब आप स्वयं गुरु को कसौटी पर कसना शुरु कर देंगे तो फिर आपका शिष्य भाव, तिरोहित हो ही जाएगा। ऐसा सोचना शिष्य के लिए बड़ा ही ओछापन, घटियापन है यदि शिष्य के मन में कुटिलता आए या आलस्य आए।

आप शिष्य बनना चाहते हैं तो आपके अंदर ज्ञान और गुण दोनों आने चाहिए। ज्ञान का अर्थ है कि अंदर एक प्रकाश पैदा होता रहना चाहिए और गुण का अर्थ है कि जो गुरु ने कहा है उन गुणों से हम विभूषित होते रहें। हीरे और मोतियों से विभूषित नहीं। ...और आलस्य और शिष्यता का आपस में कोई संबंध नहीं है।

केवल 32 मिनट की नींद अपने आपमें संपूर्ण है यदि वह पूर्ण हो। गहराई के साथ हो तो केवल 32 मिनट की नींद पूरे 24 घंटे ऊर्जा प्रदान करती रहती है। हमें तो 32 मिनट से ज्यादा नींद प्राप्त होती है इसलिऐ आलस्य तो आना ही नहीं चाहिए शिष्य के जीवन में।

शिष्यता तो एक आनंद है, मस्ती है, अपने आप में, हर क्षण एक तत्परता है। गुरु धीरे-धीरे जड़ होता जाता है। वह बैठा रहता है, प्रवचन करता रहता है, विषय उसमें धीरे-धीरे बढ़ते रहते हैं, और रोगों से ग्रस्त होकर, वह समाप्त हो जाता है और अस्सी, परसेंट गुरु ऐसे हुए जो जीवन में अकर्मण्य हो गए, शिष्य भाव उनमें नहीं रहा। और शिष्य भाव नहीं रहा, केवल गुरु भाव रहा, तो अपने आप में रोगों में ग्रस्त होते गए। शरीर तो रोग ग्रस्त हो सकता है पर वे मन से भी रोग ग्रस्त हो गए, क्रोधमय बन गए, चिड़चिड़ापन आ गया, लड़ाई झगड़ों

में मन आ गया, वे स्वार्थ में आ गए।

इसीलिए हनुमान ने पहले ही कहा कि मैं शिष्यवत् ही रहना चाहता हूं। ...और जब लव और कुश से राम पराजित हो गए, अपने पुत्रों से पराजित हो गए। लव कुश को तो मालूम था ही नहीं। उन्होंने अपने जीवन में पिता को देखा ही नहीं था। लव जब गर्भ में था तभी सीता वाल्मीकि के आश्रम में चली गई थी, वहीं पर वह पैदा हुआ। वहीं पर कुश भी पैदा हुआ और दोनों बड़े हुए। ...और जब चक्रवर्ती बनने के लिए राम ने अश्व पूरे भारत वर्ष में भेजा कि जो भी इस अश्व को पकड़ेगा वह मेरा शत्रु है और राम का यह भाव था कि मेरा पूरे भारत वर्ष में कोई शत्रु हो ही नहीं, मैं सबको परास्त करूं और चक्रवर्ती कहला सकूं। पहले चक्रवर्ती बनने के लिए ऐसी क्रिया करनी पड़ती थी।

और जब वह अश्व दौड़ता वहां तक पहुंचा तो लव ने उसे पकड़ लिया। अश्व रुका तो सूचना पहुंची अयोध्या में और राम युद्ध करने के लिए आए और घनघोर युद्ध हुआ। राम जैसा विश्वामित्र का शिष्य और लक्ष्मण के साथ में। जब युद्ध हुआ तो लव कुश ने राम और लक्ष्मण दोनों को बांध कर गिरा दिया और जाकर मां को कहा कि चक्रवर्ती बनने के लिए कोई अयोध्या के राजा आए थे और उनको हमने बांध कर पटक दिया।

सीता चिंतित हो गई और दौड़ कर एकदम आई। देखा तो फड़ाफड़ा रहे थे दोनों। राम भी बंधे हुए, लक्ष्मण भी बंधे हुए। उनकी वीरता धरी की धरी रह गई।

सीता ने कहा-यह तुमने क्या कर दिया, यह तुम्हारे पिता हैं!

लव कुश ने कहा - ऐसे हमारे पिता नहीं हो सकते जो हमारी मां को उठाकर जंगल में फेंक दें। मगर आपने हमें ज्ञान दिया कि हमें शिष्यवत् रहना है सदा। इसलिए हम इनको बंधन मुक्त करते हुए इनके चरणों में प्रणिपात करते हैं।

यह एक छोटी सी कथा है पर इस छोटी सी कथा के पीछे तथ्य यह कि शिष्य अपने आप में बुद्धि बल, शक्ति, शौर्य साहस का प्रतीक होता है। उसमें केवल क्षमा और सेवा के गुण नहीं

होते, बल भी होता है, साहस भी होता है, इन चारों चीजों से मिलकर शिष्य शब्द बनता है।

शिष्य का अर्थ है अपराजेय, यानि वह जीवन में पराजित हो ही नहीं। और बल का अर्थ है शौर्य और साहस। बल का मतलब यह नहीं कि हर किसी से युद्ध करे। बल का अर्थ है यह निश्चय कि मैं जो कुछ करुंगा, करुंगा ही। हर हालत करूंगा। और यह करके दिखा दूंगा। बुद्धि का अर्थ है कि उस कार्य को किस प्रकार किया जाए, उस की समझ हो। इतनी चतुराई के साथ कार्य हो कि दूसरे लोग अहसास कर सकें कि वास्तव में यह एक शिष्य द्वारा कार्य किया गया है।

इन तथ्यों को लेकर के हनुमत सैव्य ग्रंथ लिखा गया है। इसका ही एक श्लोक आप के सामने स्पष्ट कर रहा हूं।

शिष्योर्वतां शिष्य सदैव जीवं प्राणं च आत्मा बल चैव ज्ञानं
चिंत्यं विचिंत्यं देवत्व मदेवं
शिष्यत्व रूपं शिष्यत्व दिव्यं।

हनुमान ने कहा है कि शास्त्र बिल्कुल सही हैं और शास्त्रों में लिखा है कि चौरासी हजार योनियों में भटकता हुआ व्यक्ति मनुष्य देह धारण करता है। बड़ी मुश्किल से यह शरीर मिलता है। और मनुष्य देह की विशेषता यह है कि मनुष्य ही सोच सकता है, समझ सकता है, आनंद ले सकता है। देवता नहीं ले सकते, राक्षस भी नहीं ले सकते। इसलिए बड़ी कठिनाई से यह शरीर मिलता है जिसके महत्व को हमने समझा नहीं। हमने समझा ही नहीं कि मनुष्य देह हमने क्यों धारण की, क्या इसकी विशेषता है? जो कुछ प्राप्त कर सकते हैं, हम इस मनुष्य देह से प्राप्त कर सकते है, और किसी अन्य देह के माध्यम से प्राप्त नहीं कर सकते।

और पहले श्लोक का अर्थ है कि ज्योंही हम शिष्य बनते हैं, चौरासी लाख योनियां अलग रह जाती हैं। बाकी सारी योनियां पार हो जाती हैं, बाकी सारी योनियां अपने आप समाप्त हो जाती हैं। फिर मृत्यु के बाद चौरासी लाख योनियों में भटकना नहीं पड़ता। केवल चार योनियां बाकी रह जाती हैं। फिर आने वाले समय में उन चौरासी लाख योनियों में भटकना नहीं पड़ता। केवल चार योनियां बाकी रह जाती हैं यदि हम शिष्य शब्द से विभूषित हो जाएं। और चाहे कुछ न किया, केवल गुरु के चरणों में सिर को झुका दिया। इतना करने से ही चौरासी लाख योनियां चार योनियों में सिमट कर रह जाती हैं। हो सकता है, फिर मृत्यु हो जाए परंतु फिर केवल चार योनियों में भटकने के बाद मनुष्य शरीर धारण कर सकते है। यह अपने आप में बहुत बड़ी बात, बहुत बड़ा गुण है। केवल गुरु चरणों में सिर झुकाने से इतनी बड़ी उपलब्धि प्राप्त हो जाती है।

और हनुमान ने कहा है कि यह जीवन की श्रेष्ठतम उपलब्धि इसलिए है क्योंकि इन चार योनियों को भी इसी देह में समाप्त कर
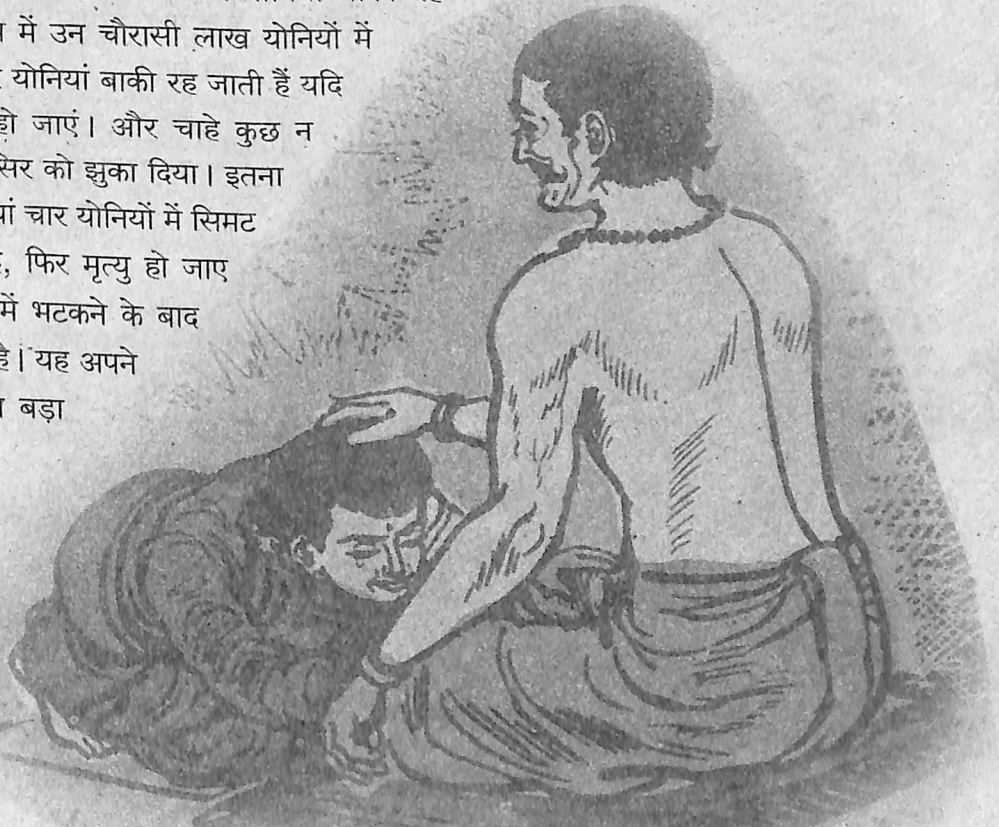
सकते है जिससे मनुष्य शरीर समाप्त हो ही नहीं।

इस श्लोक में कहा है कि शिष्य का अर्थ है पूर्ण आलस्य विहीन होने की क्रिया। और हनुमान ने कहा है कि मेरा जीवन इस बात का प्रमाण है। एक भी क्षण ऐसा नहीं रहा, जहां मैंने प्रमाद किया हो या आलस्य किया हो। राम ने मुझे आज्ञा नहीं भी दी और मुझे मालूम पड़ा कि यह समस्या मेरे गुरु, मेरे स्वामी के सामने आ रही हैं, तो मैंने तत्क्षण उस समस्या को दूर किया ही।

।। वंदो गुरुवदं चरण कमल पूर्ण भवत भवतु वै ।।

हनुमान कह रहे हैं कि मैं गुरु के चरण कमलों में अपने आप को प्रणिपात करता हुआ, यह हनुमत सैव्य ग्रंथ लिख रहा हूं।

उन्होंने राम शब्द का प्रयोग नहीं किया। उन्होंने गुरु कहा। उन्होंने हनुमान और राम का संबंध नहीं लिखा उन्होंने गुरु और शिष्य के संबंध के बारे में लिखा। उन्होंने कहा - इससे ज्यादा पवित्र संबंध संसार में नहीं है। और शिष्य का सबसे बड़ा गुण, अगर वह शिष्य भगवान की तरह पूजा जाए, यदि वह जीवन में बहुत ऊंचाई पर उठ जाए, यदि पूरा विश्व उनका ध्यान करने लग जाए, पूजा करने लग जाए और आप देखेंगे कि संसार के प्रत्येक देश में, चाहे वह इसाई देश हो या मुसलमान देश हो, हनुमान के मंदिर अवश्य हैं। दुबई में भी राम का मंदिर चाहे न हो पर हनुमान का मंदिर है और हम लोग वहां हनुमान की पूजा करने जाते हैं, मुसलमान देशों में भी, ईसाई देशों में भी, ...चाहे उनका धर्म अलग है क्योंकि हनुमान अपने आप में शिष्य का एक प्रतीक बन गए।

और जो आपके मन में यह चित्र बना हुआ है कि हनुमान का वानर की तरह मुंह है, और पूंछ है, वह तो एक प्रतीक है, वह तो वानर एक जाति थी उस समय, जिस प्रकार ब्राह्मण जाति है, क्षत्रिय जाति है उसी प्रकार उस समय वानर जाति थी। और वे भी उसी प्रकार मनुष्य थे जिस प्रकार तुम और मैं हूं। उसी प्रकार का चेहरा था, उसी प्रकार के हाथ और पांव थे, हमने वानर जाति को बंदर

समझ लिया और पीछे पूंछ लगा दी। न उनके पूंछ थी न वे वानर थे। लेकिन हमने धीरे-धीरे धारणा बना ली कि वे वानर थे, वानर की पूंछ होनी चाहिए हमने बस पूंछ लगा दी। यह पूंछ हनुमान के कहां लगी मुझे मालूम नहीं। मगर यह मुझे मालूम है कि महाभारत युद्ध में भी जब अर्जुन ने कृष्ण को कहा - मैं विजयी होना चाहता हूं, मैं क्या करूं? तो कृष्ण ने कहा - अपनी ध्वजा पर हनुमान को स्थापित कर दो। कृष्ण ने एक ही बात कही - तुम्हें विजय ही प्राप्त करनी है तो ध्वजा पर हनुमान का स्थापन कर दो, जिससे प्रत्येक क्षण हनुमान तुम्हारे सामने रहें और उस ध्वजा पर जो हनुमान का चित्र था वह मानव आकृति का था, वानर का नहीं।

यह मैंने एक चिंतन को आपके सामने स्पष्ट किया कि हनुमान मनुष्य रूप में विद्यमान थे।

हनुमान ने कहा कि राम ने आज्ञा दी या नहीं दी, मैंने सदा उनके हित से प्रेरित होकर हर कार्य किया। जब मुझे मालूम पड़ा कि राम को अहिरावण लेकर गया पाताल में -

और ज्योंहि वह अहिरावण राम लक्ष्मण की बलि देने के लिए तैयार हुआ, त्योंही हनुमान वहां पहुंच गए क्योंकि हनुमान शिष्य था। उसका ध्येय यही था कि मैं बिना आलस्य के अपने गुरु की रक्षा करूं, उनके लिए जीवन समर्पित कररूं। जीवन समर्पण करना शिष्य का धर्म और कर्त्तव्य है।

शिष्य का पहला कर्त्तव्य है आलस्य विहीन होना, शिष्य का दूसरा कर्त्तव्य है उस गुरु की रक्षा करना, गुरुत्व की

रक्षा करना। गुरु शब्द मैं प्रयोग कर रहा हूं। कोई राम की रक्षा या नारायण दत्त श्रीमाली की रक्षा करने के लिए नहीं कह रहा हूं। शिष्य का धर्म है गुरु की रक्षा करना और हनुमान सीधे पाताल लोक में गए और उस अहिरावण को समाप्त करके राम-लक्ष्मण को कंधे पर उठा करके वापस अपने स्थान पर लेकर आ गए। उसको कोई राम ने आज्ञा नहीं दी। राम ने यह नहीं कहा कि यह दानव मुझे पाताल लेकर जा रहा है, तुम मेरे पीछे आओ और छुड़ा कर ले जाओ।

हनुमान अपने आप में पूर्ण सचेष्ट था, सर्तक था कि कहां मेरे गुरु हैं? कहां मेरे स्वामी हैं? कहां है, और किस जगह है? किस स्थिति में हैं और मुझे क्या करना है? इसको चतुराई कहते हैं। चतुर का अर्थ है कि शिष्य की पैनी दृष्टि रहती है कि वे गुरु कहां पर हैं, किस स्थिति में हैं और उनके प्रति मेरा क्या कर्त्तव्य है और उनको किसी प्रतिकूल स्थिति से बचाना बल का पर्याय है।

इसलिए मैंने कहा - बुद्धि और बल शिष्य के गुण हैं। तुलसी ने कहा है -

कृपा करो गुरुदेव की नाईं

हनुमान मैं आपको गुरुदेव की नाईं स्मरण करता हूं। बल, बुद्धि में आप अद्वितीय हैं। इसलिए आप सही अर्थों में शिष्य हैं। आपमें बल है, क्षमता है, और बल का अर्थ है कार्य करने की चतुराई। किस तरह से मैं कार्य करूं जिससे कि वह गुरुत्व बचा रह सके। हर हालत मैं मुझे गुरुत्व को बचाकर इसलिए रखना है क्योंकि मुझे ये चारों योनियां समाप्त करनी हैं और चारों योनियों को समाप्त करने में गुरु के अतिरिक्त कोई और सहायक नहीं हो सकता संसार में - न राम, न कृष्ण, न इंद्र, न यम, न कुबेर।

इन चार योनियों को गुरु के अतिरिक्त कोई नहीं समाप्त कर सकता। अगर वे कर सकते तो वे स्वयं गुरु को धारण नहीं करते। ऐसा कोई देवता नहीं हुआ जिसने गुरु को धारण नहीं किया हो - चाहे इंद्र हो। उसने बृहस्पति को अपना गुरु बनाया।

इंद्र जो देवताओं का राजा है, वह कहता है - हम बार बार मन से और तन से पराजित हो रहे हैं और हम उच्च कोटि के देवता तभी बन सकेंगे जब हे बृहस्पति! आप पूर्ण गुरुत्व मय रूप में हमारे हृदय में स्थापित हो सकेंगे। मेरे अंदर के अंधकार और आलस्य को दूर करिए अन्यथा राक्षस हम पर हावी होकर हमें समाप्त कर देंगे।

बृहस्पति तो बेचारा अकेला आदमी था, दुबला-पतला। और ये सारे देवता इतने बलशाली थे ये इंद्र, विष्णु, ब्रह्मा, महेश, वरुण, यम, कुबेर, परंतु उन्होंने कहा - आप हैं बृहस्पति हमारे अंदर स्थापित, तभी हम देवता कहला सकेंगे।

हनुमान ने भी अपने ग्रंथ के पहले श्लोक में कहा है - गुरु को इसलिए मुझे अपने भीतर स्थापित करना आवश्यक है क्योंकि मैं अपनी चारों योनियों को समाप्त करके इसी जीवन में पूर्णता प्राप्त करूं।

यजुर्वेद के पहले श्लोक में कहा है कि मनुष्य जीवन एक बुलबुले की तरह है। एक पानी का बुलबुला है जो समुद्र में से उठा, फूंक मारी और समाप्त हो गया। पानी का बुलबुला थोड़ा उठता है और समाप्त हो जाता है ...ऐसा मनुष्य का जीवन है।

मगर उस मनुष्य के जीवन में एक छटपटाहट है एक वेदना है क्योंकि वह कुछ कर नहीं पाता। उसे अहसास है कि वह कमा भी रहा है तो बेकार है, पुत्र भी पैदा कर रहा है तो बेकार है क्योंकि उसके जीवन में आनंद नहीं है। वह बाजार में घूमता है तो भी आनंद नहीं है और होटल में खाना खाता है तो भी आनंद नहीं है क्योंकि उसके विकार समाप्त नहीं होते, उसमें कुटिलता बनी रहती है और हर बार उसका मन उन कुटिलताओं की ओर अग्रसर होता है और वह छटपटाता है कि कैसे बुद्धि को कीलित करें।

एक बूंद जब सागर से उठती है सूर्य की धूप के कारण भाप बनकर के ...और जब बादल बनती है तब भी उसमें बहुत छटपटाहट होती है, वह आवाज करती है, तड़पती है, गरजता है बादल क्योंकि उसे बेचैनी है कि क्या करे कहां जाए? हवा उसे उड़ा कर ले जाती है कभी पूर्व, कभी पश्चिम और वह बादल डोलता रहता है जैसे मनुष्य डोलता रहता है।

कुछ मालूम नहीं कि करना क्या है, सुबह भागते हैं, दौड़ते हैं ऑफिस पहुंचते हैं, नौकरी करते हैं, दुकान कर बैठते हैं, ग्राहकों को धोखा देते हैं, शाम को आते हैं हारे थके हुए, मरे हुए और बिस्तर पर पड़ जाते हैं। उनको यह पता ही नहीं हम कर क्या रहे हैं, कहां सुख है, कहां आनंद है कहां मस्ती है और मुस्कराहट कहां है?

पूरे जीवन में उन्हें मुस्कराहट प्राप्त होती ही नहीं क्योंकि उनके जीवन में गुरु ही नहीं है। उनके जीवन में कोई तथ्य नहीं है, आधार नहीं है, अवलंब नहीं है।

उस बादल के मन में भी कहीं खुशी नहीं है। वह उड़ता एक पहाड़ से टकराता है, हिमालय से टकराता है और टकराते ही बादल वापस बदल जाता है एक बूंद में। बादल रहता ही नहीं, एक बूंद बन जाती है टकराते ही।

पहली बार व्यक्ति जब गुरु से टकराता है तो वह भी परिवर्तित हो जाता है, शिष्य बन जाता है ...और वह बूंद बहने लग जाती है, धीरे धीरे एक धारा का रूप धारण करती है और फिर एक नदी बन जाती है और जितनी छटपटाहट जितनी वेदना उस नदी में होती है, उतनी छटपटाहट और वेदना पूरे संसार में नहीं है। किनारों को तोड़ देती है, क्रोध का एक पुंज बन जाती है, मनुष्यों, जानवरों को बहा कर ले जाती है, गांव बहा ले जाती है नदी। इस बात की परवाह नहीं करती कि क्या होगा। बस इस बात की चिंता होती है कि मुझे उस जगह मिल जाना है जहां से मैं उठी हूं जहां से मेरा प्रादुर्भाव हुआ है। ...और वह दौड़ती हुई समुद्र में मिल जाती है और मिलते ही शांत

हो जाती है। उसका दौड़ना भागना, इतना व्यग्र होने की क्रिया कि सब कुछ समाप्त हो जाते हैं।

...और हनुमान कहते हैं कि मनुष्य भी एक बूंद है और उसमें एक छटपटाहट है और संसार का कोई मंत्र, कोई विधि, कोई व्यक्ति उसकी छटपटाहट वह तब समाप्त कर सकता है जब वह गुरु में लीन हो जाए और गुरु को अपने हृदय में धारण कर ले। हर क्षण उसके हृदय में गुरु ही रहे।

और जब हनुमान से पूछा कि तुम कह रहे हो हर क्षण हृदय में गुरु धारण रहना चाहिए, वह कहां है? तो हनुमान ने अपना सीना फाड़ कर दिखा दिया कि देख लो मेर सीने में और कोई चीज नहीं है, बस राम और सीता बैठे हुए हैं। हनुमान ने कहा कि मेरे प्रत्येक रोम में, मेरी प्रत्येक हृदय की धड़कन में एक चेतना पुंज समाहित था कि मेरे हृदय में कोई विकार ही नहीं है, कोई कुटिलता ही नहीं है, केवल है तो वह राम सीता की जोड़ी है, वह गुरुत्व है, उसके अलावा तो हृदय में कुछ रखना ही नहीं चाहता हूं, क्योंकि मैं सही अर्थों में शिष्य बनना चाहता हूं, मैं बेचैनी नहीं चाहता, और जब गुरु अंदर हैं तो विकार आ ही नहीं सकता और जब वे अंदर हैं तो मेरी मृत्यु हो ही नहीं सकती। मैं जीवित रहूंगा।

...और त्रेता युग से लगाकर आज कई हजार वर्ष बाद भी हनुमान जीवित हैं। आज भी हम उनका स्मरण करते हैं, आज भी उनके मंदिर हैं, आज भी उनकी पूजा करते हैं। एक सेवक की पूजा कर रहे हैं, एक दास की पूजा कर रहे हैं, जो राम के चरणों में रहा है, उसकी पूजा कर रहे हैं... और राम से भी ज्यादा हनुमान को पूजते हैं।

तुलसी कहते हैं कि हे हनुमान! राम से भी आप ऊंचे हैं, राम से भी आप महान् हैं, राम तक पहुंचने के लिए भी केवल आपके माध्यम से होकर गुजरना पड़ता है। राम ने तो कई बार अपूर्णता दिखाई मगर आपने तो कभी आलस्य दिखाया ही नहीं। एक चिंतन, एक ही विचार कि कहां गुरु हैं और मुझे क्या करना है। किस प्रकार किस युक्ति से, बल और चतुराई से उनकी रक्षा करनी है और अपने जीवन की उन चारों योनियों को समाप्त करना है, क्योंकि न मालूम हम मृत्यु के बाद वापस क्या बनेंगे, किस योनि में जाएंगे, कुछ पता ही नहीं।

मृत्यु तो एक आनंद पूर्ण घटना है। मृत्यु हो और हम आनंद के साथ उस का वरण कर पाएं। यों गोली खाकर भी लोग मरते हैं। ऐसी अकाल मृत्यु हमें नहीं चाहिए। ...और आपको पता ही नहीं, आपकी मृत्यु कहां हो सकती है?

और शिष्य की मृत्यु हो ही नहीं सकती। इसलिए, क्योंकि उसके हृदय में गुरुत्व है। और उसने मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली तो चारों योनियों पर भी विजय प्राप्त कर ली। जब मृत्यु होगी ही नहीं तो फिर योनियां होंगी कहां से?

तो हनुमान ने कहा कि जीवन की श्रेष्ठतम जो स्थिति है, वह शिष्य, और मैं जीवन के अंतिम सांस तक शिष्य ही बना रहना चाहता हूं, मुझे देवता नहीं बनना।

जब सुग्रीव ने उनकी पूजा करनी शुरु की, जब जाम्बवत् ने हाथ जोड़े तो हनुमान ने कहा - जाम्बवन्त आप हाथ मत जोड़िए। हाथ जोड़कर मुझे नीचे मत गिराइए। मुझे शिष्य बने रहने दीजिए, मुझे गुरु बनना ही नहीं। क्योंकि शिष्य का जो आनंद है, वह गुरु नहीं ले सकता। गुरु अपनी मर्यादाओं में बंधा रहता है, शिष्य खुला रहता है क्योंकि वह निर्भीक होता है, उसको विश्वास होता है कि मेरे हृदय में गुरु हैं, मेरी
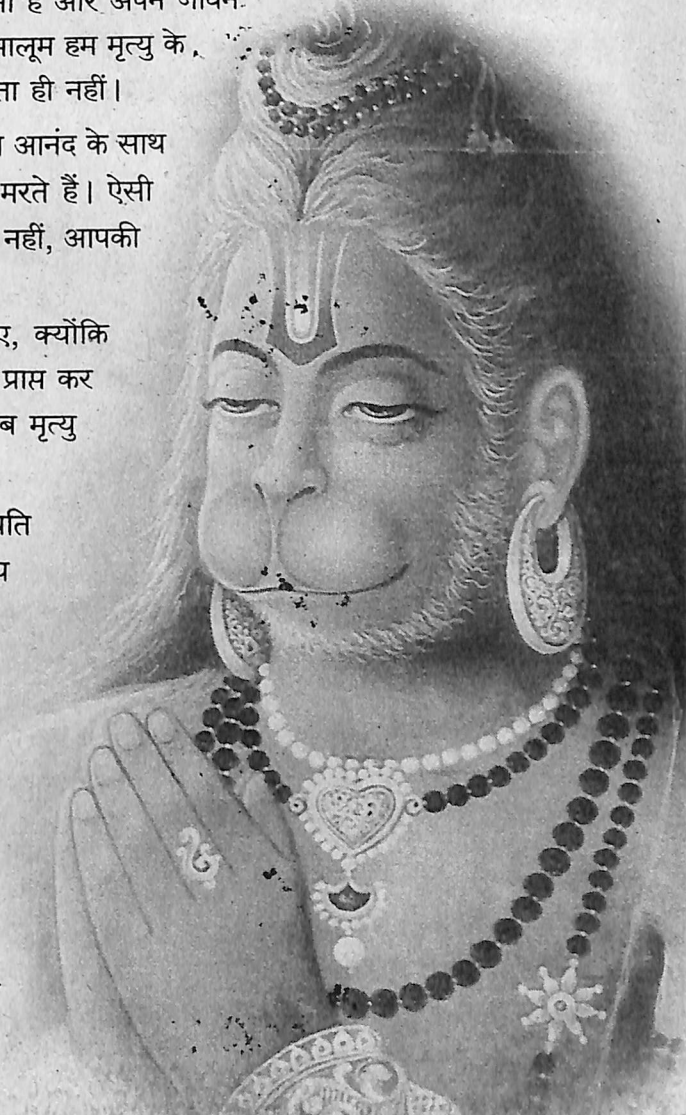
मृत्यु हो नहीं सकती, मृत्यु मेरे सामने आकर कुछ कर नहीं सकती, रोग मुझे हो नहीं सकते, समस्या, बाधा मेरे सामने आ नहीं सकती, क्योंकि ये जिम्मेवारी तो मैं गुरु को सौंप चुका हूं। मैं अपना तन, मन और प्राण उन्हें सौंप चुका हूं, वे अपने आप सब करेंगे क्योंकि वे गुरु हैं। मैं तो केवल जिंदगी में आनंद ही भोगने के लिए बैठा हूं। ...और मेरे मन में विकार आएगा ही नहीं क्योंकि मैं पहले ही हृदय में गुरु को समाहित कर चुका हूं।

हनुमान ने कहा कि जीवन की प्रत्येक तत्परता यानि कहा और किया। राम ने कहा - तुम्हें जाकर सीता की सुधि लानी है और बिना सीता के ये प्राण अपने आपमें व्यर्थ हैं।

तो हनुमान ने कहा - इतनी छोटी सी बात की मुझे कोई चिंता नहीं। माना कि सैकड़ों योजन समुद्र है और रावण है, कुछ भी है परंतु आप मेरे अंदर बैठे हुए हैं, आपका साहस मुझमें है।

और हनुमान ने तुरंत छलांग लगाई। इतना सोचा ही नहीं कि मैं डूब जाऊंगा, समुद्र में गिर जाऊंगा। वह हनुमान भी मनुष्य ही था। वहां अशोक वाटिका में जाकर उसका विध्वंस कर दिया, शत्रुओं का नाश कर दिया और अकेले व्यक्ति ने पूरी लंका को जला दिया। पूंछ में रावण को बांधकर सिंहासन से गिरा दिया। जहां उस रावण के सैकड़ों मंत्री, सेनापति सभी थे। और उसने रावण से कहा - मैं राम का सेवक हूं, शिष्य हूं और तुम मेरा कुछ बिगाड़ ही नहीं सकते क्योंकि मेरे हृदय में राम स्थापित हैं, वह बल, बुद्धि, साहस, चतुराई मुझमें हैं।

और रावण को भी इस बात को स्वीकार करना पड़ता है कि तंत्र से भी कोई ऊंची चीज है, तो शिष्यत्व है। मंत्र से भी कोई ऊंची चीज है तो शिष्यत्व है क्योंकि उसमें तत्परता है। तत्परता को शिष्य कहते हैं। शिष्य का अर्थ है, जो निरंतर करता है, और करता है गुरु के लिए, यह शिष्य गुरु का संबंध सबसे ज्यादा पवित्र है। यही सबसे ज्यादा आंखों में आंसू लाने वाला संबंध है। जब भी मैं गुरु को स्मरण करता हूं तो एकदम आंसू बाहर आने के लिए उद्यत हो जाते हैं और दूसरे क्षण मैं अपने आपको रोकने की कोशिश करता हूं कि शिष्य क्या सोचेंगे? और मैं मर्यादा में बंधा हुआ अपने आपको रोक लेता हूं। मेरे मन में एक ही चीज गूंजती है कि कब वह क्षण आएगा जब मैं गुरु के चरणों में पहुंच जाऊंगा, उनकी सेवा करूंगा, उनके चरणों को सहलाऊंगा, उनकी बात सुनूंगा। ऐसा क्षण मेरे भाग्य में कब आएगा? कहां मैं उलझा हुआ हूं? क्या कर रहा हूं? यह जीवन मेरे क्या काम आएगा? यह मकान, यह वैभव, यह धन, यह सुख, यह सौभाग्य, ये गाड़ियां - ये मेरे क्या काम की हैं?

आज मैं आठ फीट की गाड़ी में कैद हो गया हूं, मैं तो एक पहाड़ से दूसरे पहाड़, हजारों मील, घूमता था, वह ज्यादा श्रेयस्कर था। आज मुझे आठ फीट की गाड़ी में कैद कर दिया गया है, एक बीस फुट के मकान में कैद कर दिया गया है, और कहां मैं पूरे हिमालय में विचरण करता था। आज मैं एक कैदी बन कर रह गया हूं। यह कैसा मेरा दुर्भाग्य है? मैं शिष्य तो हूं पर शिष्यत्व कर नहीं पा रहा हूं, उस आनंद को

नहीं ले पा रहा हूं। वह जीवन का श्रेष्ठतम आनंद है, यह मेरे जीवन की न्यूनता है और मैं अपने गुरुदेव को कहता भी हूं कि आपने मुझे कहां धकेल रखा है? बहुत हो गया, जो मुझे काम करना था कर लिया, अब आप और किसी योगी या संन्यासी को भेज दें, मैं आपके चरणों में रहना चाहता हूं कुछ और ज्ञान प्राप्त करना चाहता हूं। और आधे घंटे तक मैं प्रार्थना करता हूं तो भी वे यही कहते हैं - नहीं निखिल! तुम्हें वहीं काम करना है।

शायद उनके मन में कोई और तथ्य होगा। यह उनकी श्रेष्ठता है कि वे मेरे माध्यम से कुछ कार्य करा रहे हैं। पर यह मेरा दुर्भाग्य है कि मैं उनके चरणों में रहकर उनकी सेवा नहीं कर पा रहा हूं। यह छटपटाहट है, वेदना है, यह बेचैनी है - इस बेचैनी को मैं ही समझ सकता हूं और कोई नहीं समझ सकता। उनकी आज्ञा पालन करना मेरा धर्म और कर्त्तव्य है। मुझे आग में जलना पड़ा तो भी जलता ही रहूंगा। और मेरी विनय को उनको सुनना ही पड़ेगा। हर बार मैं कहता हूं कि बहुत हो गया।

कभी आपके मन में करूणा व्याप्त होनी चाहिए कि वह आदमी बहुत जल चुका - आलोचनाओं से, विपत्तियों से, उन शिष्यों की न्यूनताओं से, घटियापन से। मैं शिष्य रहा हूं और मैंने देखा है और मैंने शिष्यों का घटियापन भी देखा है और मेरा मन कचोट कर के रह जाता है कि मैं इनको कैसे समझाऊंगा? और शिष्यों के घटियापन को देखता हूं तो मन टूट कर, बिखर कर रह जाता है और मन इतना बेचैन हो जाता है कि मैं सोचता हूं, मुझे यहां से उठकर चल देना चाहिए।

यह भाव मैं गुरुदेव के आगे रखता भी हूं और आधे पौने घंटा सुनने के बाद वे कहते हैं, तुम्हें अभी वहीं काम करना है। और मैं मन मार कर वापस आप लोगों के बीच आ जाता हूं। जबकि मैं सदा अपने गुरुदेव के साथ रहना चाहता हूं।

और यही बात हनुमान कहते हैं, मैं एक क्षण भी राम से अलग रहना नहीं चाहता। वे अयोध्या में रहें तो मैं अयोध्या में रहूं, वे जंगल में रहें तो मैं जंगल में रहूं। अगर उन्होंने कहा है कि सीता की सुधि लानी है तो मुझे लानी है, चाहे कहीं भी हो संसार में। राम ने ऐसी कोई आज्ञा दी नहीं थ कि तुम्हें लंका जाना है, अशोक वाटिका को उजाड़ना है या लंका को जलाना है। यह तो हनुमान की चतुराई थी। राम ने तो केवल काम सौंपा था कि तुम्हें यह काम करना है। हनुमान ने कहा -आप कहें तो सीता को ले आऊं।

राम ने कहा - तुम्हें यह काम नहीं करना है, तुम्हें केवल यह मुद्रिका देनी है, और सीता की निशानी लानी है। यह मैं समझता हूं कि मैं ऐसा क्यों कर रहा हूं।

हनुमान ने कहा कि गुरु आज्ञा दें तो शिष्य तत्पर रहे। प्रमाद रहित और आलस्य से रहित होकर के निरंतर एक ही आज्ञा के पालन के लिए तत्पर हो जाना और पूर्ण रूप से हृदय में गुरुत्व को स्थापित कर देना, यह शिष्य का धर्म और कर्त्तव्य है। जब गुरु हृदय में स्थापित होगा तो मन में कुटिलताएं नहीं पैदा होंगी फिर मन में छल नहीं पैदा होगा, पाखंड पैदा नहीं होगा।

और अगर आपके मन में पाखंड और छल है तो फिर आप शिष्य भी नहीं है। शिष्य हैं तो आपको फिर छल, धूर्तता से ऊपर उठना होगा। मैं तो आपको उस जगह पहुंचाना चाहता हूं जो साधना की उच्चतम भूमि है। उन साधनाओं को आपको देकर मैं वहां आपको पहुंचा देना चाहता हूं जो कि उच्चतम और श्रेष्ठतम स्थिति है। शिष्यों को मैं उस ऊंचाई पर पहुंचाना चाहता हूं, जहां से वे सिद्धाश्रम पहुंच सकें, जहां पर वे जीवन के आनंद को प्राप्त कर सकें। मैं चाहता हूं कि एक छलांग से शिष्यों को वहां तक पहुंचा दूं। मैं इसमें निरंतर प्रयत्नरत हूं।

मैं कोई आप से सेवा नहीं चाहता हूं। सेवा चाहता तो पांच -पांच सौ के दस बारह नौकर रख लूंगा। मेरा कार्य चलता रहेगा। प्रश्न यह नहीं है। प्रश्न यह है कि आप मेरे पास हैं तो मैं आपको क्या दे पाया। ...और दे तब पाऊंगा जब आप हृदय में गुरुत्व को धारण करेंगे।

और हनुमान कहते हैं कि जब हृदय में गुरु स्थापित होते हैं तो फिर कोई कार्य असंभव रहता ही नहीं। फिर 600 घंटों का काम शिष्य 24 घंटों में कर लेता है। मगर यह तब हो सकता है जब शिष्य आलस्य, प्रमाद से रहित हो और उसके हृदय में गुरु स्थापित हों।

हनुमान ने कहा - राम! आप मेरे गुरु हैं, जीवन का प्रत्येक क्षण आपको समर्पित है। ...और आप मुझे एक ही वरदान दें। कभी भी आप मुझे गुरु नहीं बनाएं। कभी ऐसी आज्ञा नहीं दें कि मैं उन वानरों के बीच जाकर गुरु बनूं और प्रवचन दूं। चाहे मैं कितना ही ज्ञानवान हूं, गुणों का सागर हूं मगर मैं आपके चरणों में ही जीवन की आखिरी सांस लेना चाहता हूं क्योंकि यह मेरे जीवन का अद्वितीय आनंद है।

जब राम अयोध्या वापस लौटे पुष्पक विमान से तो सरयू के किनारे उतरे जहां भरत तपस्या कर रहा था। भरत से मिले और जो वानर सेना साथ आई थी उन सब से कहा कि तुम वापस जाओ, हनुमान तुम भी जाओ। ...तो हनुमान ने कहा - मैं सरयू में कूद कर प्राण त्याग सकता हूं पर आपको नहीं छोड़ सकता। यह मेरे लिए संभव नहीं है। जहां आप हैं वहां मैं हूं। मैं रहूंगा आपके चरणों में ही हर क्षण। एक भी क्षण ऐसा नहीं होगा कि आपको तकलीफ हो जाए और तकलीफ हो जाएगी तो उससे पहले हनुमान मर जाएगा, कट जाएगा। मैं ऐसा कलंक अपने सिर पर नहीं लेना चाहता हूं, क्योंकि मैंने आपको गुरु धारण किया है।

हनुमान कहते हैं कि शिष्य बनना जीवन का श्रेष्ठतम आनंद है, एक अपूर्व मस्ती है यदि उसके हृदय में राम सीता, या गुरु-गुरुमाता, स्थापित हैं और हनुमान ने सीना फाड़कर सबको दिखा दिया कि देख लो, कोई विकार, कोई छल, कोई कपट नहीं है मेरे सीने में, हैं तो केवल गुरु स्थापित हैं। और जब वो स्थापित हैं तो कुछ न्यूनता नहीं रह सकती।

इतनी उच्च कोटि की भाव भूमि पर जब शिष्य पहुंचता है, जब उसके मन में चौबीस घंटे चिंतन रहता है कि यह जो कार्य गुरु ने सौपा है यह कोई उनका कार्य नहीं है। यह कार्य वे किस प्रयोजन से कर रहे हैं यह समझने की बात है और गुरु इसलिए कार्य सौंपते है कि वे चारों योनियों को समाप्त कर देना चाहते हैं।

मैं भी नहीं चाहता कि मेरे किसी शिष्य को चारों में से किसी योनी में जन्म लेना पड़े। मैं नहीं चाहता कि संसार में आपको उलझना पड़े। हनुमान भी चाहते तो शादी कर सकते थे, बेटे पैदा कर सकते थे। उन्होंने सोचा, ऐसे तो शिष्यत्व धर्म समाप्त हो जाएगा मेरा। ये तो जीवन के बंधन हैं, जीवन में एक ही बंधन रहे ...

गुरुत्वं त्वमेवं, गुरुत्वं त्वमेवं!

हे गुरुदेव! तुम हो और तुम्हारे मेरे बीच हवा भी पार नहीं हो पाए, इतने हम एक दूसरे से जुड़ जाएं। इतने जब प्राणों से जुड़ जाएं तो गुरु शिष्य का संबंध होता है।

शिष्य का अर्थ है मस्ती, शिष्य का अर्थ है आनंद, शिष्य का अर्थ है ऊंचाई, शिष्य का अर्थ है श्रेष्ठता और शिष्य का अर्थ है पूर्ण समर्पण। ...और गुरु का अर्थ है तनाव झेलना क्योंकि शिष्य को कहां पहुंचाना है यह तनाव उसे होता है।

आप सही अर्थों में शिष्य बन पाएं और हनुमान की तरह गुरु के हृदय में स्थापित होते हुए जीवन का पूर्ण आनंद प्राप्त कर पाएं, ऐसा ही मैं हृदय से आशीर्वाद देता हूं, कल्याण कामना करता हूं -

- सद्‌गुरुदेव परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी
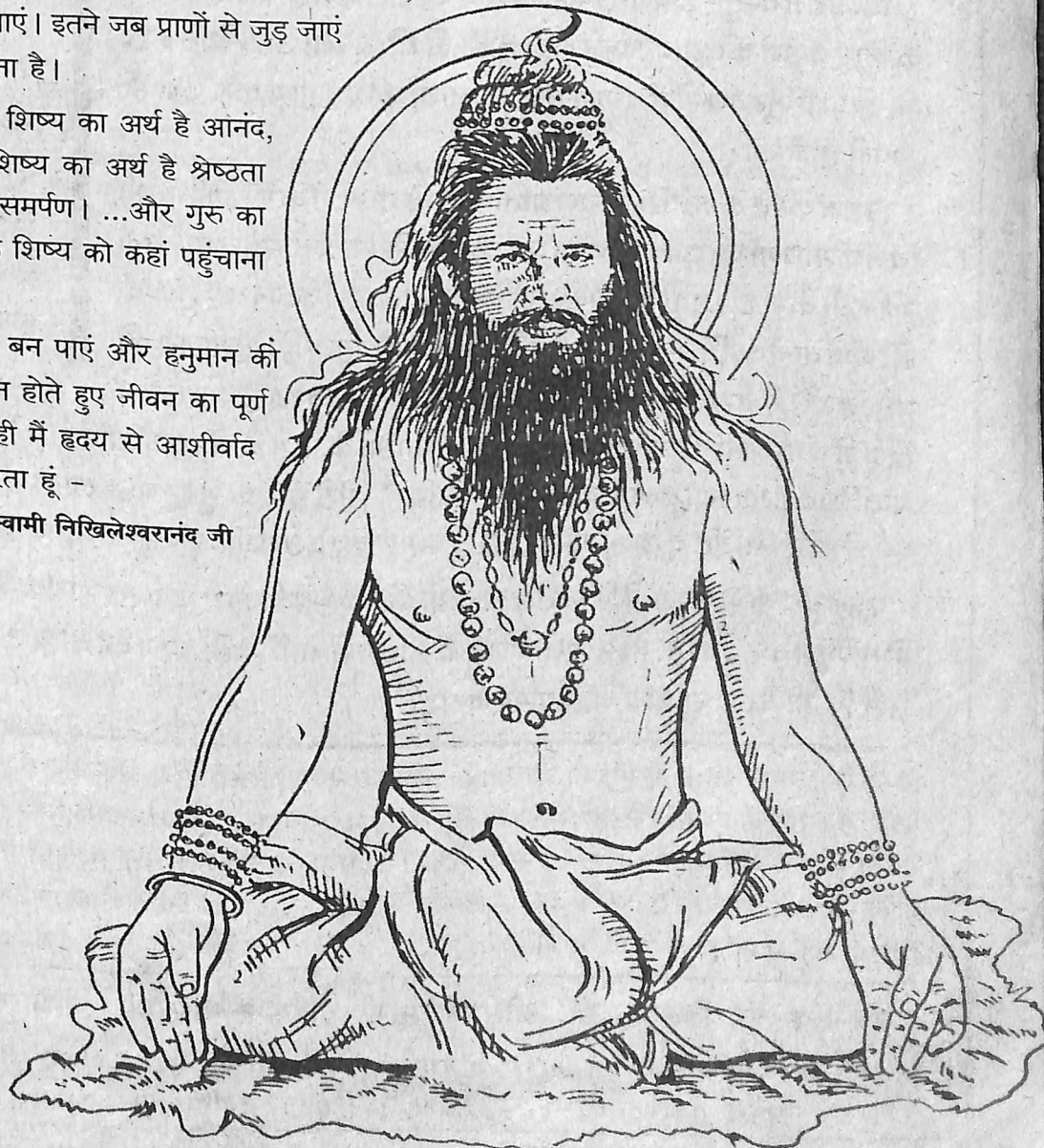
वार्षिक सदस्यता

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर आप पायेंगे अद्वितीय और विशिष्ट उपहार

तिब्बती धन प्रदाता लामा यंत्र

दिव्यतम वस्तुएं अपनी उपस्थिति की पहचान करा ही देती हैं... इस के लिए कहने की आवश्कता नहीं होती, वे तो अपनी उपस्थिति मात्र से, अपनी सुगन्ध से ही आस पास के लोगों को एहसास करा देती हैं, अपने होने का ...

उत्तम कोटि के मंत्रसिद्ध प्राण प्रतिष्ठित दिव्य यंत्रों के लिए भी किसी विशेष साधना की आवश्यकता नहीं होती। ऐसे यंत्र तो स्वयं ही दिव्य रश्मियों के भंडार होते हैं, जिनसे रश्मियां स्वतः ही निकल कर सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति एवं स्थान को चैतन्य करती रहती हैं। हिमालय की पहाड़ियों पर बसा तिब्बत देश क्षेत्रफल में छोटा अवश्य है परन्तु तंत्र क्षेत्र में जो उपलब्धियां तिब्बत के बौद्ध लामाओं के पास हैं, वे आम आदमी को आश्चर्यचकित कर देने और दांतों तले उंगलियां दबा लेने के लिए पर्याप्त हैं। ऐसे ही एक सुदूर बौद्ध लामा मठ से प्राप्त गोपनीय पद्धतियों एवं मंत्रों से निर्मित व अनुप्राणित यह यंत्र साधक के आर्थिक जीवन का कायाकल्प करने के लिए पर्याप्त है।

किसी रविवार की रात्रि को यह यंत्र लाल कपड़े में लपेट कर **ॐ** *मणिपद्मे धनदायै हुं फट्* मंत्र का 11 बार उच्चारण कर मौली से बांध दें, फिर इसे अपने घर की तिजोरी में रख दें। इससे निरन्तर अर्थ-वृद्धि होगी।

इस यंत्र के स्थापन से तिब्बती लामाओं की धन-देवी का वरद हस्त साधक के घर को धन-धान्य, समृद्धि से परिपूर्ण कर देता है, फिर अभाव उसके जीवन में नहीं रहते, ऋण का बोझ उसके सिर से हट जाता है और उसे किसी के आगे हाथ नहीं पसारने पड़ते।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को बनाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड नं. 4 स्पष्ट अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम स्वयं करेंगे।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 258/- + 45/- डाक खर्चा = 303/-, Annual Subscription 258/- + 45/- postage = 303/-

Fill up and send post card no. 4 to us at :

-: सम्पर्क :-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर 342031, (राजस्थान)

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg. High Court Colony, Jodhpur-342031, (Raj.), India

फोन (Phone) .0291-2432209, 2433623 **टेलीफैक्स** (Telefax) . 0291-2432010

गुरु से मिलन तो प्रथम दिवस ही हो जाता है

आगे की क्रिया तो जीवन गति है...

मुक्त करो जीवन को समाज की बंधी धारणाओं से

मिल जाओ गुरु विचार स्वरूप में

गुरु–शिष्य सम्बन्धों पर

एक बेबाक विवेचन...

''ईश्वर से परिचय मन की वृत्तियां ही कराती है''

कभी किसी विद्वान का कहा यह वाक्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना कि कथन के अवसर पर रहा होगा और यह कदाचित भविष्य में भी रहेगा। ईश्वर या ईश्वर का कोई भी कल्पित स्वरूप वस्तुतः बाह्य नहीं होता, उससे कहीं अधिक व्यक्ति के अन्तर में होता है और यही कारण है, इस देश में देवताओं की विधिवता के पीछे भी। एक ओर श्रृंगार रस की पराकाष्ठा पर खड़े कृष्ण भी देवता हैं; तो वहीं श्मशान में निस्पृह और फक्कड़ भाव से लेटे भगवान शिव देव ही नहीं देवाधिदेव की संज्ञा से विभूषित हैं, एक ओर दारिद्र्य की प्रतिनिधि बन भगवती धूमावती भी महाविद्या हैं, तो वही अत्युदात्त ऐश्वर्य से परिपूरित भगवती षोडशी भी उन्हीं दस महाविद्याओं में से एक हैं। यह तो जीव के मन की प्रवृत्ति होती है, कि उसे कौन सा स्वरूप भा जाता है या वह किस स्वरूप में अपने ही अन्तर्मन की पूर्ति प्राप्त कर उस स्वरूप को देवता मान लेता है या अधिक स्पष्टता से कहें, तो उसे देवता घोषित कर अपनी भावनाओं को एक सामाजिक, नैतिक मान्यता देने का प्रयास करता है। शायद कृष्ण ने भी इतना श्रृंगार रस में आनन्द न लिया होगा, जितना उनको देवता घोषित करके परवर्ती समाज ले लिया! और इसका सबसे पुष्ट प्रमाण है, रीतिकालीन कवियों की वे रचनाएं, जिनके समक्ष तो आज का कोई अश्लील ग्रंथ भी नहीं टिक सकता है। यह एक बड़ी चतुराई पूर्ण व्यवस्था रही है, इस समाज की अपनी ही वासनाओं पर एक झीना सा पर्दा डालने की ओर आज भी यह प्रवृत्ति मृत नहीं हुई है। अन्ततोगत्वा इसमें हानि समाज की है, व्यक्ति की है, क्योंकि इस प्रकार के क्रिया कलापों के द्वारा ही व्यक्ति उस परम तत्व से पृथक हो जाता है, दूर होता चला जाता है।

गुरु द्वारा 'जन्म' देना अत्यन्त पीड़ादायक घटना कही गई है, क्योंकि 'जन्म' देने से पूर्व वे 'मृत्यु' देते हैं, व्यक्ति की पूर्व भावनाओं को, उसके पूर्वाग्रहों को... और पूर्वाग्रह तो प्रत्येक व्यक्ति के साथ चलते ही रहते हैं। यह पूर्व जन्म के संस्कारों के कारण भी हो सकता है इस जन्म में सुनी-सुनाई, रटी-रटाई समाज की बद्ध धारणाओं के फलस्वरूप भी। केवल जिह्वा से 'गुरु-गुरु' की रट लगाने से ही जीवन में 'गुरु' उपलब्ध नहीं हो जाते हैं, केवल उनके चरण स्पर्श करने से या उन्हें देखने से भी कोई आवश्यक नहीं, कि वे मन-प्राण और जीवन में समाहित हो ही जाएं, क्योंकि समाहित तो वे तब हो सकेंगे जब हृदय पूर्ण समर्पण से युक्त होगा। जब तक वहां किसी और की मूर्ति बिठा रखी होगी, उसे छोड़ना ही न चाह रहे होंगे, तो वे समाहित होंगे भी कहां?

यह सत्य है, कि प्रत्येक जीव को उसकी भावनाओं के अनुरूप प्रारम्भ में वैसा ही स्वरूप दिखाते हैं, क्योंकि मानव देह में प्रस्तुत होते निखिल ब्रह्माण्ड की ही एक सजीव प्रस्तुति

जो होते हैं। जिनके विविध अंग-उपांग में अनेक देवी-देवता या उन देवी-देवताओं का लीला विचरण यूं तैर रहा होता है, जिस प्रकार से सुविस्तृत गगन में अनेक मेघ आते-जाते रहते हैं, किन्तु वे मेघ तो उस आकाश का स्वरूप नहीं होते, न उन मेघों से आकाश का कोई परिचय होता है। आकाश की अपनी शुभ्र नीलिमा होती है वही उसकी वास्तविक अभिव्यक्ति, उसका परिचय होता है और सही अर्थों में गुरु का तात्पर्य एक शुभ्र स्वच्छ आकाश ही होता है। यह अनायास नहीं है, कि इसी कारणवश गुरु की अभ्यर्थना ***'अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरं तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः'*** के रूप में की गई है।

सम्भव है, कि किसी भक्त प्रवृत्ति के व्यक्ति को ये बातें रुचिकर न लगें, क्योंकि व्यक्ति की जब भी किसी धारणा पर चोट लगती है, तो उसके अहं को चोट लगती है और कोई भी व्यक्ति अपने अहं पर चोट सहन नहीं कर पाता। भक्ति तो एक भय है, भक्ति तो एक स्वार्थ पोषण का यंत्र है। यूं यथार्थ में होते ही कितने भक्त हैं, जिससे भक्ति मार्ग को श्रेयस्कर घोषित किया जा सके? मैंने तो सूक्ष्म अवलोकन में यही देखा है, कि जो व्यक्ति स्वयं को भक्त कहते हैं, किसी देवी या देवता के प्रति स्वयं को 'समर्पित' घोषित करते हैं, वे मन के किसी न किसी कोने में इसका एक मिथ्या बोध लिए दम्भ से भरे ही रहते हैं और उनकी मान्यता पर जरा सी चोट पहुंची नहीं, कि वे तड़प उठते हैं, उनके दम्भ का विष छलक कर बाहर आ जाता है। जो इस देश के इतिहास से परिचित होंगे, वे जानते होंगे, कि कैसे इसी देश में, इसी सहिष्णु कहे जाने वाले देश में वैष्णवों व शैवों के मध्य केवल तर्कों का आदान-प्रदान ही नहीं, युद्ध तक हुआ है।

व्यक्ति का पूरा जीवन ही यूं छद्मों के पोषण, आवरण और मिथ्या प्रलाप में बीत जाता है, क्योंकि उसने विश्लेषण की उस प्रक्रिया से संयुक्त होना नहीं सीखा होता है, जो उसे गुरु के साहचर्य में आने के बाद अवश्यमेव अपनानी चाहिए और ऐसा वह इसलिए नहीं करता है, क्योंकि विश्लेषण की प्रक्रिया से संयुक्त होना त्रासदायक है। यह इतनी अधिक त्रासदायक क्रिया है, कि कबीर ने इसे घुन द्वारा काठ को खाए जाने की संज्ञा दी है, जो इस प्रक्रिया में संयुक्त हुआ नहीं उसका हास्य ही नहीं, रुदन भी खो जाता है, क्योंकि एक ओर तो उसे हर्ष होता है, कि जीवन में कुछ नवीन प्राप्त करने निकल पड़ा है, तो वहीं दूसरी ओर प्रतिपल उसे अज्ञात की दूरी कचोटती है, जिसका वह गुरु से सम्पर्क में आने के बाद प्रथम क्षणों में साक्षात् कर आगे बढ़ा होता है -

रोऊं तो बल घटे है, हंसू तो हरि रिसाय।
मन ही मांहि बिसूरन, ज्यों काठहि घुण खाए।।

इसके उपरान्त भी कुछ साधकों को अपने पूर्व जन्म के संस्कारों, प्रवाहों चैतन्यता और जीवन में कुछ नूतन घटित

विचारों के बिना कोई अस्तित्व नहीं

मृत्यु जीवन का अंत है, बिल्कुल वैसा ही, जैसे आसक्ति या किसी बंधन का अंत, या फिर एक नए जीवन, एक नए बंधन की शुरुआत जैसा। व्यक्ति अपने जीवन से क्रोध, लालच तथा आक्रामकता को खत्म कर दे, तभी कुछ नया घटता है। यही घटना, यही मृत्यु आजादी है उस बोझ से, जो सदियों से मनुष्य अपने कंधों पर ढो रहा है। मृत्यु अनुराग से मुक्ति ही तो है। कुछ लोग मृत्यु को जीवन का अंत मानते हैं, तो कोई कहता है कि जन्म लिया है तो मौत भी स्वाभाविक है। मृत्यु एक ऐसा अंत है जो आज से 10 या 50 साल बाद भी आ सकता है, और ऐसा अंत जो कल भी हो सकता है, लेकिन यह तो मनुष्य का मानना है। यह भ्रम हो सकता है और किसी की इच्छा भी। सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण सवाल है कि आप मृत्यु का सामना कैसे करेंगे? अमरता क्या है और क्या अमरता ऐसी स्थिति है, जिसमें जिंदा रहा जा सकता है?

एक सवाल यह भी है कि जीवन क्या है और 'भयावह' चीज यानी जीवन को कैसे समझा जा सकता है? भयावह इसलिए, क्योंकि जीवन जैसे जिया जा रहा है और वह लगभग महत्वहीन है। कुछ लोग इस जीवन का असल अर्थ ढूंढने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन जैसा कि सब लोग कहते हैं कि जीवन ऐसा है और इसे ऐसा हो जाना चाहिए। अगर इन कल्पित, रूमानी और निरर्थक आदर्शवादी बातों को दरकिनार कर सोचा जाए तो व्यक्ति रोजाना जीवन को दुःख की तरह जीता है। जीवन, जीवन नहीं, प्रतियोगिता, तनाव, निराशा व क्रोध है, जिसमें प्रेम

करने के आग्रह के कारण सदैव से यही मार्ग रुचिकर लगा है ऐसे ही व्यक्ति विभूति बने हैं।

यूं तो अनेक भक्तों ने भी अपना जीवन न्यौछावर किया है, किन्तु उनका सम्पूर्ण चिन्तन एकांगी रहा है। उन्होंने ईश्वर को केवल अपना माना है और अपने को केवल ईश्वर का माना है, जबकि साधक का लक्ष्य आत्म कल्याण से उठते ही, उसे सम्पूर्ण करते ही तत्क्षण लोक कल्याण की ओर उन्मुख हो जाना है या यूं कहें, कि वह आत्म कल्याण या अपनी मुक्ति का हेतु बन सके, गुरुत्व से युक्त हो सके। जहां तक ईश्वर और भक्त के बीच की बात है, वहां तो कुछ नहीं कहा जा सकता, किन्तु जब साधक गुरु का आश्रय ग्रहण करने के बाद भी एकांगी रूप से चलता रहे , तो उसे किस प्रकार श्रेयस्कर कहा जा सकता है? गुरु का तो आगमन ही होता है अनेक के लिए और यही उसके शिष्य का भी लक्ष्य होना चाहिए। अपनी बद्ध धारणाओं से मुक्त होकर गुरु साहचर्य को इस प्रकार ग्रहण करना भी एक प्रकार से गुरु साधना ही है।

...चेतना का प्रवाह गंगा की भांति कभी रुकता नहीं है, और अन्त में स्वयं को एक ऐसी विशालता में लुप्त पाता है, जिसमें किसी देवी-देवता का (अथवा स्वयं उसका) कोई स्वरूप नहीं रह जाता। यही वास्तविक रुप में गुरु परिचय की स्थिति होती है और यही ब्रह्मत्व की भी स्थिति होती है। ऐसे गुरु रूपी समुद्र में प्रतिक्षण अनेक दिशाओं से आती ज्ञान की धाराएं कभी प्रवाह को शुष्क नहीं होने देती है। **गुरु से अन्त में 'मिलन' नहीं होता है, गुरु तो प्रथम दिवस से ही साथ चल रहे होते है।** अन्त तो सम्पूर्णता में होता है, अनेकता के सम्मिलन स्थल में होता है। आवश्यक केवल यह रह जाता है, कि शिष्य प्रतिक्षण गतिशील बना रहे। जब उसे मार्ग न मिल रहा हो तब भी वह अटकी नदी की तरह छटपटाता रहता है और मार्ग के पत्थरों को घिस-घिस कर समाप्त करने की क्रिया करता रहे... पत्थर तो अनेक हैं। विश्लेषण की क्रिया इन्हीं सब क्रियाओं का संयुक्त नाम ही तो होती है।

गुरु तो संज्ञा है मनुष्याकृति में बद्ध उस सुविस्तृत आकाश की, जिसके वक्षस्थल पर अनेक देवी-देवताओं के भाव विलास उड़ते हुए मेघ की भांति आते और विलीन होते रहते है, जबकि आकाश का परिचय होता है, उसकी स्वच्छ नीलिमा...

ऐसा होने पर ही गुरु साहचर्य की सफलता होती है और शिष्य व्यर्थ में प्रलापों, धारणाओं से मुक्त होकर गुरु रूपी समुद्र में झुककर अपने प्रतिबिम्ब को निहार कर समझ जाता है, कि उसका नूतन जन्म तो एक हंस के रूप में कब का हो चुका था।

सौंदर्य तो कभी कभार देखने को मिलता है। यही जीवन है? क्या कोई जीवन को इस तरह से समझ सकता है कि अपनी इस 'समझ' के बाद कोई टकराव न हो। ऐसा कर पाना विचारों की मृत्यु जैसा है। सोचिए, बिना विचारों के जीवन कैसा होगा...? विचारों के बिना व्यक्ति का कोई अस्तित्व नहीं है। ईश्वर, गुरु, देव, मन्दिर और सभी धार्मिक संस्कार विचारों, धारणाओं, अनुभवों तथा ज्ञान विचारों की प्रक्रिया ही तो है, जो दिमाग में संग्रहीत होती रहती है। जब विचार जीवन पर राज करते हैं, तब विचार प्रेम से इंकार कर देते हैं। प्रेम स्मृति नहीं और अनुभव भी नहीं है। प्रेम इच्छा और उसके पूरा होने के बाद मिलने वाली खुशी भी नहीं है। इस अंदाज में जीना, ...यानी विचारों का प्रभुत्व।

जीवन से अलग हो जाना ही मृत्यु है, जो कि अंत है और हम सबको यह अंत डरावना लगता है, लेकिन अगर कोई अपने अंदर घटने वाली हर उस प्रक्रिया से इंकार कर दे, जिनका सृजन विचारों से हुआ है तो जान लीजिए कि व्यक्ति मर रहा है और उसके जीवन का अंत हो गया है। हम एक व्यक्ति को एक अलग व्यक्तित्व की तरह तैयार कर सकते हैं, जिसमें मेरा अहम् आपके अहम् से टकराए, हम एक-दूसरे के विरोधी हो जाएं। असलियत यह है कि हर व्यक्ति उस अनुभव से गुजरता है, जिसे दूसरा व्यक्ति अनुभव करता है। इसमें शारीरिक भूख, डर, तनाव, उम्मीद, दुःख और अकेलेपन की भावना शामिल है। हर व्यक्ति सोचता है कि उसे सिर्फ वही जी रहा है, लेकिन ऐसा नहीं है। इसे सब भोगते हैं, ऐसा भी जीवन है जिसके केन्द्र में 'मैं' नहीं है। एक ऐसा जीवन जो हर रोज मृत्यु, से जूझता हुआ आगे बढ़ रहा है। अंत का समय भी करीब है क्योंकि समय एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है... यही प्रक्रिया विचार है।

जे.कृष्ण मूर्ति

प्रत्येक साधक के लिये आवश्यक

मंत्र-जप

साधना-क्रिया और प्रभाव
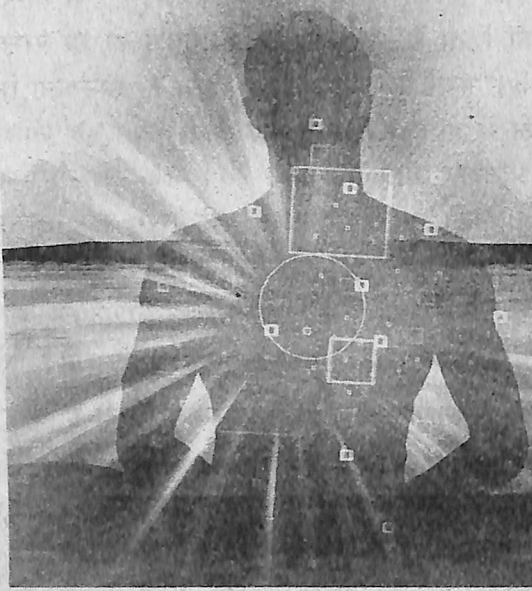
मंत्र-जप से शक्ति उत्पन्न होती है। शक्ति ही सिद्धि का दूसरा नाम है। योगदर्शन में स्पष्ट कहा है कि मंत्र जप से सिद्धियां प्राप्त होती हैं। अन्त: करण की पवित्रता तो सर्वश्रेष्ठ सिद्धि है, जो जप का स्वभाविक लाभ है।

कठिनाइयां और आपत्तियां तो हर एक के जीवन में आती हैं, मनोबल की वृद्धि कर जप साधक उनको हंसते-हंसते झेलता है, पहाड़ जैसे कष्ट उसे फूल समान लगते हैं। आत्मिक शक्ति के बढने से उसका साहस भी बढ़ता है आर्थिक अभाव, विवाह, संतान, मुकदमे, शत्रुता, संघर्ष आदि आपतियों का ऐसा सरल समाधान हो जाता है कि वह चमत्कार सा ही दिखाई देता हैं।

सभी धर्मों और सम्प्रदायों की आध्यात्मिक साधनाओं में अपने-इष्टदेव की मंत्र- साधना को एक आवश्यक अंग माना जाता है। हिन्दू धर्म के वैदिक, पौराणिक, स्मृति और तांत्रिक मतावलम्बियों में तो यह साधना प्रचलित है ही, बौद्ध और जैन मत वालों ने भी इसे अपनाया है। उनके विधि-विधान में भी जप पर बंल दिया गया है। यही नहीं, सूफी मत और ईसाई कैथोलिक मत वाले भी इसे प्राचीन काल से अपनाए हुए हैं। योगी लोग क्रिया-योग में स्वाध्याय का इसे एक अंग मानते हैं। तपयोग, मंत्रयोग, राजयोग और हठयोग में नादानुसन्धान का वर्णन आता है, वह वास्तव में जप की एक विशेष अवस्था है।

जप-साधना हिन्दू धर्म में आध्यात्मिक कर्मकाण्ड का मेरुदण्ड है, इससे सभी प्रकार की सिद्धियां प्रास होती हैं। इसलिए भगवान कृष्ण ने इसे सब यज्ञों से श्रेष्ठ कहा है और अपनी विभूति माना है। **'यज्ञाना जप यज्ञोऽस्मि'** यज्ञों में जप-यज्ञ मैं हूं। भगवान मनु ने अपने अनुभव से कहा है – 'और कुछ करें या न करें, केवल जप से ही ब्राह्मण सिद्धि पाता है।'

गोस्वामी श्री तुलसी दास ने भी जप की महिमा का गान किया है -

नाम जपत मंगल दिसि दसहूं,
जपहि नामु जन आरत भारी।
मिटहि कुसंकट होहिसुखारी।।

जप एक आध्यात्मिक व्यायाम है, एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसका हमारे मानसिक और बौद्धिक क्षेत्र पर सुनिश्चित प्रभाव पड़ता है। उससे अनेक प्रकार की सिद्धियां प्रास होती हैं। साधक का मनोबल दृढ़ होता जाता है, विचारों में विवेकशीलता आती है, बुद्धि निर्मल व पवित्र बनती है, आत्मा में प्रकाश आता है। इसके अमिट प्रभाव को देखते हुए शास्त्रकारों ने इसकी अपार महिमा का गान किया है।

लिंग पुराण में लिखा है 'जप करने वाले का कभी अनिष्ट नहीं होता, यक्ष, पिशाच, भीषणग्रह उसके पास कभी फटक नहीं सकते। इससे जन्म-जन्मांतरों के पाप नष्ट हो जाते हैं, सुखों व सौभाग्य की वृद्धि हो जाती है और मुक्ति की प्रासि होती है।'

गीता में भगवान कृष्ण ने कहा - **'त्रायते महतो भयात'** अर्थात् जप साधक का महान भय से त्राण करता है। मनुस्मृति में कहा है - 'जप करने वालों का कभी पतन नहीं होता है।' भगवान मनु ने एक और स्थान पर कहा है कि जप से अन्तःकरण ब्रह्ममय हो जाता है।

जप की महिमा बताने वाले कुछ प्रमाण इस प्रकार हैं -

महर्षिणा भृगुरहं गिरामस्म्येकमक्षरम्।
यज्ञानां जपयज्ञोस्मि स्थावराणां हिमालयः॥

'मैं महर्षियों में भृगु और वाणियों में ओंकार, यज्ञों में जप यज्ञ तथा स्थावरों में हिमालय हूं।'

समस्त सप्त तन्तुभ्यो जप यज्ञः परः स्मृतं...
इत्येष स्वर्थो ज्ञात्वा विप्रो जपपरो सवेतः

भारद्वाज गायत्री व्याख्या

'समस्त यज्ञों से जप अधिक श्रेष्ठ है। अन्य यज्ञों में तो हिंसा होती है, जप यज्ञ हिंसा से नहीं होता है। जितने भी कर्म, यज्ञ, दान तप हैं, वे समस्त जपयज्ञ की सोलहवीं कला के समान भी नहीं होते हैं। जप द्वारा स्तुति किये गये देवता प्रसन्न होकर बड़े-बड़े भोगों को तथा अक्षय शक्ति को प्रदान करते हैं, जप - करने वाले द्विज को दूर से देखते ही राक्षस, वैताल, भूत, प्रेत पिशाच आदि भयभीत हो भाग जाते हैं। इस कारण समस्त पुण्य-साधनों में जप सर्वश्रेष्ठ है।'

मास शतत्रयं विप्रःसर्वान्कामानावाप्नुयात्।
एवं शातोत्तरं जप्त्वा सहस्रं सर्वमाप्नुयात॥

'इस प्रकार एक मास तक 300 मंत्र प्रतिदिन जप करने पर साधक सब कार्यों में सिद्धि प्राप्त करता है। ग्यारह सौ नित्य जपने से सब कार्य ही सम्पन्न हो जाते हैं।'.

रूद्धा प्राणामपानं च जपोन्मासं शतत्रयम्।
यदिच्छेतदवाप्नोति सहंस्रात्परमाप्नुयान्॥

'प्राण अपान वायु को रोककर एक मास तक प्रतिदिन एक सहस्र मंत्र जपने से इच्छित वस्तु की उपलब्धि होती है।'

एक पादो जपेदूर्ध्व बाहूरुद्धानिल वशः।
मास शतमवाप्नोति यदिच्छेदिति कौशिकः॥

'आकाश की ओर भुजाएं उठाए हुए, एक पैर के ऊपर खड़ा होकर, सांस को यथाशक्ति अवरोध कर एक मास तक 100 मंत्र प्रतिदिन जप करने से अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति होती है।'

लाभ

जप आरम्भ करते ही साधक के अन्तःकरण में एक हलचल मचती है और उसकी विलक्षण शक्ति से आंतरिक क्षेत्र में अनेकों सूक्ष्म परिवर्तन होते हैं। बुरे विचार घटने लगते हैं और सत्य, प्रेम, न्याय, क्षमा, ईमानदारी, संतोष, शांति, पवित्रता, नम्रता, संयम, सेवा और उदारता जैसे सद्गुण बढ़ने लगते हैं। मन क्षेत्र प्रभावित होने से विवेक, दूरदर्शिता, तत्वज्ञान और ऋतम्भरा बुद्धि की प्राप्ति होती है, जिससे दुःखों का कटना और सुख-शांति का प्राप्त होना अनिवार्य परिणाम है।

जप से मलिनताओं का पर्दा हटकर सद्गुणों का विकास होता है और महानता के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। दुर्गुण और दोष कम होने लगते हैं और साधक धीरे-धीरे निर्मल चरित्र की साक्षात् प्रतिमा बन जाता है। वह असत से सत, अन्धकार से प्रकाश, मृत्यु से अमरत्व, निराशा से आशा,

संघर्ष और चुनौती से ही तीक्ष्ण होती है बुद्धि

जीवन में संघर्ष, प्रतिकूलता और चुनौतियों के मौकों पर मनुष्य की बुद्धि और मन्द हो जाती है। जो लोग ऐसी परिस्थितियों से वंचित हैं, वे बुद्धिहीन रह जाएं, इसमें आश्चर्य नहीं होगा। आइए, बुद्धि के जगत में थोड़ा आध्यात्मिक दृष्टि से प्रवेश करें। अपनी इंद्रियों द्वारा विषयों का भोग जो हम करते हैं उसकी स्वीकृति, अस्वीकृति, अनुभूति बुद्धि कराती है। कुछ लोग जीवनभर बुद्धि का उपयोग इससे ज्यादा नहीं कर पाते। इंद्रियों ने विषय भोगा, बुद्धि ने थोड़ी भूमिका निभाई और हो गया पूरा जीवन। इंद्रियां सुविधाभोगी होती हैं, इसलिए वे बुद्धि को भी वैसा ही बना देती हैं, लेकिन बुद्धि को यदि संघर्ष से गुजरना पड़े, तो फिर वैसी तीव्र हो जाती है जैसे चाकू पर धार की जाती है। चाकू पर लोहे की रगड़ से धार आती है, यही रगड़ जीवन में संघर्ष है, इसलिए बुद्धि को संघर्ष, चुनौती से बचाएं ना, जब भी मौका हो, उतार दें, आमना-सामना करवा दें। यह प्रयोग हनुमान जी ने किया था। लम्बे समय से सुग्रीव जैसे राजा के साथ रहकर उनकी बुद्धि की उपयोगिता के अवसर समाप्त हो रहे थे। सीताजी की खोज का संघर्ष तथा रावण को दी गई चुनौती ने हनुमान जी की बुद्धि को अवसर दिए कि विपरीत परिस्थिति में इसका उपयोग करो। लंका में प्रवेश के बाद विभीषण के घर में मंदिर आदि देख वे चौंक उठे। संदेह के पर्याप्त कारण थे। तुलसीदास जी ने लिखा है - 'मन महुं तरक करैं कपि लागा' मन में तर्क करना ही बुद्धि का उपयोग है। हम इसे गहरे अर्थ में यूं लें कि इंद्रियों द्वारा विषय स्वीकृति के मामले में बुद्धि की जागरूकता बनाए रखें।

सीमित से असीम, शिथिलता से दृढ़ता, नरक से स्वर्ग, तुच्छता से श्रेष्ठता और कुबुद्धि से सद्बुद्धि की ओर कदम बढ़ाता है।

मंत्र-जप से शक्ति उत्पन्न होती है। शक्ति ही सिद्धि का दूसरा नाम है। योगदर्शन में स्पष्ट कहा है कि मंत्र जप से सिद्धियां प्राप्त होती हैं। अन्तः करण की पवित्रता तो सर्वश्रेष्ठ सिद्धि है, जो जप का स्वभाविक लाभ है। योगदर्शन में तो यहां तक कह दिया गया है कि जप साधक धीरे-धीरे इतना ऊंचा उठ जाता है कि वह इसी साधना से समाधि-अवस्था तक पहुंच जाता है। आगामी सूत्र में महर्षि ने निर्देश दिया है कि साधना-काल में आये विघ्नों का इससे नाश होता है और अन्तरात्मा के स्वरूप का ज्ञान होता है। ईश्वर के साक्षात्कार का मार्ग खुल जाता और साधक नित्य आनन्द में मग्न रहता है, उसे कुछ प्राप्त करना शेष नहीं रह जाता, उसे किसी वस्तु का अभाव नहीं लगता, वह सम्राटों का सम्राट बनकर सर्वोच्च आसन पर अवस्थित हो जाता है।

जप से आध्यात्मिक लाभ ही प्राप्त हो, ऐसी बात नहीं है, भौतिक उपलब्धियां भी इसकी विशेषता है। कठिनाइयां और आपत्तियां तो हर एक के जीवन में आती हैं, मनोबल की वृद्धि कर जप साधक उनको हंसते-हंसते झेलता है, पहाड़ जैसे कष्ट उसे फूल समान लगते हैं। आत्मिक शक्ति के बढने से उसका साहस भी बढ़ता हैं आर्थिक अभाव, विवाह, संतान, मुकदमे, शत्रुता, संघर्ष आदि आपत्तियों का ऐसा सरल समाधान हो जाता है कि वह चमत्कार सा ही दिखाई देता हैं तपस्वी साधक अपने लिए ही नहीं वरन् दूसरे को लाभ पहुंचाने की स्थिति में रहते हैं। ये किसी के अनुग्रह से अनायास प्राप्त नहीं हो जाते वरन् जप द्वारा प्राप्त शक्ति के ही चमत्कार होते हैं।

जप द्वारा आयुवृद्धि के लाभों की वैज्ञानिक व्याख्या भी विद्वानों ने की है। 24 घंटे में प्रत्येक स्वस्थ्य व्यक्ति 21600 बार श्वास लेता है अर्थात् 1 मिनट में 15 बार श्वास लेना स्वाभाविक है। यदि किसी उपाय से उन श्वासों की संख्या कम हो जाए तो आयु-वृद्धि सुनिश्चित है। प्राणायाम ऐसी योग की सशक्त क्रिया है, जिससे श्वास प्रश्वास क्रिया का नियमन किया जाता है। जप से ऐसा भी होता है। जप के समय श्वासों की संख्या स्वाभाविक रूप से कम हो जाती है। यह एक मिनट में 15 के स्थान पर 7-8 रह जाती है। यदि साधक एक घण्टा प्रतिदिन जप करता है, तो लगभग 500 श्वासों की आयुवृद्धि हो गई। इस तरह से यदि वह इस प्रक्रिया को निरंतर जारी रखता है, तो जीवन में कई वर्षों की वृद्धि हो सकती है। यह किसी देव-दानव की कृपा से नहीं, अपने पुरुषार्थ का फल है।

अर्थ

मंत्र के बार-बार उच्चारण को जप कहा जाता है। अग्निपुराण में इसकी व्याख्या इस प्रकार से की गई है -

जकारो जन्म विच्छेदः पकारः पाप नाशकः।
तस्याज्ज्प इति प्रोक्तो जन्म पाप विनाशकः॥

अर्थात् 'ज' का अभिप्राय जन्म का विच्छेद और 'प' का अर्थ है पापों का विनाश। जिससे जन्म, मरण और पापों का विनाश हो - वह जप कहलाता है।'

हृदय में भगवान का नाम लेने को भी जप कहते हैं। श्री रामकृष्ण परमहंस ने जप का अर्थ किया है - 'एकान्त में बैठकर मन ही मन भगवान का नाम लेना।'

प्रकार

जप विभिन्न प्रकार का होता है, उसका संक्षिप्त विवचेन यहां किया जाता है -

1. **नित्य जप** - जैसे स्थूल शरीर के लिए बाह्य पवित्रता, स्नान, व्यायाम, भोजन और नियमित मल-विसर्जन आवश्यक क्रियाएं हैं, उसी तरह सूक्ष्म शरीर के लिए नियमित रूप से उसके अनुरूप पवित्रता के साधन, उसके पोषण और विकास के लिए आध्यात्मिक व्यायाम, जप और मन पर चढ़े मल - विक्षेपों को दूर करने के लिए नित्य अभ्यास आवश्यक है ताकि पुराने संस्कारों का शमन होता रहे और नए आसुरी आक्रमणों के मुकाबले की तैयारी होती रहे। अपने इष्टदेव का जो रुचिकर और गुरु प्रदत्त मंत्र हो, उसका जप नित्य करना चाहिए। यह नित्य-जप कहलाता है। नियमित रूप से करने के कारण इससे शीघ्र ही सूक्ष्म शक्ति का विकास होता है।

2. **नैमित्तिक जप** - पितृ ऋण से उऋण होने के लिए हम पितृ-श्राद्ध आदि कर्म करते हैं, जिससे पितर जहां भी हों, उनके सूक्ष्म शरीर को बल मिलता है और प्रसन्नता हो जाती है। वे आशीर्वाद देते हैं। देव-पितरों के सम्बन्ध में जो जप किया जाता है, उसे नैमित्तिक जप की संज्ञा दी जाती है। यह पितृपक्ष में तो किया ही जाता है। इस जप से पितरों की सद्गति होती है।

3. **काम्य जप** - पशु भाव के साधक को ईश्वराधन की ओर आकर्षित करने के लिए पहले भौतिक सिद्धियों की उपलब्धि में सहयोग दिया जाता है, जिससे उसके विश्वास में

दृढ़ता हो और आत्मकल्याण की साधना की अगली सीढ़ी पर चढ़ने के लिए तैयार हो। किसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए जो सकाम-साधना की जाती है, वह काम्य जप कहलाता है। इससे देव-शक्तियों को आकर्षित किया जाता है, जो अभीष्ट सिद्धि में सहायक होती हैं।

निषिद्ध जप - पवित्रता, संयम, ब्रह्मचर्य, मिताहार, यम नियमों का पालन, मनोनिग्रह जप-साधना में आवश्यक बताए गए हैं। यदि किसी भी साधना के नियमों का पालन पूर्ण रीति से नहीं किया जाता है, तो देव-कृपा संदिग्ध रहती है। अनधिकारी गुरु से दीक्षा लेकर अशुद्ध उच्चारण के साथ अपवित्र अवस्था में और निकृष्ट स्थान पर यदि अविधिपूर्वक जप किया जाए, तो वह निषिद्ध जप कहलाता है, जिसमें देवता और मंत्र में भी अनुकूलता न हो और श्रद्धा विश्वास का अभाव हो, ऐसी साधना से कोई लाभ नहीं होता। केवल निराशा ही हाथ लगती है।

4. **प्रायश्चित जप** - मानव शरीर धारण करने से पूर्व हमें 84 लाख योनियों से होकर आना पड़ता है, जिसमें विभिन्न प्रकार की पशु योनियां होती हैं। उनके संस्कार हमारे मानस पटल पर अंकित रहते हैं। छोटा-सा उत्तेजक कारण मिल जाने पर हमसे बड़े-बड़े दोष, अपराध अथवा पाप हो जाते हैं, जिनके लिए बाद में मन में पश्चाताप भी होता है।

प्रायश्चित जप प्रारब्ध कर्मों के योग अथवा अन्य साधनाओं द्वारा कम किया जाए और आगे सावधानी बरती जाए, यही ऋषियों का आदेश है। आचार्यों ने संचित व नित्य दोषों के प्रभाव को दूर करने के लिए अनेकों प्रकार के उपायों का दिग्दर्शन किया है, उनमें से एक प्रायश्चित जप है। इसका स्पष्ट अर्थ है.- अपने दोष और अपराध को स्वीकार करना। पाप की गांठ उसके स्वीकार करने से ही खुलती है। इसे स्वीकार न करने से वह और दृढ़ होती है। अतः जाने अनजाने पापों के परिमार्जन के लिए जो जप किया जाता है उसे प्रायश्चित जप कहा जाता है।

5. **अचल जप** - बिना संकल्प के कोई भी काम निश्चित समय में पूर्ण नहीं हो पाता। कठिन कार्यों के लिए तो संकल्प अनिवार्य होता है। जब साधक यह निश्चय करता है कि नित्य प्रति वह इतना समय लगाकर इतना जप करके ही आसन से उठेगा - वह अचल जप कहलाता है। इससे साधक की मनोभूमि में दृढ़ता आती है और किसी भी बड़ी-से-बड़ी साधना के लिए साहस बटोर सकता है।
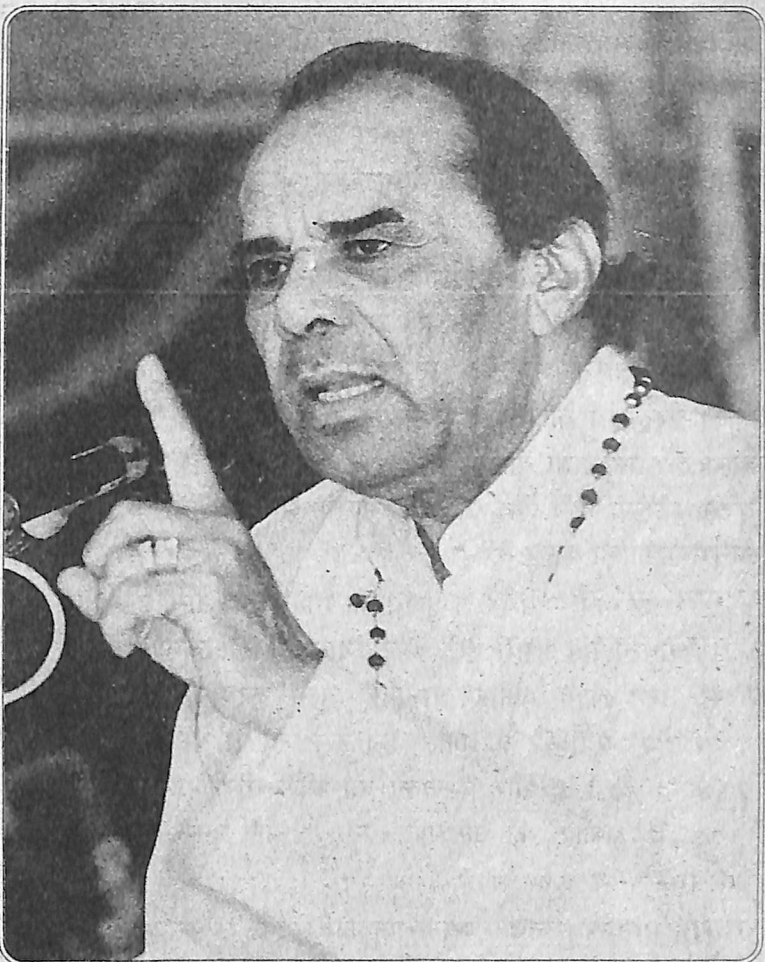
6. **चल जप** - अन्य जप तो विधिपूर्वक आसन पर बैठकर किए जाते हैं, परन्तु चल जप किसी भी परिस्थिति में किया जा सकता है। इसके लिए किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं है। खाली मन को शैतान का घर कहा गया है। उसमें विभिन्न प्रकार के अनावश्यक विचार चक्कर लगाते रहते हैं।

इससे बचने के लिए आवश्यक है कि मन में बुरे विचारों का आगमन न हो। यह तभी हो सकता है, जब मन खाली न हो और सदैव उसे व्यस्त रखा जाए। अपने इष्ट देवता के स्मरण के अतिरिक्त और कौन-सा श्रेष्ठ साधन हो सकता है? मंत्र जप की साधना हर समय चलती रहे, तो आसुरी वृत्तियों के पोषण, विकास का प्रश्न ही नहीं उठता, इस साधना में प्रदर्शन घातक सिद्ध होता है। प्रदर्शन के बिना यह साधना चलती रहे, तो इसमें अपूर्व सफलता मिलती है।

7. **वाचिक जप** - जिस मंत्र उच्चारण को अन्य व्यक्ति भी सुन सकें, उसे वाचिक जप कहते हैं। आरंभ में साधक के लिए यही ठीक रहता है क्योंकि अन्य जप अभ्यास साध्य हैं।

यह जप निम्न कोटि का जाना जाता है। फिर भी शब्द विज्ञान की महत्ता स्वीकार करते हुए इसकी उपयोगिता को स्वीकार करना ही होगा। योगियों का कहना है कि इसके वाक्-सिद्धि होती है और षट्चक्रों में विद्यमान वर्ण बीज शक्तियां जाग्रत होती हैं।

8. **उपांशु जप** - मनुस्मृति के अनुसार उपांशु जप उसे कहते हैं कि मंत्र का उच्चारण होता रहे, होंठ हिलते रहें परंतु पास बैठा व्यक्ति भी उसे सुन न सके, जापक स्वयं हो उसे सुने। इस जप के प्रभाव से स्थूल से सूक्ष्म शरीर में प्रवेश होता है और बाह्य वृत्तियां अन्तर्मुख होने लगती हैं, एकाग्रता बढ़ने लगती है, एक अद्भुत मस्ती प्रतीत होती है, जो अनुभव की ही वस्तु है।

9. **भ्रमर जप** - भ्रमर के गुंजन की भांति गुनगुनाना इस जप की विशेषता है। इसमें होंठ और जिह्वा नहीं हिलानी पड़ती। जिस तरह वंशी बजाई जाती है उसी तरह प्राणवायु के सहयोग से मंत्रावृत्ति की जाती है। इस जप से यौगिक तन्द्रा की वृद्धि होती है और षटचक्रों का धीरे-धीरे जागरण होने लगता है, प्रकाश की अनुभूति होती है और आन्तरिक तेज की वृद्धि होती है।

10. **मानसिक जप** - मानसिक जप में होंठ और जिह्वा कुछ भी नहीं हिलते। मंत्र के पद और अक्षरों के अर्थ पर मन में विचार किया जाता है।

'स्पष्ट बोलने से वाणी स्थूलता में रहती है और उसका प्रभाव भी सीमित स्थल में रहता है। पर मन के द्वारा मंत्र के उच्चारण से वह वाक् सूक्ष्म हो जाती है। परा, पश्यन्ती, मध्यमा यह तीन वाक् भी सूक्ष्म होती हैं। उनसे नाभि प्रदेश आदि में प्रयत्न होता है, उससे विद्युत प्रकट होती है, उसका प्रभाव अपेक्षित स्थूल पर स्थित वाक् की अपेक्षा अधिक पड़ता है। सूक्ष्म की शक्ति स्थूल की अपेक्षा अधिक होती है। उसका प्रभाव भी बहुत पड़ता ही है।

11. **अखण्ड जप** - हर समय जप करना सम्भव नहीं है। थकावट भी होती है और मन भी उचटता है। परिवर्तन से मन लगता है, इसलिए गुरुजनों ने यह आदेश दिया है कि जब जप से मन उचट जाए, तो ध्यान करना चाहिए। ध्यान की भी एक सीमा होती है। जब ध्यान से मन उचटने लगे, तो आत्मचिंतन करना चाहिए, आर्य ग्रंथों का अध्ययन करना चाहिए। इस तरह से मन को हर समय लगाए ही रहना चाहिए, उसे एक क्षण के लिए भी स्वतंत्र न छोड़ना अखण्डता की परिभाषा में आता है। शास्त्र का भी यही आदेश है -

जप से मलिनताओं का पर्दा हटकर सद्गुणों का विकास होता है और महानता के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। दुर्गुण और दोष कम होने लगते हैं और साधक धीरे-धीरे निर्मल चरित्र की साक्षात् प्रतिमा बन जाता है।

जापाच्छान्तः पुनर्ध्यायेद् ध्यानाच्छान्तः पुनर्जपेत्।
जपध्यानपरिश्रान्त आत्मांन च विचारयेत्॥

जप करते-करते जब थकें तो ध्यान करना चाहिए, ध्यान से थकें, तो पुनः जप करें। इन दोनों से जब थकें तो आत्म-तत्व का चिंतन करें।'

12 वर्ष की अखण्ड साधना को तप की संज्ञा दी गई है। इससे महासिद्धि की उपलब्धि होती है।

12. **अजपा जप** - यह जप माला के बिना ही होता है। श्वासोच्छवास की क्रिया हमारे शरीर में बराबर स्वाभाविक रूप से होती रहती है, जो एक अहोरात्र में 21600 की संख्या में होती है। जो श्वास बाहर निकलता है, उसकी ध्वनि **'हम्'** की तरह होती है और जो अंदर आता है उसकी ध्वनि **'सः'** की तरह होती है। इस तरह से **'हंस'** मंत्र जप हमारे शरीर में अपने आप होता रहता है। इसे अजपा गायत्री भी कहते हैं। श्वासोच्छवास के साथ मंत्रावृत्ति अजपा जप कहलाती है। इस जप की यही विशेषता है कि यह अपने आप होता रहता है, इसके लिए कुछ करना नहीं पड़ता। केवल दृष्टा रूप में इसकी स्वाभाविक क्रिया को देखता होता है।

हंसोपनिषद् में हंस मंत्र की स्वाभाविक क्रिया का वर्णन करते हुए कहा है -

सर्वेषु देवेषु व्याप्त वर्तते यथा ह्यग्निः काष्ठेषु तिलेषु तैलमिव। दिवित्वा नमृत्युमेति॥

'समस्त देहों में यह जीवन हंस-हंस जपता हुआ व्याप्त रहता है उसी प्रकार, जैसे काठ में अग्नि रहती है और तिलों में तेल रहता है। इसे जान लेने वाला मृत्यु का उल्लंघन कर जाता है।'

13. **प्रदक्षिणा जप** - इसकी प्रक्रिया नाम से ही स्पष्ट है। वट औदुम्बर व पीपल वृक्ष को पवित्र माना जाता है। जप करते हुए परिक्रमा करनी पड़ती है। ज्योतिर्लिंग-मंदिर की प्रदक्षिणा का भी विधान है, साथ में ब्रह्म-भावना का रहना आवश्यक होता है, इससे भी विशेष लाभ होता है।

जीवन की आधारभूत सप्त शक्तियां
जीवन के उत्पादन - पाल में सहायक सप्त शक्तियां
जो आपके जीवन के प्रत्येक पक्ष से सम्बन्धित है

वेदोक्त मंत्रों द्वारा

सद्गुरुदेव ने अपने एक प्रवचन में कहा था कि संसार में सात देव शक्तियां मुख्य हैं जो संसार में उत्पादन और पालन में सहायक रहती हैं। ये इन सप्त महाशक्तियों के नाम हैं -

1. वज्र योगिनी, 2. वाराही, 3. शारदा, 4. कामेश्वरी, 5. गौरी, 6. अन्नपूर्णा और 7. कुलवागेश्वरी।

मंत्रों का असीम महत्व है। **'मंत्रधीनाश्च देवताः'** यहां तक माना जाता है कि देवता तक मंत्र के अधीन हैं। वेद की ऋचाएं भी मंत्र कहलाती हैं, परन्तु तंत्र के मंत्र अपना विशेष महत्व रखते हैं - रूप और प्रभाव दोनों में। वेद के मंत्रों की अपेक्षा ये छोटे होते हैं और कुछ ही काल की साधना में साधक इनके द्वारा सिद्ध मनोरथ हो जाते हैं। तंत्र मंत्रों की संख्या सात कोटि मानी गई है, परन्तु वे सबके सब इस लोक में प्राप्त नहीं हैं। जो प्राप्त हैं, उनकी संख्या परिमित हैं एकाक्षर मंत्र से लेकर 108 अक्षरों से भी अधिक संख्या के अक्षरों के मंत्र प्राप्त हैं। इनमें एकाक्षर मंत्र अधिक महत्व के माने जाते हैं। वे बीज मंत्र कहलाते हैं।

मंत्र देवता के सूक्ष्म रूप माने जाते हैं। इनकी साधना से अर्थात् मनन से कुछ ही काल में देवता का साक्षात्कार हो जाता है। जिस ऋषि मुनि को जो मंत्र प्राप्त हुआ है, उस ऋषि का नाम उस मंत्र के विनियोग में उल्लिखित रहता है। मंत्र की साधना कठिन नहीं है। लोककल्याणकारी श्री शंकर ने लोकहित की दृष्टि ही से तांत्रिक मंत्रों का ऋषियों द्वारा प्रकाश कर उनकी साधना का इतना सरल ढंग बताया है कि साधारण से साधारण लोग उनका मनन कर अपनी इच्छा की पूर्ति कर सकते है - इहलोक और परलोक दोनों बना सकते हैं।

यह सच है कि बाद में मंत्र शास्त्र के आचार्यो ने उनकी साधना की विधि में गूढता भर दी ओर उन्हें रहस्य का रूप दे दिया, परन्तु वह सब गूढता तथा उनकी रहस्यमयता सद्गुरु द्वारा हल हो जाती है और उनके साधन में, जैसा समझा जाता है, उतनी अधिक कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ता। जो यह कहा जाता है कि मंत्रार्थ एवं पल्लवादि जाने बिना जो व्यक्ति मंत्रों का साधक करता है, उसका सारा प्रयास व्यर्थ होता है, निस्सन्देह साधार है।

यह भी देखा गया है कि गुरु की कृपा से ऐसे व्यक्तियों को भी साधना में सफलता प्राप्त होती है; जो मंत्र आदि को ज़ानना तो क्या, मंत्र का शुद्ध उच्चारण तक नहीं कर सकते थे। ऐसे भी व्यक्ति देखे गये हैं, जो मंत्रार्थ क्या बिन्दु, नाद, ध्वनि, पल्लव, सेतु, महासेतु, आदि न मालूम कितने मंत्रांगों के भेदादि को का ज्ञान रखते हुए भी अपने बार-बार की साधना में बार-बार असफल हुए हैं। असल बात है गुरु की कृपा तथा अपना अटल विश्वास और निष्ठा। यही मंत्र साधना का सबसे बड़ा रहस्य है। तथापि शास्त्र निर्दिष्ट मंत्र की विशेषताओं को भी जानना प्रत्येक मंत्र साधक के लिये आवश्यक है।

सद्गुरुदेव ने अपने एक प्रवचन में कहा था कि संसार में सात देव शक्तियां मुख्य हैं जो संसार में उत्पादन और पालन में सहायक रहती हैं। ये इन सप्त महाशक्तियों के नाम हैं -

1. **वज्र योगिनी**, 2. **वाराही**, 3. **शारदा**, 4. **कामेश्वरी**, 5. **गौरी**, 6. **अन्नपूर्णा और** 7. **कुलवागेश्वरी।**

इन सब शक्तियों के सम्बन्ध में कहा गया है कि ये इस जगत में विचरण करती हैं और तत्काल फल प्रदान करने वाली हैं इनके ध्यान मंत्र और जप मंत्र इस प्रकार से हैं -

1. *वज्र योगिनी*

ध्यान मंत्र

इंद्राग्निसूर्यनयनां पाशांकुशधरां शिवाम।
द्विभुजां सिंहमध्यस्थां भजेऽहं वज्रयोगिनीम॥

मंत्र

॥ॐ ह्रीं वज्रयोगिन्यै स्वाहा॥

इस मंत्र का नित्य तीन बार एक माला जप करने से शरीर पुष्ट होता है, सब रोग दूर होकर सिद्धि प्राप्त होती है।

2. वाराही

ध्यान मंत्र

चन्द्रार्द्धचूड़ां विमलां भुजाभ्यां शूलांकुशौ श्याममुखीं वहतीम्।
सूर्याग्निचन्द्रीकृतदृष्टिपाता ध्याये हृदब्जे सततं वाराहीम्॥

मंत्र

॥ ॐ ऐं ग्लौं लं ऐं नमो भगवति वार्त्तालि
वाराहिदेवते वराहमुखि ऐं ग्लौं ठः ठः स्वाहा॥

इस मंत्र का नित्य मध्य रात्रि में एक माला जपकर सो जायें और सिरहाने जलकुम्भ रख दें। इससे सब अरिष्ट दूर होते हैं और स्वप्न में देवी आकर गुप्त वार्ता कह जाती हैं।

3. शारदा

ध्यान मंत्र

षड्भुजां त्रिनयनां स्मितााननां शाडिल्येन नामितांघ्रिपंकजां
पर्वतस्थितवतीं धृतशूलां शारदां भगवतीं हृदि ध्याये।

मंत्र

॥ॐ ह्रीं क्लौं सः नमो भगवत्यै शारदायै ह्रीं स्वाहा॥

इस मंत्र का नित्य प्रातः एक माला जप करने से बुद्धि-ज्ञान चातुर्य में वृद्धि होती है। स्मरण शक्ति बढ़ती है, चेहरे पर तेज वृद्धि होती है।

4. कामेश्वरी

ध्यान मंत्र

त्रिलोचनां सूर्यसहस्त्रशोभां सिंहासनस्थां द्विभुजां धृतासि।
पीताम्बरां विष्णुमहेशसेव्यां कामेश्वरी तां हृदयेस्मरामि॥

मंत्र

॥ॐ ह्रीं श्रीं द्रां द्रीं क्लीं क्लुं जं जं वनाख्ये
कामेश्वरि वाणदेवते स्वाहा॥

नित्य रात्रि को एक माला मंत्र जप अवश्य करें, कामेश्वरी 'काम' की अधिष्ठात्री देवी है। जो जीवन में बल वीर्य तेज शारीरिक बल में अभिवृद्धि करती है।

5. गौरी

ध्यान मंत्र

गौरांगी धृतपंकजां त्रिनयनां श्वेताम्बरां सिंहगां
चन्द्रोद्भासितशेखरां स्मितमुखीं दोर्भ्यां वहंती गदाम्।
विधिचन्द्राम्बुज पोचिकामत्रिदशैः संपूजितांघ्रिद्वयो

> संसार में व्यक्ति साधनाएं अपनी भौतिक आवश्यकताओं कीपूर्ति के लिए विशेष रूप से करता है। संसार उत्पादन और पालन से ही चलता है। जगत की इसी गति के कारण तक संसार चल रहा है और चलता रहेगा। यदि जीवन में ससदेवियों की निरन्तर साधना की जाए तो उसे दैवीय शक्ति का असीम बल प्राप्त होता है जिससे भौतिक जीवन श्रेष्ठ बन जाता है।

गौरीं मानसपंकजे भगवतीं भक्तेष्टदां तां भजे॥

मंत्र

॥ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं ग्लौं गं गौरीं गीं स्वाहा॥

इस मंत्र का नित्य मध्याह्न में एक माला जप करने से सन्तान वृद्धि और स्त्री पुत्रादि के सुख की प्राप्ति होती है।

6. अन्नपूर्णा

ध्यान मंत्र

चन्द्रार्द्धमौलिं द्विभुजां त्रिनेत्रां शूलाक्षमाले सततं वहन्तीम्।
एणासनस्थां भुजगोपवीतां तामन्नपूर्णां हृदये स्मरामि॥

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवती माहेश्वरी
अन्नपूर्णा स्वाहा

इस मंत्र का नित्य प्रातः सायंकाल एक माला जप करने से धन-धान्य की वृद्धि होती है।

7. कुलवागीश्वरी

ध्यान मंत्र

आगमामृतमंजरी दोर्भ्यां त्रिशूलासिधरां रक्ताभां
वह्निरूपिणीं अक्षसिंहानगतां कुलवागीश्वरीं भजे।

मंत्र

ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं हुं ऊं उपहस्ते कुलवागीश्वरी
ऐं ठः ऊ ठः ऊं ठः खीं ठः स्वाहा

इस मंत्र के नित्य तीन बार एक माला जप से कुल की मान्यता, वृद्धि, ऐवर्श्य, यश की वृद्धि और सर्वकार्यसिद्धि होती है।

इस प्रकार इन सप्त महाशक्तियों की साधना सम्पन्न की जा सकती है। केवल मंत्र जप से भी उचित प्रभाव प्राप्त होता है। **लेकिन त्वरित प्रभाव प्राप्ति के लिए और अपनी विशिष्ट कामना पूर्ति के लिए सम्बन्धित महाशक्ति का मंत्र सिद्धि प्राण प्रतिष्ठा युक्त यंत्र स्थापित कर महाशक्ति माला से मंत्र जप किया जाए तो श्रेष्ठतम रहता है।**

उन दिनों काशी में एक अघोरी संत निवास करते थे, नाम था बाबा सोमारूराम। मझोला कद, सांवला रंग, घनी दाढ़ी, मूंछें, कमर में लिपटा हुआ कफन का टुकड़ा और हाथ में सोटा! यही था उनका व्यक्तित्व।

बाबा कीनाराम की गद्दी के शिष्य थे बाबा सोमारूराम। पर काशी के हरिश्चन्द्र घाट के महाश्मशान में ही विचरण करते थे वे। श्मशान की जली हुई लकड़ी कन्धे पर रखकर गद्दी की धूनी में पहुंचाना प्रायः नित्य का काम था उनका। घाट के ऊपर काली का एक छोटा-सा मन्दिर है - जीवन के अन्तिम दिनों में बाबा ने मन्दिर को ही अपनी साधना - स्थली बना लिया था। बाबा सिद्ध सन्त थे इसमें सन्देह नहीं। चमत्कारी पुरुष भी थे वह। उनके कई विलक्षण चमत्कार देखे थे मैंने। दारू के नशे में हमेशा धुत रहते थे वे। जब कभी नशा उखड़ता था - तो अंट-शंट गाली बकने लग जाते थे महाशय - जिसे लोग उनका आशीर्वाद समझकर स्वीकार कर लेते थे। अघोरी साधकों की गाली-गलौच ही सिद्धि होती है। बाबा ने अपनी इस सिद्धि के बल पर न जाने कितने लोगों का कल्याण किया था!

शिवाला स्थित बाबा कीनाराम की गद्दी से मेरे परिवार का घनिष्ठ सम्बन्ध बहुत पुराना है। इसलिए बाबा सोमारूराम का मुझ पर काफी स्नेह था। बाबा से मिलने के लिए सिद्ध सन्त-महात्मा आदि आया करते थे। जब वे आते तो बाबा उनसे मेरा परिचय अवश्य कराते थे। तब मैं उस महात्माओं की सेवा में पूरी तरह जुट जाता था। शराब से लेकर भोजन आदि तक की व्यवस्था मेरे जिम्मे हो जाती थी।

अवधूत भैरवी का आगमन -

एक बार एक अवधूत - भैरवी बाबा से मिलने आयी। शायद गिरिनार से आयी थी वह। आते ही उसने महाश्मशान में अपना डेरा-डण्डा जमा लिया। उसकी आयु बहुत अधिक थी - लेकिन देखने में 30-35 वर्ष से अधिक की नहीं लगती थी वह। बाबा ने उसका परिचय मुझे कराया - 'यह सिद्ध भैरवी है। पिछले चार-पांच जन्मों से साधना कर रही है। अब इस जन्म में साधना पूरी हो जायेगी इसकी। फिर परम मुक्ति लाभ!'

मैंने सिर घुमाकर भैरवी की ओर देखा - बिल्कुल गोरा रंग, घने काले बाल, सुगठित देहयष्टि, बड़ी-बड़ी आंखें, चमकता-दमकता चेहरा। शरीर पर लाल रंग की साड़ी और हाथ में बड़ा-सा त्रिशूल!

अपलक स्थिर नेत्रों से मेरी ओर देखने लगी वह रहस्यमयी भैरवी! लगा - जैसे उसकी गहरी दृष्टि मेरी अन्तरात्मा को भेदती हुई भीतर - और भीतर उतरती जा रही हो। थोड़ा सहम गया मैं।

सहसा चीखकर बोली वह - 'कारण वारि पिलायेगा? समझा नहीं! कारण वारि माने क्या? मदिरा... दारू समझे अब?' - हो - हो कर हंसने लगी भैरवी।

उस समय मेरे पास पैसा नहीं था। सोचा, किसी से उधार रुपये लेकर कारण वारि ले आऊंगा। मगर जब जेब में हाथ डाला तो स्तब्ध रह गया एकबारगी। जेब में सौ-सौ के दस नोट पड़े थे। पूरे एक हजार रुपये। समझते देर न लगी, उसी

भैरवी का चमत्कार था सब। मगर पूरा शहर घूम आया, शराब कहीं नहीं मिली। उस समय बनारस में दो-तीन दुकानें ही थीं शराब की। सब बन्द थीं। जब लौटकर आया तो बाबा ने बतलाया कि भैरवी रामनगर चली गयी है। उसी रात स्वप्न में भैरवी दिखलायी पड़ी मुझे। कह रही थी – 'तुझे एक हजार रुपये अपने मित्र के उधार देने हैं न? दे दो उसे। वह बीमार पड़ा है। रुपये की जरूरत है उसे!'

सचमुच मैंने अपने मित्र से एक हजार रुपये उधार लिये थे, कुछ महीने पहले। दौड़ा-दौड़ा मित्र के घर गया। बीमार था वह। दवा इत्यादि के लिए उसे उस समय रुपये की आवश्यकता थी।

दूसरे दिन भैरवी की खोज में रामनगर गया मैं, इधर-उधर बहुत खोजा। मगर मिली नहीं वह। लगभग 15-20 दिनों बाद भैरवी अचानक शिवाला घाट की सीढ़ियों पर बैठी हुई मिल गयी। मुझे देखकर मुस्करायी। कहने लगी – 'मैं जानती हूं, तू तंत्र-मंत्र की खोज में जुटा है, लेकिन समझ ले। जिन तत्वों में तू परिचित होना चाहता है वे तुझे पुस्तकों में नहीं मिलेंगे। पुस्तकों में तो ज्ञान नहीं, बल्कि विचारों और भावों का जाल रहता है। पुस्तकों द्वारा हम किसी चिन्तक के विषयों के प्रति व्यक्त किये गये विचारों अथवा भावों से ही परिचित और अवगत होते हैं। विचार या भाव नहीं। ज्ञान तो अनुभव से उपलब्ध होता है।'

'वह अनुभव कैसे होगा?'

साधना-चर्चा

'ध्यान के द्वारा जगत् में प्रवेश करने पर। जो कुछ सत्य है वह सब भीतर है, बाहर उस सत्य का भ्रम है। सबसे पहले हमें यह समझना चाहिये कि आत्मा और शरीर अलग-अलग नहीं हैं, एक ही वस्तु के दो छोर हैं। आत्मा का जो हिस्सा हमारी पकड़ में आ जाता है – यानी इन्द्रियों की सीमा के भीतर आ जाता है – वह शरीर है और आत्मा का जो हिस्सा हमारी इन्द्रियों की सीमा के बाहर रह जाता है – उसका नाम आत्मा है। उसे हम आत्मा कहते हैं। मतलब यह कि अदृश्य शरीर का नाम आत्मा है और दृश्य आत्मा का नाम शरीर है। ये दो वस्तुएं नहीं हैं। दोनों का अलग-अलग अस्तित्व भी नहीं है। एक ही अस्तित्व की दो अवस्थाएं हैं। पहली अवस्था से दूसरी अवस्था में पहुंचना ही 'ध्यान' है। संसार में जितने भी धर्म हैं – उन सबमें आपसी झगड़ा है और है आपसी विवाद। केवल एक बात के सम्बन्ध में किसी प्रकार का न झगड़ा है – और न तो विवाद है और वह बात है ध्यान! जितने भी धर्म हैं – और उन सबके जितने भी सिद्धान्त हैं – वे सब भिन्न-भिन्न हैं, उनमें अभिन्नता नहीं है। हां! अभिन्नता एक बात में अवश्य है – और वह है ध्यान! इसलिये सभी धर्मों ने एक स्वर में ध्यान को स्वीकार किया है। ध्यानयोग का अस्तित्व सभी धर्मों में है।'

'ध्यान की उपलब्धि क्या है?'

'ध्यान का चरम प्राप्तव्य अथवा चरम उपलब्धि है आनन्द! परम आनन्द! संसार में आनन्द नहीं। संसार की कोई वस्तु या पदार्थ, ये भी आनन्द नहीं हैं। जीवन के आनन्द का मार्ग ध्यान से होकर जाता है। परमेश्वर के निकट और परमात्मा के सान्निध्य में यदि कभी कोई पहुंचा है तो एकमात्र ध्यान के क्रमिक सोपान पर चढ़कर ही पहुंचा है। चाहे वह जीसस हो, चाहे मुहम्मद हो, चाहे बुद्ध हो और चाहे महावीर हो! अच्छा अब बस, फिर कभी मिलूंगी तो आगे चर्चा होगी।' इतना कहकर भैरवी अपने स्थान से उठी, एक ओर चल पड़ी... मैं उन्हें जाते हुए देखता रहा... धीरे-धीरे उनका अस्तित्व लुप्त हो गया मेरे सामने से...। (पुस्तक – मारण पात्र से साभार)

क्या तुम जानते हो, तुम्हारे भीतर अभी भी कितना तेज, कितनी शक्तियां छिपी हुई हैं? क्या कोई वैज्ञानिक भी इन्हें जान सका है? मनुष्य का जन्म हुए लाखों वर्ष हो गए, पर अभी तक उसकी असीम शक्ति का केवल एक अत्यन्त क्षुद्र भाग ही अभिव्यक्त हुआ है। इसलिए तुम्हें यह न कहना चाहिए कि तुम शक्तिहीन हो। तुम क्या जानो कि ऊपर दिखाई देने वाले पवन की ओट में शक्ति की कितनी संभावनाएं हैं? जो शक्ति तुममें है, उसके बहुत ही कम भाग को तुम जानते हो। तुम्हारे पीछे अनन्त शक्ति और शांति का सागर है।

यदि आप साधना करना चाहते हैं, तो सम्बन्धित सामग्री कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं अथवा आप जोधपुर कार्यालय, फोन : 0291-2432209 या टेलीफैक्स : 0291-2432010 पर अपना सामग्री आदेश लिखवा दें, हम आपको वी.पी.पी. से सामग्री भेज देंगे, धनराशि अग्रिम भेजने की जरूरत नहीं है।

(1)

दिनांक : .... मई 2010

कृपया मुझे साधना के लिए निम्न सामग्री भिजवा दें, वी.पी.पी. आने पर मैं उसे छुड़ा लूंगा।

मेरा नाम : ....

ग्राम : .... पोस्ट : ....

जिला : .... राज्य : ....

सामग्री का नाम

(2)

प्रिय सम्पादक जी, दिनांक : .... मई 2010

पूज्य गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी द्वारा रचित निम्न अनमोल कृतियां वी.पी.पी. से भेजने की कृपा करें। वी.पी.पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धनराशि दे कर छुड़ा लूंगा पुस्तकों के नाम –

....

....

....

....

मेरा नाम / पता : ....

....

नोट : 500/–से अधिक मूल्य का साहित्य एक साथ मंगाने पर 20% छूट प्रदान की जायेगी।

(3)

प्रिय सम्पादक जी, (पृष्ठ संख्या 79 पर प्रकाशित) दिनांक : .... मई 2010

मुझे उपहार स्वरूप *'पीताम्बरा विजय सिद्धि माला एवं कवच'* 492/– (402/– न्यौछावर तथा डाक व्यय 90/–) की वी.पी.पी. से भेजने की कृपा करें। वी.पी.पी. आने पर मैं पोस्टमेन को धनराशि दे कर छुड़ा लूंगा। वी.पी.पी. छूटने पर मुझे 20 पत्रिकाएं निःशुल्क भेजी जायेंगी।

मेरा नाम : ....

पूरा पता : ....

....

....

....

डाक व्यय पत्र प्राप्त करने वाले द्वारा दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8
जोधपुर प्रधान डाकघर
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

सेवा में

व्यवस्थापक : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान**

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,

जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यय पत्र प्राप्त करने वाले द्वारा दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8
जोधपुर प्रधान डाकघर
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

सेवा में

व्यवस्थापक : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान**

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,

जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यय पत्र प्राप्त करने वाले द्वारा दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8
जोधपुर प्रधान डाकघर
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

सेवा में

व्यवस्थापक : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान**

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,

जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

लक्ष्य प्राप्ति, शत्रुओं पर सफलता, विजय एवं दरिद्रता निवारण करने का दुर्लभ प्रयोग

आसुरी महाकल्प तंत्र

तन्त्र के आदि रचियता भगवान शिव हैं और जिसने भगवान शिव की तपस्या भक्ति पूर्ण मनोयोग से सम्पन्न की, उसने भगवान शिव से जो मांगा, वह प्राप्त हुआ। परमदेव शिव ने तांत्रिक साधनाओं के रहस्यों को अपने विशेष भक्तों के लिए बार-बार स्पष्ट किया, उनके भक्त, असुर, राक्षस, देव, मानव सभी थे।

आसुरी महाकल्प तन्त्र में सम्मोहन, वशीकरण, शत्रुनाश, मानसिक पीड़ा शान्ति, रोग शान्ति, अलक्ष्मी अर्थात् दरिद्रता दूर करने के सर्वश्रेष्ठ तन्त्र प्रयोग हैं।

शक्ति पर किसी का एकाधिकार नहीं है, जो शक्ति प्राप्त करने की इच्छा रखता है, और जो इसके लिए सही तरीके से प्रयास करता है, उसे शक्ति प्राप्त हो कर रहती है, और यदि अपने साधना तत्व को निरन्तर बनाये रखें, तथा शक्ति का सही दिशा में उपयोग करें, तो यह शक्ति तत्व निश्चित रूप से निरन्तर बना रहता है। शक्ति केवल सही रूप से चिन्तन और साधना से ही प्राप्त हो सकती है।

हमारे प्राचीन ग्रन्थों में बड़े-बड़े असुरों, राक्षसों का वर्णन आता है, जिन्होंने पूरी पृथ्वी पर अपना साम्राज्य स्थापित किया, यहां तक कि देवताओं को भी परास्त किया, इसका कारण उनकी शिव तपस्या, शिव-भक्ति और लक्ष्य में दृढ़ता थी, उनकी साधनाओं का मूल मार्ग तन्त्र ही था।

भगवान शिव द्वारा रचित **'आसुरी महाकल्प तन्त्र'** विशेष प्रकार का तन्त्र है, जिसमें मन्त्र तन्त्र तथा यन्त्र तीनों का प्रयोग हुआ है, और इस कारण यह शीघ्र फलदायक है, **'आसुरी महाकल्प तन्त्र'** आज से हजारों वर्ष पहले जितना खरा था, उतना ही आज भी खरा एवं निश्चित सिद्धिदायक है, इसमें न तो कोई विशेष प्रकार की अप्राप्य साधना सामग्री है, और न ही जटिलता। इस साधना में साधक की इच्छा शक्ति की तीव्रता, समर्पण विशेष रूप से आवश्यक है, वैसे भी उन साधकों को तन्त्र-साधना करनी ही नहीं चाहिए जिन्हें थोड़ी बहुत शंका, अश्रद्धा हो अथवा मानसिक रूप से उद्देश्य ही गलत हो।

'तारार्णव तन्त्र' तथा **'आगम तत्व विलास'** ग्रन्थ में लिखा है कि -

किं कुर्यान्नृपतिः क्रुद्धः किं कुर्युरिपुवोऽखिलाः।
क्रुद्धः कालोऽपि किं कुर्यादासुरी चेदुपासिता॥

अर्थात् उस साधक का क्रुद्ध राजा क्या करेगा, सभी क्रुद्ध शत्रु भी क्या करेंगे, क्रुद्ध काल भी क्या करेगा, जिसने आसुरी महाकल्प की सिद्धि की है।

यह साधना शत्रुनाश का सबसे प्रभावशाली प्रयोग है, साथ ही इसके माध्यम से वशीकरण, सम्मोहन भी सम्पन्न किया जा सकता है, इसके अतिरिक्त रोग-शान्ति, रोग-नाश, मानसिक पीड़ा, शान्ति तथा अलक्ष्मी अर्थात् दरिद्रता नाश का भी विशेष साधना कल्प है।

इस साधना के कुछ विशेष नियम हैं, जिनकी परिपालना

भगवान शिव द्वारा रचित 'आसुरी महाकल्प तन्त्र' विशेष प्रकार का तन्त्र है, जिसमें मन्त्र तन्त्र तथा यन्त्र तीनों का प्रयोग हुआ है, और इस कारण यह शीघ्र फलदायक है, 'आसुरी महाकल्प तन्त्र' आज से हजारों वर्ष पहले जितना खरा था, उतना ही आज भी खरा एवं निश्चित सिद्धिदायक है, इसमें न तो कोई विशेष प्रकार की अप्राप्य साधना सामग्री है, और न ही जटिलता, इस साधना में साधक की इच्छा शक्ति की तीव्रता, समर्पण विशेष रूप से आवश्यक है, वैसे भी उन साधकों को तन्त्र-साधना करनी ही नहीं चाहिए जिन्हें थोड़ी बहुत शंका, अश्रद्धा हो अथवा मानसिक रूप से उद्देश्य ही गलत हो।

'तारार्णव तन्त्र' तथा 'आगम तत्व विलास' ग्रन्थ में लिखा है कि -

किं कुर्यान्नृपतिः क्रुद्धः किं कुर्युरिपवोऽखिलाः।
क्रुद्धः कालोऽपि किं कुर्यादासुरी चेदुपासिता॥

अर्थात् उस साधक का क्रुद्ध नृपति क्या करेगा, सभी क्रुद्ध शत्रु भी क्या करेंगे, क्रुद्ध काल भी क्या करेगा, जिसने आसुरी महाकल्प की सिद्धि की है।

पूर्ण रूप से आवश्यक है-

- यह साधना केवल कृष्ण पक्ष की अष्टमी से कृष्ण पक्ष की अमावस्या के बीच ही सम्पन्न की जा सकती है।
- साधक को अपना साधना उद्देश्य गुप्त रखना चाहिए, अपने गुरु के अलावा अन्य किसी को इस सम्बन्ध में ज़ानकारी न दे।
- साधना रात्रि के प्रथम प्रहर बीत जाने के पश्चात् सम्पन्न करनी चाहिए, और यदि स्थान एकान्त हो, तो विशेष अच्छा है, साधना के दौरान कोई भी साधना कक्ष में प्रवेश न करे।
- आसुरी महाकल्प की सभी साधनाओं में काले वस्त्रों का ही उपयोग किया जाता है।
- इस साधना में साधक अपने सामने गुरु यन्त्र, चित्र तथा प्रयोग विशेष में आने वाली साधना सामग्री के अलावा अन्य किसी देवी-देवता का चित्र अथवा यन्त्र स्थापित नहीं करें।
- इस साधना के सभी प्रयोग अर्थात् सम्मोहन, वशीकरण, शत्रुनाश, रोगनाश, अलक्ष्मी नाश हेतु अलग-अलग संख्या में मन्त्र जप आवश्यक है, उससे अधिक संख्या में मन्त्र जप किया जा सकता है, लेकिन कम नहीं।
- प्रतिदिन मन्त्र जप की समाप्ति के पश्चात् 'होम' (हवन) अवश्य सम्पन्न करना चाहिए।
- एक बार एक उद्देश्य अर्थात् संकल्प की पूर्ति हेतु साधना सम्पन्न की जा सकती है, सभी उद्देश्यों का संकल्प एक साथ नहीं लेना चाहिए।

संकल्प

प्रत्येक दिन साधना प्रारम्भ करने से पहले साधक अपने हाथ में जल ले कर निम्न संकल्प करें -

अस्यु आसुरीमन्त्रस्य अंगिरा ऋषिः विराट्छन्दः आसुरी देवता ॐ बीजं स्वाहा शक्तिः, हुं कीलकं, ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

साधना सामग्री

इन विशेष साधनाओं में साधना सामग्री एक समान है लेकिन अन्तिम दिन हवन अलग-अलग सामग्री से सम्पन्न किया जाता है, मूल रूप से ताम्र पात्र में जल, **आसुरी महाकल्प महायंत्र**, राई सरसों, काले तिल, नीम के 21 पत्ते आवश्यक हैं, इसके अतिरिक्त सम्मोहन साधना में **आसुरी सम्मोहन गुटिका**, वशीकरण हेतु **वशीकरण गुटिका**, शत्रु शान्ति के लिए **शत्रुहन्ता गुटिका**, रोग शान्ति के लिए **मानस गुटिका**, दरिद्रता नाश हेतु **तारा गुटिका** का प्रयोग आवश्यक है।

साधना-विधान

अपने सामने एक बड़ा लकड़ी का बाजोट (चौकी) बिछा कर उस पर काला कपड़ा बिछाएं, मध्य में एक ताम्र पात्र में आसुरी महाकल्प महायन्त्र, स्थापित करें, उसके आगे तीन लाइनों में नीम के सात-सात पत्ते रखें। पहली लाइन में राई की सात ढेरियां बनाएं, दूसरी में तिल की और तीसरी में सरसों की ढेरियां बनाएं, एक जल पात्र अपने पास अलग रखें और एक अन्य खाली ताम्र पात्र भी रखें।

सर्वप्रथम पात्र में से जल लेकर संकल्प करने के पश्चात् पुनः बाएं हाथ में जल ले कर दाएं हाथ से सभी सामग्री पर जल छिड़कें, अपने शरीर के अंग, हृदय, सिर, नेत्र, मस्तक, उदर तथा कानों पर जल अवश्य लगाएं।

अब सर्व प्रथम गुरु का ध्यान कर अपना संकल्प दोहराएं,

तथा शिव पूजन सम्पन्न करें, जिस कार्य हेतु साधना की जा रही है, उससे सम्बन्धित विशेष मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठत गुटिका अपने सामने स्थापित कर उसके ऊपर काजल लगाएं, गुरु पूजन तथा शिव पूजन की अन्य सामग्री, अर्थात् कुंकुम, अबीर, गुलाल, केसर, चावल, पुष्प से सम्पन्न किया जाना चाहिए।

अब प्रत्येक ढेरी पर आसुरी गन्ध जिसमें राई, पुष्प, चन्दन, प्रियंगु, नागकेसर, मेनसिल, तगर, सम्मिलित होता है, और इन सब को मिला कर महीन पीसा जाता है, इस आसुरी गन्ध को इन 21 ढेरियों पर तथा **आसुरी महाकल्प यंत्र** पर चढ़ाएं और सभी सामग्री को धूप दिखाएं, अब साधक वीर मुद्रा में बैठ कर **आसुरी महाकल्प मन्त्र** का उच्चारण जप प्रारम्भ करें, 110 अक्षर का यह मन्त्र अत्यन्त महत्वपूर्ण है, यदि साधक इसे याद न कर सकें, तो एक कागज पर बड़े अक्षरो में लिख कर अपने सामने रख दें, तथा इसका जप केवल **'तांत्रोक्त तारादिक माला'** से सम्पन्न करें, इस मन्त्र का पुरश्चरण 1100 मन्त्रों का होता है, अर्थात् 8 दिन में साधक को 1100 मंत्र जप करना आवश्यक है, अपनी मन्त्र संख्या का विभाजन उसी अनुसार कर लें।

तारादिक आसुरी मन्त्र

ॐ कटुके कटुकपत्रे सुभगे आसुरि रक्ते रक्तवाससे अथर्वर्णस्य दुहिते अघोरे अघोरकर्मकारिके अमुकस्य गति दह दह उपविष्टस्य गुद दह दह सुप्तस्य मनो दह दह प्रबुद्धस्य हृदयं दह दह हन हन पच पच तावद् तावत्पच यावन्मे वशमायाति हुं फट् स्वाहा।

इस तीव्र मन्त्र का उच्चारण धीरे-धीरे और शुद्ध रूप से करना चाहिए, तथा एक माला जप होने के पश्चात् जिस मिट्टी के पात्र में धूप रखा हुआ है, उसमें सामने रखे हुए तिल, राई और सरसों में से थोड़ी-थोड़ी सामग्री हवन में डाल दें तथा प्रत्येक दिन के मन्त्र जप के पश्चात् सम्पूर्ण तिल, सरसों, राई हवन में समर्पित कर दें, प्रतिदिन नये नीम के पत्ते तथा नई राई, सरसों, तिल आवश्यक है, इस प्रकार आठ दिन बाद पूर्णाहुति सम्पन्न करनी चाहिए, उसके पहले यदि 1100 मन्त्र जप में जितने मन्त्र कम रह गये हों, उतने मन्त्रों का जप कर लेना चाहिए।

अब इस विशेष तांत्रोक्त पूजा का अन्तिम अध्याय सम्पन्न करना है, और इस अन्तिम चरण में विधि-विधान सहित, हवन सम्पन्न किया जाता है, नित्य की तरह पहले पूजा सम्पन्न कर लें, तत्पश्चात् एक लोहे के हवन पात्र की व्यवस्था

कर उसे साफ कर उस पर चारों ओर स्वस्तिक बनाकर अग्नि प्रज्वलित करें, देवी का ध्यान कर प्रार्थना करें कि मेरी आठ दिन की तपस्या सफल हो, और मेरा कार्य सिद्ध हो।

आसुरी मन्त्र में अलग-अलग कार्यो के लिए अलग-अलग प्रकार की सामग्री के हवन का विधान है, सबसे पहले तो जिस मन्त्र का जप किया है, उसकी सिद्धि आवश्यक है, और इस हेतु घी और राई मिला कर एक सौ आठ बार आहुति देनी चाहिए।

इस प्रकार मन्त्र सिद्धि होने पर अन्य प्रकार के कार्यों के लिए आगे प्रयोग करना चाहिए।

शत्रु बाधा से पूर्ण शान्ति हेतु कड़वा तेल, नीम के पत्ते, तथा राई तीनों मिला कर हवन करने से प्रबल से प्रबल शत्रु का नाश हो जाता है, प्रत्येक बार मन्त्र जप उच्चारण कर हवन कुण्ड में आहुति देनी चाहिए, इस प्रकार 108 आहुति सम्पन्न करनी चाहिए।

साधना सामग्री - आसुरी महाकल्प यंत्र - 240/-, तारादिक माला- 150/-, आसुरी सम्मोहन गुटिका - 120/-, वशीकरण गुटिका - 120/-, शत्रुहन्ता गुटिका - 150/-, मानस गुटिका - 90/-, तारा गुटिका - 110/-

तांत्रिक साधनाओं का आधार

धूमावती साधना

जो साधक के शत्रुओं का नाश करती है
साधक के ऊपर किसी भी प्रकार का तंत्र दोष समाप्त करती है

महाविद्याओं में धूमावती महाविद्या साधना अपने आप में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इस साधना के बारे में दो बातें विशेष रुप से हैं, प्रथम तो यह दुर्गा की विशेष कलह निवारणी शक्ति है, दूसरी यह कि यह पार्वती का विशाल एवं रक्ष स्वरूप है। जो क्षुधा (भूख) के विकलित कृष्ण वर्णीय रुप हैं, जो अपने भक्तों को अभय देने वाली तथा उनके शत्रुओं के लिए साक्षात् काल स्वरूप हैं।

इस साधना के सिद्ध होने पर भूत-प्रेत, पिशाच व अन्य तंत्र बाधा का साधक व उसके परिवार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

जब कोई साधक भगवती धूमावती की साधना सम्पन्न करता है, तो वे प्रसन्न होकर साधक के शत्रुओं का भक्षण कर लेती हैं और साधक को अभय प्रदान करती हैं।

'धूमावती' दस महाविद्याओं में से एक हैं। जिस प्रकार 'तारा' बुद्धि और समृद्धि की, **'त्रिपुर सुन्दरी'** पराक्रम एवं सौभाग्य की सूचक मानी जाती हैं, इसी प्रकार **'धूमावती'** शत्रुओं पर प्रचण्ड वज्र की तरह प्रहार करने वाली मानी जाती हैं। यह अपने आराधक को अप्रतिम बल प्रदान करने वाली देवी हैं जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों ही रूपों में सहायक सिद्ध होती ही हैं, यदि पूर्ण निष्ठा व विश्वास के साथ 'धूमावती साधना' को सम्पन्न कर लिया जाय तो।

दस महाविद्याओं के क्रम में 'धूमावती' सप्तम् महाविद्या हैं। ये शुत्र का भक्षण करने वाली महाशक्ति और दुःखों की निवृत्ति करने वाली हैं। बुरी शक्तियों से पराजित न होना और विपरीत स्थितियों को अपने अनुकूल बना देने की शक्ति साधक को इनकी साधना से प्राप्त होती है।

कहते हैं कि समय बड़ा बलवान होता है, और उसके आगे सबको हार माननी पड़ती है, किन्तु जो समय पर हावी हो जाता है, वह उससे भी ज्यादा बलशाली कहलाता है।

शक्ति सम्बलित होना और शक्तिशाली होना तो केवल शक्ति-साधना के माध्यम से ही संभव है, जिसके माध्यम से दुर्भाग्य को सौभाग्य में परिवर्तित किया जा सकता है।

जो भयग्रस्त, दीन-हीन और अभावग्रस्त जीवन जीते हैं, वे कायर और बुजदिल कहलाते हैं, किन्तु जो बहादुर होते हैं, वे सब कुछ अर्जित कर, जो कुछ उनके भाग्य में नहीं है, उसे भी साधना के बल पर प्राप्त करने की सामर्थ्य रखते हैं... और यदि साधना हो किसी महाविद्या की, तो उसके भाग्य के क्या कहने, क्योंकि दस महाविद्याओं में से किसी एक महाविद्या को सिद्ध कर लेना भी जीवन का अप्रतिम सौभाग्य कहलाता हैं

आज समाज में जरूरत से ज्यादा द्वेष, ईर्ष्या, छल, कपट, हिंसा और शत्रुता का वातावरण बन गया है, फलस्वरूप यदि व्यक्ति शांतिपूर्वक रहना चाहे, तो भी वह नहीं रह सकता। अतः जीवन की असुरक्षा समाप्त करने की दृष्टि से यह साधना विशेष महत्वपूर्ण एवं अद्वितीय है।

धूमावती 'दारुण विद्या' हैं। सृष्टि में जितने भी दुःख हैं, व्याधियां हैं, बाधायें हैं, इनके शमन हेतु उनकी साधना श्रेष्ठतम मानी जाती है। जो व्यक्ति या साधक इस महाशक्ति की आराधना-उपासना करता है, ये उस साधक पर अति प्रसन्न हो, उसके शत्रुओं का भक्षण तो करती ही हैं, साथ ही उसके जीवन में धन-धान्य, समृद्धि की कमी नहीं होने देतीं, क्योंकि यह लक्ष्मी प्राप्ति में आने वाली बाधाओं का पूर्ण भक्षण कर देती हैं। अतः लक्ष्मी प्राप्ति के लिए भी साधक को इस शक्ति की आराधना करते रहना चाहिए।

महाविद्याओं में धूमावती की साधना बहुत ही क्लिष्ट मानी जाती है। इसके लिए साधक को बहुत ही पवित्रता का ध्यान रखना चाहिए। इस साधना से पूर्व तत्सम्बन्धित दीक्षा लेने का प्रयास करना चाहिए, इससे साधना-काल में किसी प्रकार के भय आदि होने की संभावना नहीं रहती।

साधना-विधान

1. इस प्रयोग में निम्न सामग्री अपेक्षित है - **'प्राणश्चेतना युक्त धूमावती यंत्र'**, **'दीर्घा माला'** तथा **'अघोरा गुटिका'**।
2. इसे किसी भी माह की **अष्टमी, अमावस्या** अथवा **रविवार** के दिन सम्पन्न करें।
3. यह रात्रिकालीन साधना है, इसे **रात्रि 9 बजे से** 12 **बजे** के मध्य सम्पन्न करें।
4. साधक को स्नान आदि से पवित्र होकर, साधना-कक्ष में पश्चिम दिशा की ओर मुख कर, ऊनी आसन पर बैठकर साधना करनी चाहिए।
5. लाल वस्त्र, लाल धोती और गुरु चादर का प्रयोग करें।
6. यह साधना सुनसान स्थान में, श्मशान में, जंगल में, गुफा में या किसी भी एकांत स्थल पर, जहां कोई विघ्न उपस्थित न हो, करना श्रेयस्कर रहता है।
7. अपने सामने चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर धूमावती का चित्र स्थापित करें, फिर किसी प्लेट में 'यंत्र' को स्थापित करें।
8. यंत्र को जल से धोकर उस पर कुंकुम से तीन बिन्दु लाइन से लगा लें, जो सत्व, रज एवं तम गुणों के प्रतीक स्वरूप हैं।
9. धूप व दीप जला दें तथा पूजन प्रारम्भ करें -

विनियोगः

दाहिने हाथ में जल, अक्षत, पुष्प लें, निम्न संदर्भ को पढ़े-

अस्य धूमावती मंत्रस्य पिप्पलाद ऋषि, निर्वृच्छन्दः, ज्येष्ठा देवता, 'धूं' बीजं, स्वाहा शक्तिः, धूमावती कीलकं ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

हाथ में लिए हुए जल को भूमि पर या किसी पात्र में छोड़ दें।

ऋष्यादि न्यासः

ॐ पिप्पलाद ऋषये नमः शिरसि (सिर को स्पर्श करें)
ॐ निवृच्छन्द से नमः मुखे (मुख को स्पर्श करें)
ॐ ज्येष्ठा देवतायै नमः हृद्धि (हृदय को स्पर्श करें)
ॐ धूं बीजाय नमः गुह्ये (गुह्य स्थान को स्पर्श करें)
ॐ स्वाहा शक्तये नमः पादयो (पैरों को स्पर्श करें)
ॐ धूमावती कीलकाय नमः नाभौ (नाभि को स्पर्श करें)
ॐ विनियोगाय नमः सर्वांगे (सभी अंगों को स्पर्श करें)

कर न्यासः

ॐ धूं धूं अंगुष्ठाभ्यां नमः (दोनों तर्जनी उंगलियों से दोनों अंगूठों को स्पर्श करें।)

ॐ धूं तर्जनीभ्यां नमः (दोनों अंगूठों से दोनों तर्जनी उंगलियों को स्पर्श करें)

ॐ मां मध्यमाभ्यां नमः (दोनों अंगूठों से दोनों मध्यमा उंगलियों को स्पर्श करें)

ॐ वं अनामिकाभ्यां नमः (दोनों अंगूठों से दोनों अनामिका उंगलियों को स्पर्श करें)

ॐ तीं कनिष्ठिभ्यां नमः (दोनों अंगूठों से दोनों कनिष्ठिका उंगलियों को स्पर्श करें)

ॐ स्वाहा करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः **(परस्पर दोनों हाथों को स्पर्श करें)**

10. यंत्र गुटिका और माला को दोनों हाथ की अंजलि में ले लें, एकाग्रचित होकर दीपक की लौ पर मंत्र (**ॐ धूं धूं धूमावती**) का 51 बार जप करते हुए **'त्राटक'** करें।
11. इसके बाद सामग्री को दोनों नेत्रों से स्पर्श करायें, सामग्रियों को यथासंभव चौकी पर रख दें, **'गुटिका'** को यंत्र के सामने रखें।
12. **संकल्प** -

दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें, कि **अमुक मासे** (महीने का नाम बोलें) **अमुक दिने** (दिन का नाम बोलें) **अमुक गोत्रोत्पन्नोहं** (अपने गोत्र का नाम बोलें) **अमुक** (अपना नाम बोलें) **समस्त शत्रु भय, व्याधि निवारणार्याय दुःख दारिद्र्य विनाशाय श्री धूमावती साधना करिष्ये।**

हाथ में लिए जल को भूमि पर छोड़ दें।

13. **ध्यान**

दोनों हाथ जोड़कर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए भगवती धूमावती का ध्यान करें -

अत्युच्चा मलिनाम्बराखिलजनोद्वेगावहा दुर्मना,
रुक्षाक्षित्रितया विशालदशना सूर्योदरी चंचला।
प्रस्वेदाम्बुचिता क्षुधाकुलतनुः कृष्णातिरुक्षाप्रभा;
ध्येया मुक्तकत्वा सदाप्रिय कलिर्धूमावती मन्त्रिणा।

अर्थात् 'मलिन वस्त्र पहने हुए सबको भयभीत करने वाली, मन में विकार को उत्पन्न करने वाली, रूखे बाल वाली, भूख और प्यास से व्याकुल, बड़े-बड़े दांतों वाली, बड़े पेट वाली, पसीने से भरी हुई, बड़ी-बड़ी आंखों वाली, कांतिहीन खुले बालों वाली, सदा अप्रिय व्यवहार को चाहने वाली भगवती धूमावती का मैं ध्यान करता हूं कि वे मेरे जीवन की समस्त विघ्न बाधाओं का नाश करें।'

14. इस प्रकार भगवती धूमावती के स्वरूप का चिन्तन करते हुए बायें हाथ में गुटिका को लेकर मुट्ठी बांध लें तथा **'दीर्घा माला'** से निम्न मंत्र का 5 माला नित्य तीन दिन तक जप करें -

मंत्र

॥ॐ धूं धूं धूमावती स्वाहा॥

15. जप-समाप्ति के बाद सभी सामग्रियों को चौकी पर बिछे कपड़े में ही लपेट कर चौथे दिन शाम को किसी जन-शून्य स्थान में जाकर, गड्ढा खोदकर दबा दें और पीछे मुड़कर न देखें।
16. घर आकर हाथ-पैर धो लें।

यह साधना दुर्भाग्य की गूढ़ रेखाओं को मिटाकर सौभाग्य में बदलने की दिव्य क्रिया है। इस साधना के बाद निश्चय ही जीवन में सौभाग्य का सूर्योदय होगा और सम्पन्नतायुक्त एवं सुखी जीवन का प्रादुर्भाव सम्पन्न होगा।

विश्वास, विश्वास, अपने आप में विश्वास, ईश्वर में विश्वास - यही महानता का रहस्य है। यदि तुम पुराण के तैंतीस करोड़ देवताओं और विदेशियों द्वारा बतलाए हुए सब देवताओं में विश्वास करते हो, पर यदि अपने आप में विश्वास नहीं करते, तो तुम्हारी मुक्ति नहीं हो सकती। अपने आप में विश्वास करो, उस पर स्थिर रहो और शक्तिशाली बनो।

यह साधना पैकेट तो उपहार स्वरूप ही है, साथ ही इसके माध्यम से गुरु कार्य के रूप में आप अपने दो मित्रों को पत्रिका सदस्य बनाएं तथा कार्ड क्रं 6 पर अपने दोनों मित्रों का पता लिखकर भेजें। कार्ड मिलने पर 570/- की वी.पी.पी. द्वारा आपको इस साधना की मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त सामग्री भेज देंगे तथा दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पत्रिका भेजी जाएगी।

इस योजना का उद्देश्य आप द्वारा गुरु परिवार में दो नये सदस्यों को जोड़ना है। यदि आपके लिये यह संभव नहीं है तो आप 570/- न्यौछावर राशि भेज कर साधना पैकेट प्राप्त कर सकते हैं।

- गुरु कोई शरीर नहीं, वह तो आध्यात्मिक ज्ञान का भंडार है परंतु उस ज्ञान को संसार में विस्तारित करने के लिए गुरु को शरीर धारण करना ही पड़ता है। अतः यह शिष्य का परम धर्म है कि वह गुरु के लिए इस प्रकार से सहायक बने जिससे वे अपना ज्ञान विस्तार कार्य भली भांति संपन्न कर सकें।

- गुरु के चरण छूने या जय गुरुदेव के घोष मात्र से शिष्य का समर्पण सिद्ध नहीं होता, शिष्य का वास्तविक कर्त्तव्य है कि वह गुरु के कार्यों में सहायक बन कर उनके कार्य के बोझ को हल्का करे।

- यह सच है कि गुरु शिष्य से सेवा करवाता है कुछ विशेष कार्य सौंप कर, परंतु शिष्य को ये कार्य करते समय हमेशा यही भाव रखना चाहिए कि मैं कार्य नहीं कर रहा हूं, यह तो मेरे माध्यम से स्वयं गुरुदेव कार्य कर रहे हैं। ऐसे भाव से न केवल उसका अहं गलेगा अपितु वह कार्य को भी बेहतर प्रतिपादित कर पाएगा।

- सभी साधनाओं में उच्चतम साधना गुरु सेवा है अतः शिष्य साधना न भी कर पाए, मंत्र जप भी ना कर पाए तब भी उसे गुरु सेवा में संलग्न होना ही चीहए। यही उसका वास्तविक धर्म है।

- गुरु के पैर दबाना, या गुरु को हार पहनाना या मिठाई भेंट करना गुरु सेवा नहीं। ये शिष्य का गुरु के प्रति प्रेम का प्रमाण मात्र है। वास्तविक गुरु सेवा है गुरु की आज्ञा पालन करना तथा उस कार्य को पूर्ण करना जो गुरु ने उसको सौंपा है चाहे वह कार्य कोई भी क्यों न हो।

- शिष्य का धर्म है कि वह व्यर्थ के वाद विवाद या चिंतन में न पड़कर पूर्ण तल्लीन होकर गुरु सेवा करे। मन पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त करने का गुरु सेवा से अच्छा कोई माध्यम नहीं है।

- गुरु की आलोचना या निंदा करना या सुनना सच्चे शिष्य के लक्षण नहीं। गुरु एक उच्च धरातल पर होते हैं इसलिए उनके व्यवहार को समझ पाना संभव नहीं। शिष्य का तो धर्म है कि वह इस ओर ध्यान न दे कि गुरु क्या कर रहे हैं अपितु इस बात पर जोर दे कि गुरु ने उसे क्या करने को कहा है।

- गुरु तो स्वयं शिव हैं, यही भाव लेकर अगर शिष्य चलता है तो एक दिन स्वयं शिवतत्व उसमें समाहित हो जाता है। गुरु का यही उद्देश्य है कि शिष्य को शिवत्व प्रदान करें। इसलिए इसी चिंतन के साथ शिष्य को गुरु का स्मरण करना चाहिए।

✧ उस ज्ञान के पुंज तक पहुंचने का एक मात्र तरीका है समर्पण तथा दूसरा तरीका है सेवा। सेवा और समर्पण के द्वारा ही शिष्य गुरु तत्व को स्पर्श कर सकता है और उसे आत्मसात् कर सकता है।

✧ ज्ञान पोथियों से प्राप्त नहीं हो सकता, वेद पुराण तथा शास्त्रों को पढ़ने से भी नहीं हो सकता। वह तो गुरुरूपी सागर में गोता लगाकर शिष्य उन ज्ञान के मोतियों को प्राप्त कर सकता है ...और उसके लिए आवश्यक है कि शिष्य अपना सब कुछ न्यौछावर करता हुआ पूर्ण रूप से गुरु में आत्मसात् हो जाए।

✧ सब न्यौछावर करने का अर्थ कोई गुरु को धन, मकान, संपत्ति प्रदान करना नहीं है। न्यौछावर का अर्थ है अपने विचार, अपनी बुद्धि, अपने तर्क को हटाकर के गुरु के प्रति श्रद्धावान हो जाना।

✧ गुरु कोई शरीर नहीं, किसी व्यक्ति का नाम नहीं। जो भीतर चेतना का पुंज है, जो ज्ञान का स्रोत है, जो दिव्यता का पुंज है; वह गुरु है और उस पुंज से जुड़ने की क्रिया को शिष्यता कहा गया है, समर्पण कहा गया है।

✧ गुरु सेवा का अर्थ कोई गुरु के पैर दबाना या उनके कपड़े धोना या लंगोट धोना नहीं है। गुरु सेवा का अर्थ है कि उस ज्ञान के पुंज को सुरक्षित रखने में गुरु का सहयोगी बनना, जिस ज्ञान को प्रचारित करने के लिए गुरु ने इस पृथ्वी पर जन्म लिया है।

✧ गुरु सेवा से बड़ी संसार में कोई साधना नहीं; इसके आगे तो सभी मंत्र सब साधनाएं, सब भक्ति, सब क्रियाएं व्यर्थ हैं। गुरु सेवा के द्वारा शिष्य क्षण मात्र में वह प्राप्त कर लेता है जो कि हजारों वर्ष क्या कई जन्मों की तपस्या के बाद भी संभव नहीं।

✧ शिष्य के लिए सबसे बड़ी उपलब्धि होती है गुरु के हृदय पर अपना नाम अंकित कर देना। जब यह हो जाता है तो गुरु और शिष्य में कोई भेद ही नहीं रहता क्योंकि फिर गुरु का समस्त ज्ञान स्वतः शिष्य के हृदय में उतर जाता है।

✧ गुरु तो प्रदान करने के लिए हर क्षण तत्पर हैं परंतु वे स्वयं से कुछ प्रदान कर नहीं सकते जब तक कि शिष्य स्वयं आगे बढ़कर अपने आप को समर्पित न कर दे।

अमावस्या का अर्थ और तात्पर्य
शनैश्चरी अमावस्या का महत्व
शनि का संयोग श्रेष्ठ या घातक
क्या करें शनैश्चरी अमावस्या को

सम्पूर्ण विवेचन

तंत्र क्रिया के जानकार अमावस्या के दिन विशेष तांत्रिक प्रयोग करते हैं; विशेषकर उस दिन यदि शनिवार, रविवार अथवा मंगलवार हो।

समस्त ग्रहों में शनिदेव ही ऐसे ग्रह हैं जो अत्यन्त क्रोधी होते हुए भी अत्यन्त दयालु कहे गए हैं। इनके विषय में कहा गया है, कि जब ये किसी पर क्रोधित होते हैं तो उसका सर्वनाश कर डालते हैं, इसी प्रकार जब ये किसी से प्रसन्न होते हैं, तो रंक को भी राजा बना देते हैं।

हिन्दू चन्द्र पंचाग के अनुसार पूरे मास में 16 तिथि 30 दिन के भीतर आती है। यह चन्द्र मास प्रतिपदा से प्रारम्भ होकर चतुर्दशी को समाप्त होता है। इन तीस दिनों के मास में दो तिथि महीने में केवल एक बार आती है, यह तिथि है - पूर्णिमा और अमावस्या। इस प्रकार जो 15 तिथियां पूर्णिमा को समाप्त होती हैं, उस पक्ष को शुक्ल पक्ष कहा गया है। जो पक्ष अमावस्या को पूर्ण होता है उसे कृष्ण पक्ष कहा गया है। अमावस्या को दश तिथि भी कहा गया है। जो अमावस्या चतुर्दशी को आती है उसे सिनीवाली तथा जो अमावस्या प्रतिपदा को आती है उसे कुहु अमावस्या कहा जाता है। एक चन्द्र वर्ष में इस प्रकार 12 अमावस्या आती हैं और हिन्दू धर्म में सभी तिथियों में अमावस्या को बहुत अधिक महत्व एवं विशेष स्थान दिया गया है।

अमावस्या का विशेष महत्व - महीने की सबसे अंधकारमय रात्रि अमावस्या की रात्रि होती है। इस दिन चन्द्रमा पृथ्वी से दिखाई नहीं देता इस कारण इसे अदृश्य चन्द्र दिवस कहा जाता है। अमावस्या के दिन सूर्य चन्द्रमा और पृथ्वी का एक विशेष संयोग बनता है। सूर्य ग्रहण भी अमावस्या के दिन ही घटित होते हैं।

अमावस्या के देव पितृदेव हैं। सृष्टि के प्रारम्भ में अमावस्या का नाम 'अछोड़ा' था और यह पितृ देवताओं की मानस पुत्री है। पितृ देवताओं की पूजा-साधना करने के लिये अमावस्या सर्वाधिक उपयुक्त दिवस है। इस दिन तर्पण, यज्ञ, इत्यादि भी सम्पन्न किये जाते हैं। अमावस्या के दिन ही भगवती दुर्गा, दस महाविद्या, हनुमान, शनि की पूजा इत्यादि साधना सांसारिक बाधाओं के निवारण हेतु तथा जीवन के पाप दोष और बिघ्नों के निवारण हेतु की जाती है।

यह कहा जाता है कि भगवान श्रीकृष्ण ने अमावस्या के दिन ही निर्वाण लिया था।

सामान्य तौर पर अमावस्या को किसी नये शुभ कार्य को प्रारम्भ करने के लिये श्रेष्ठ नहीं माना जाता, लेकिन तमिलनाडु में इसे पवित्र और श्रेष्ठ दिवस माना जाता है तथा वहां लोग इस दिन ही नवीन कार्य प्रारम्भ करते हैं क्योंकि उनके अनुसार अमावस्या नवचन्द्र दिवस है।

तंत्र क्रिया के जानकार अमावस्या के दिन विशेष तांत्रिक प्रयोग करते हैं; विशेष कर उस दिन यदि शनिवार, रविवार अथवा मंगलवार हो।

अमावस्या के पीछे पौराणिक आख्यान -

हमारे शास्त्रों में सात प्रमुख पितृदेव धारा मानी गई है। यह पितृदेव समूह है राजस, अग्निवश, बर्हिदश, सुकाल, अग्निरस, शुद्धवा और सोमापा।

अछोड़ा, तपस्विनी इन पितृदेव समूह की मानस पुत्री थी और पितृदेवताओं के प्रति समर्पण भाव से तपस्विनी ने एक बार पितृ देवताओं के आशीर्वाद हेतु महायज्ञ सम्पन्न किया। इस महायज्ञ से प्रसन्न होकर पितृ देवता प्रकट हुए और देवी अछोड़ा को वरदान मांगने को कहा। जब पितृदेवता प्रकट हुए तो उनमें एक पितृदेव मवासा भी थे। कुछ क्षणों के लिये देवी अछोड़ा मवासा पितृदेव के प्रति आकर्षित हो गई, इस तात्कालिक आकर्षण के कारण अछोड़ा को मवास्या कहा जाने लगा। जब मवासा पितृदेव ने किसी भी प्रकार का आकर्षण नहीं दिखाया तो मवास्या का नाम **'अ - मवास्या'** अर्थात् **अमावस्या** पड़ गया। इस क्षणिक आकर्षण एवं लोभ के कारण अमावस्या की दैवीय शक्ति प्रभाव समाप्त हो गया।

लेकिन अंततः अछोड़ा की भक्ति देखकर पितृदेवताओं ने यह वरदान दिया कि अब से संसार में तुम अमावस्या तिथि के रुप में विख्यात होवोगी और यह दिन पितृदेवताओं के लिये समर्पित रहेगा। इस दिन जो भी व्यक्ति पितृ देवताओं के समर्पण में श्राद्ध, तर्पण, पूजा, साधना, व्रत, दान, धर्म, तीर्थ, स्नान सम्पन्न करेगा उसे सांसारिक बाधाओं से मुक्ति मिलेगी तथा पितरेश्वरों की असीम कृपा प्राप्त होगी।

मत्स्य पुराण के अनुसार अछोड़ा ने द्वापर युग में एक मछली के पेट से जन्म लिया और इसे वशु नामक मछुआरे ने पाला। यह कन्या मत्स्यगंधा कहलाई और बाद में सत्यवती के नाम से विख्यात हुई। ऋषि पाराशर और सत्यवती के संयोग से वेदव्यास का जन्म हुआ। बाद में मत्स्यगंधा (सत्यवती) ने राजा शांतनु से विवाह किया, उससे आगे की महाभारत कथा तो सभी जानते हैं।

प्रति माह अमावस्या आती है लेकिन इनमें से कुछ अमावस्या प्रमुख हैं - यह अमावस्या हैं सोमवती अमावस्या, मौनी अमावस्या, महालय अमावस्या, दीपावली अमावस्या, हिमाना अमावस्या, होम अमावस्या, भानु अमावस्या और शनि अमावस्या।

प्रस्तुत लेख में हमारा विवेचन शनि अमावस्या तक ही सीमित रहेगा कि शनिवार और अमावस्या के संयोग का क्या महत्व है?

शनि ग्रह - एक विवेचन

शनि को ज्योतिष में **''विच्छेदात्मक ग्रह''** माना गया है। **जहां एक ओर शनि मृत्यु प्रधान ग्रह माना गया है, वहीं शनि दूसरी ओर शुभ होने पर भौतिक जीवन में श्रेष्ठता भी देता है।**

भारतीय समाज में कुछ कहावतें शनि को लेकर प्रचलित हैं, जैसे - व्यापार चौपट हो तो शनि का प्रभाव है। आज कल तो शनि का चक्कर है या किसी व्यक्ति को सम्बोधित करते हुए कह देते हैं कि यह तो शनि की तरह मेरे पीछे पड़ गया है। दो चार ढोंगी ज्योतिषी भी ऐसे होते हैं जो लोगों को शनि की दशा बताकर भयभीत कर देते हैं; जैसे आपके भाग्य पर शनि की क्रूर दृष्टि है, लाभ-स्थान पर नीच का शनि है, कर्म भाव पर शनि वक्री है, ...तथा शनि की साढ़े साती को सुनकर ही जातक का हृदय कांप उठता है।

शनि सर्वाधिक मैलाफाइड, अकस्मात् कुप्रभाव देने वाला ग्रह माना जाता है, अतः भय तो सहज स्वाभाविक है। यह अकाल मृत्यु, रोग, भिन्न-भिन्न कष्ट, व्यवसाय-हानि, अपमान, धोखा, द्वेष, ईर्ष्या का कारण माना जाता है, पर वास्तविकता यह नहीं है, सूर्य पुत्र शनि हानिकारक न होकर

उच्च स्थान पर खड़े होकर और हाथ में कुछ पैसे लेकर यह न कहो - 'ऐ भिखारी, आओ, यह लो।' परन्तु इस बात के लिए उपकार मानो कि तुम्हारे सामने यह गरीब है, जिसे दान देकर तुम अपने आप की सहायता कर सकते हो। पाने वाले का सौभाग्य नहीं, पर वास्तव में देने वाले का सौभाग्य है। उसका आभार मानो कि उसने तुम्हें संसार में अपनी उदारता और दया प्रकट करने का अवसर दिया और इस प्रकार तुम शुद्ध और पूर्ण बन सके।

लाभदायक भी सिद्ध होता है, क्योंकि -

1. शनि तुरंत एवं निश्चित फल देता है।
2. शनि 'सन्तुलन' तथा न्याय प्रिय है।
3. शनि शुभ होकर मनुष्य को व्यवस्थित, व्यवहारिक, घोर परिश्रमी, गम्भीर एवं स्पष्ट वक्ता बना देता है।
4. संकुचित व्यक्ति भरपूर आत्मविश्वास, प्रबल इच्छा शक्ति युक्त, महत्वाकांक्षी, मितव्ययता पूर्ण आचरण करने वाला, हर कार्य में सावधान रहने वाला तथा व्यवसाय में चतुर तथा कार्यपटु होता है।
5. मनुष्य का भेद लेने में शनि-प्रधान व्यक्ति दक्ष होता है।
6. शनिप्रधान व्यक्ति सामाजिक व आर्थिक क्रांति के लिए प्रयत्नपूर्ण त्याग मय जीवन व्यतीत करने वाले, पूर्ण सामाजिक व मिलनसार, परोपकार के कार्यों में समय व्यतीत करने वाले, लोक-कल्याण में सतत् संलग्न, विद्वान, उदार तथा पवित्रतापूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं।
7. अध्यात्मवाद की ओर विशेष झुकाव रहता है।
8. योगाभ्यासी, गूढ़ रहस्य का पता लगाने में दक्ष, कर्म कांड व धार्मिक शास्त्रों का अभ्यास, ग्रंथ प्रकाश, तत्वज्ञ, लेखन कार्य का यश व सम्मान पाते हैं।

शनि अशुभ होने पर स्वार्थी, धूर्त, कपटी, दुष्ट, आलसी, मंदबुद्धि, उद्योग से मुंह मोड़ने वाला, नीच कर्म में लिप्त, अविश्वास करने वाला, ईर्ष्यालु, विचित्र मनोवृत्ति युक्त, असंतोषी, दुराचारी, दूसरों की आलोचना करने वाला, अपने को श्रेष्ठ मानना पसन्द करता है। वह दम्भी, झूठा और दरिद्र होता है। ऐसा व्यक्ति व्यर्थ इधर-उधर घूमना पसन्द करता है। ऐसा व्यक्ति आजीवन विपत्तियों से घिरा रहता है।

ज्योतिषीय विवेचना के अनुसार शनि की साढ़े साती जातक के पैरों में पीड़ा पहुंचाती है। मस्तिष्क विकृत एवं सिर दर्द, धन-धान्य, सम्पत्ति का नाश, सन्तान को कष्ट, स्वयं को व्यभिचारी व कुमार्गी बना अपमानित करती है।

इस प्रकार शनि की साढ़े साती दशा के कारण ही मानव-मन में यह भ्रांति उत्पन्न हो गई है कि शनि केवल हानिकारक, अमंगलकारी एवं विघटनकारी ही होता है। शनि ग्रह की शांति के लिए, जब यह ग्रह प्रतिकूल फल दे रहा हो अथवा शनि की साढ़े साती इत्यादि अवधि में व्यक्ति को ग्रह शांति हेतु मंत्र-जप अवश्य करना चाहिए।

समस्त ग्रहों में शनिदेव ही ऐसे ग्रह हैं जो अत्यन्त क्रोधी होते हुए भी अत्यन्त दयालु कहे गए हैं। इनके विषय में कहा गया है, कि जब ये किसी पर क्रोधित होते हैं तो उसका सर्वनाश कर डालते हैं, इसी प्रकार जब ये किसी से प्रसन्न होते हैं, तो रंक को भी राजा बना देते हैं।

शनिदेव के विवेचन से स्पष्ट होता है कि शनि शक्तिशाली, पराक्रमी रहस्मय देव है और अमावस्या पितृदेव की मानस पुत्री है अतः शनि और अमावस्या का संयोग उच्चाताकारक, शक्ति तत्व से भरपूर एवं तंत्रमय दिवस है। अतः इस दिन की साधना तत्काल फल देने वाली होती है।

शनैश्चरी अमावस्या साधना

इस साधना को सम्पन्न करने के इच्छुक साधकों के पास **'शनि यंत्र'** एवं **'काली हकीक'** की माला होनी आवश्यक है, इस प्रयोग को साधक **शनैश्चरी अमावस्या, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष** (दिनांक 12 **जून** 2010) अथवा **किसी भी शनिवार के सांयकाल,** पश्चिम मुख हो काले वस्त्र पहन काले रंग के ऊनी आसन पर बैठकर ही सम्पन्न करें। यंत्र को काले वस्त्र पर काले तिलों की ढेरी बनाकर उसके ऊपर स्थापित करें। पुष्प, कुंकुम, अक्षत, धूप दीप अथवा अगरबत्ती की इस साधना हेतु कोई आवश्यकता नहीं है। तिलों की ढेरी के सामने किसी लोहे या स्टील की कटोरी में तेल भर कर **'जीवन रक्षा गुटिका'** को डाल दें। इसके पश्चात् आप साधना क्रिया प्रारम्भ करते हुए सर्वप्रथम विनियोग सम्पन्न करें।

विनियोग

ॐ अस्य श्रीं शनि मन्त्रस्य, नारद ऋषिः, त्रिष्टुप छन्दः, शनि देवता, ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः मम शरीरे एवं समस्त परिवार शरीरे नाना ग्रहोपग्रह सम्पूर्ण रोग-समूह नाना दुष्ट रोग शान्त्यर्थ सर्व दुष्ट बाधा कष्ट कारक ग्रहस्य उच्चाटनार्थ शीघ्रारोग्य लाभार्थे कार्ये सिद्धयर्थे मन्त्र जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास

त्रिष्टुप्छन्दसे नमः मुखे।
शनि देवतायै नमः हृदि।

हां हीं बीजाय नमः गुह्ये।
स्वाहा शक्तयै नमः पादपोः।

निम्न उच्चारण करते हुए अपने शरीर के अंगों पर दाहिने हाथ से स्पर्श करें।

न्यास	कर न्यास
हां हीं हूं हैं हौं हः	अगुंष्ठाभ्यां नमः।
क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः	तर्जनीभ्यां नमः।
ग्लां ग्लीं ग्लूं ग्लैं ग्लौं ग्लः	मध्यमाभ्यां नमः।
झां झीं झूं झैं झौं झः	अनामिकाभ्यां नमः।
छां छीं छूं छैं छौं छः	कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
रां रीं रुं रैं रौं रः	करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

न्यास	हृदयादि न्यास
हां हीं हूं हैं हौं हः	हृदयाय नमः।
क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः	शिरसे नमः।
ग्लां ग्लीं ग्लूं ग्लैं ग्लौं ग्लः	शिखाये नमः।
झां झीं झूं झैं झौं झः	कवचाय नमः।
छां छीं छूं छैं छौं छः	नैत्र त्रयाय वौषट्।
रां रीं रुं रैं रौं रः	अस्त्राय फट्।

कर न्यास और हृदय न्यास सम्पन्न करने के पश्चात् साधक दोनों हाथ जोड़कर शनि देवता का ध्यान सम्पन्न करें।

ध्यान

नीलाद्रिशोभांचित दिव्य मूर्तिः
खड्गी त्रिदण्डी शरचाप हस्तः
शम्भुर्महाकाल शनिः पुरारि
जयत्य शेषा सुरनाशकारी
मेरु पृष्ठे समासीनं सामरस्ये स्थितं शिवम्।
प्रणम्य शिरसा गौरी पृच्छति स्म जगद्धितम्॥

उपरोक्त प्रकार से ध्यान करने के बाद काली हकीक की माला से अत्यन्त धैर्य पूर्वक कम से कम तैंतीस बार और अधिकतम 108 बार निम्न मंत्र का जप करें। यदि साधक 108 बार (अर्थात् एक माला) उच्चारण कर सके, तो श्रेष्ठ कहा गया है, किन्तु तैंतीस बार करना भी फलदायी है।

मंत्र

॥ हां हीं हूं हैं हौं हः क्षां क्षीं क्षैं क्षौं क्षः ग्लां ग्लीं ग्लूं ग्लैं ग्लौं ग्लः झां झीं झूं झैं झौं झः छां छीं छूं छैं छौं छः रां रीं रुं रैं रौं रः॥

मंत्र जप के पश्चात् साधक उसी समय यंत्र व माला को काले कपड़े में बांध घर से दूर, दक्षिण दिशा में कहीं निर्जन

स्थान में डाल आएं तथा जीवन रक्षा गुटिका को उसी प्रकार तेल में पड़ा रहने दें। आगे ग्यारह दिनों तक इसी गुटिका के समक्ष उपरोक्त मंत्र का प्रातः या सायं जब भी अवकाश मिले, ग्यारह बार उच्चारण करते रहें तथा अंतिम दिन गुटिका को लोहे के पात्र व तेल सहित या तो किसी को दान में दे दें अथवा किसी पेड़ के नीचे रख दें। यदि ऐसा भी संभव न हो, तो किसी तिराहे या चौराहे पर रख दें।

जिस साधक को शनि की साढे साती अथवा ढैय्या से विशेष कष्ट अनुभव हो रहा हो, उनके लिए यह एक श्रेष्ठ उपाय है।

इस प्रयोग को कोई भी साधक, भले ही उसके पास जन्मकुण्डली हो या नहीं (जिससे शनि की स्थिति का ज्ञान, साढ़े साती अथवा ढैय्या का ज्ञान होता है) भले ही उसके ऊपर साढ़े साती चल रही हो या न चल रही हो अथवा वह स्त्री हो या पुरुष इसे शनैश्चरी अमावस्या के अतिरिक्त किसी भी शनिवार की सांय वेला में निःसंकोच सम्पन्न कर सकता है।

इसके अलावा बगलामुखी साधना भी शनैश्चरी अमावस्या के दिन सम्पन्न करने से जीवन में शत्रुबाधा की समाप्ति होती है।

साधना सामग्री - 410/-

पूर्व जन्म को नकारा नहीं जा सकता है और न ही नकारा जा सकता है पूर्व जन्म में किए गए कर्मों की श्रृंखला को, जो कि इस जीवन में भी प्रभावी रहती है। पूर्व जन्मों में जाने - अनजाने में हुए किसी पाप-शाप का भोग तो मनुष्य को भोगना ही पड़ता है। बिना इन शापों का शमन हुए व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में सफल नहीं हो सकता, चाहे वह अध्यात्म से सम्बन्धित हो अथवा भौतिक जीवन से सम्बद्ध हो। शापोद्धार दीक्षा द्वारा उन कर्मों का क्षय होना प्रारम्भ हो जाता है और व्यक्ति शनैः-शनैः वह सब कुछ प्राप्त करने लगता है, जो भागीरथ प्रयास करने के बाद भी प्राप्त नहीं कर पा रहा था।

जीवन वह नहीं है, जो जन्म से लगाकर मृत्यु तक होता है। हमने काल खण्ड को देखा नहीं, और इस सम्बन्ध में कभी चिन्तन नहीं किया। समय तो अजस्र प्रवाह है, जिसके न हमें ओर का पता है, और न छोर का, इस बीच हम कई बार जन्म लेते हैं और कई बार मृत्यु को प्राप्त होते हैं।

यह हमारी अज्ञानता है, कि हमने जीवन का मतलब उस दिन से मान लिया, जिस दिन से हमने जन्म लिया है और उस जीवन को उतना ही मान लिया है; जिस दिन हमारी मृत्यु होती है। सामाजिक दृष्टि से तो निश्चय ही यह जीवन है, पर शास्त्रीय दृष्टि से यह मात्र जीवन का एक भाग है। इससे पहले भी हम कई बार जन्म ले चुके हैं, और मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं, यथा भविष्य में भी कई बार जन्म लेंगे और हमारी मृत्यु होगी। ...यह तो प्रकृति का विधान है।

प्रभु ने कुछ ऐसी व्यवस्था कर दी है, कि हमें अपने पिछले जीवन का स्मरण नहीं रहता और यह ऐसा इसलिए किया गया है, जिससे जीवन का मोह, बैर आदि हमें स्मरण नहीं रहें, और जीवन ज्यादा अशांत न हो। आप कल्पना करें, कि यदि हमें पिछले जीवन याद हों और यह भी स्मरण हो, कि अमुक ग्राम या शहर में अमुक व्यक्ति ने उसकी हत्या कर दी थी, तो वह क्रोध और बदले की भावना में जलता रहेगा और तब तक वह शांति से नहीं बैठ सकेगा जब तक वह अपनी मौत का बदला न ले ले।

भारतीय शास्त्रों के पूर्वजन्म तंत्र के माध्यम से व्यक्ति अपने पिछले जीवन में झांक सकता है और देख सकता है, कि उसका पिछला जीवन वर्तमान जीवन से अच्छा था अथवा बुरा। पिछले जीवन में कौन सी गलतियां की थीं, जिसका परिणाम इस जीवन में भुगतना पड़ रहा है, या पिछले जीवन में कौन से ऐसे भले कार्य थे, जिसका लाभ इस जीवन में हमें मिल रहा है।

यदि वर्तमान जीवन में परस्पर लड़ाई या मतभेद हैं तो इसका कारण पिछले जीवन की घटनाओं से रहा होगा, कौन सी घटनाएं थीं, जिनकी वजह से इस जीवन में मतभेद हैं!

कई बार व्यक्ति को ईश्वर पर क्रोध आता है और उसके न्याय पर संदेह होने लगता है, कि कोई व्यक्ति जीवन भर दान, पुण्य, गुरु की सेवा, इष्ट की पूजा करता हुआ सात्विक जीवन व्यतीत करता है, फिर भी वह गरीब और पैसे-पैसे के

लिए मोहताज रहता है, जबकि दूसरी ओर बदमाश, ठग हत्यारे, लूट खसोट करने वाले, झूठे और मक्कार व्यक्ति समाज में सम्माननीय कहे जाते हैं, उनके जीवन में कोई अभाव नहीं होता। ...तब हमें विधाता के न्याय पर सन्देह होने लगता है।

परन्तु इन सारे प्रश्नों के उत्तर उनके पूर्वजन्मों में विद्यमान हैं, उस जन्म को और उस जन्म के क्रिया कलाप देखने के बाद ही इन प्रश्नों का उत्तर मिल जाता है, कि क्यों पति-पत्नी में परस्पर मतभेद बना रहता है, क्यों बाप के कंधे पर बेटे की लाश श्मशान पहुंचती है, क्यों व्यक्ति परिश्रम करने के बावजूद भी गरीब बना रहता है? नहीं समझ में आने वाली बीमारी का रहस्य क्या है, क्यों इतना दुःख भुगतना पड़ता है? जब तक हम पिछला जीवन नहीं देख लेते, तब तक इन प्रश्नों का उत्तर प्राप्त नहीं हो सकते।

जन्मों की ये श्रृंखला और कर्मफल का रहस्य अत्यन्त पेचीदा है। इन्हीं के संयोग से व्यक्ति का अगला जीवन निर्धारित होता है। जगत में शिशु जब मां के गर्भ से उत्पन्न होता है, तो वह अकेले ही नहीं उत्पन्न होता है, उसके साथ होता है, हजारों मन का वह बोझा, जो कि उसके पूर्व जन्मों के कर्म का पुंजीभूत स्वरूप है। जैसे-जैसे बालक बड़ा होता जाता है, वैसे-वैसे उसके संचित कर्म उसके जीवन में प्रभाव दिखाते हैं।

मात्र परिश्रम और पुरुषार्थ से ही सब कुछ सम्भव हो जाता, फिर तो दिन भर परिश्रम करने वाला मजदूर जो दिवस भर कड़ी मेहनत करता है, लेकिन फिर भी बड़ी-मुश्किल से गुजर-बसर कर पाता है। क्यों ऐसा हो जाता है, कि आपके मित्र के कार्य बड़ी आसानी से पूर्ण हो जाते हैं और आप अपने हर कार्य के प्रति सजग और सचेष्ट रहने के बाद भी अपने सोचे हुए कार्य को पूरा नहीं कर पाते? क्यों आपके जीवन में बाधाएं आती हैं, जबकि अन्य लोगों के कार्य बैठे - बिठाए हो जाते हैं और व्यक्ति अपने भाग्य को दोषी ठहराने लगता है, और ईश्वर के प्रति अविश्वास करने लगता है।

जब सद्गुरु देख लेते है, कि उनका शिष्य बहुत प्रयासों के बाद भी साधनाओं में सफल नहीं हो पा रहा है, और न ही भौतिक क्षेत्र में उन्नति पा रहा है, और एक तरह से घिसट-घिसट कर जीने वाली जिन्दगी को जीने को विवश हो जाता है, तब वे शापोद्धार दीक्षा का उपक्रम करते हैं। ...क्योंकि इसी दीक्षा के द्वारा उसके अतीत व पूर्व जन्मों के उन शापों को धोया जा सकता है, जिनकी वजह से इस जीवन में भी रुकावट उत्पन्न हो रही है।

...परन्तु सत्य तो यही है, कि यदि दुःख है, तो दुःख के कारण भी हैं और दुःखों का यह कारण इस जीवन एवं पूर्व जन्मों के कृत्यों में छिपा होता है। इस जन्म में तो गुरुदेव से दीक्षा प्राप्त होने के बाद मन का मार्जन होने लगता है, उचित अनुचित में भेद समझ आने लगता है, और जीवन का मार्ग तथा लक्ष्य स्पष्ट होने लगता है। तब ऐसी चेतना आने पर व्यक्ति सत्कर्मों की ओर प्रवृत्त होता है एवं दुष्कर्मों से सप्रयास निवृत्ति लेने को ही प्रयत्नशील रहता है।

असफलताओं की चिन्ता मत करो; वे बिल्कुल स्वाभाविक हैं, वे असफलताएं जीवन के सौन्दर्य हैं, उनके बिना जीवन क्या होता? जीवन में यदि संघर्ष न रहे, तो जीवित रहना ही व्यर्थ है - इसी संघर्ष में है जीवन का काव्य। संघर्ष और त्रुटियों की परवाह मत करो। इन असफलताओं पर ध्यान मत दो, ये छोटी-छोटी फिसलनें हैं। आदर्श को सामने रखकर हजार बार आगे बढ़ने का प्रयत्न करो। यदि तुम हजार बार ही असफल होते हो, तो एक बार फिर प्रयत्न करो।

सत्य तो यह है, कि कर्मफल की एक बहुत बड़ी राशि पूर्व जन्मों से सम्बद्ध होती है। इस जन्म में आने वाली असफलताओं, परेशानियों का, बाधाओं का, रोग-शोक, निर्धनता एवं अपमान का कारण पूर्व जन्म में हुए पाप ही होते हैं अथवा किसी आत्मा का शाप होता है, जिसका प्रायश्चित इस जीवन में हमें करना पड़ता है।

जाने-अनजाने में पूर्व जन्मों में हमसे किसी जीवन को अथवा किसी मनुष्य को कष्ट पहुंचता है, अथवा उसके साथ दुर्व्यहार होता है, तो उसकी आत्मा का वह शाप निरन्तर हमारा पीछा करता ही है और समय आने पर वह पाप राशि, वह अभिशाप हमारे मार्ग में एक दैत्य की तरह आ खड़ा होता है, और हमे विवश हो जाना पड़ता है विधि के विधान के आगे।

हमारे ही कर्म, हमारे ही दोष हमारे मार्ग में रुकावट बन कर खड़े हो जाते हैं, और पूर्व जन्म स्मरण न होने के कारण हम अपने उस कर्म से अनभिज्ञ रहते हुए इन रुकावटों को ईश्वर के ऊपर थोपते रहते हैं, जिसके जिम्मेदार प्रायः हम स्वयं ही हुआ करते हैं।

कर्म का फल मनुष्य तो क्या अवतारी पुरुषों को भी भुगतना पड़ा है। पुराणों में प्रसंग आता है, कि एक बार सीता जी राज वाटिका में अपनी सखियों के साथ विचरण कर रही थीं, कि तोते की सुन्दर युगल जोड़ी ने उनका ध्यान आकर्षित किया।

वृक्ष की डाल पर फुदकते हुए तोते व तोती से सीताजी अति मुग्ध हुईं और उन्होंने अपनी सहेलियों को तोते को पकड़ने का आदेश दे दिया। तोते को पकड़कर सीताजी ने मन बहलाने के लिए पिंजड़े में डाल दिया। उधर तोती गर्भिणी में थी, उससे वियोग में रहा नहीं जा रहा था, अतः उसने तड़प-तड़प कर विरह में प्राण त्याग दिए और सीताजी को शाप दिया कि जिस तरह तूने मुझे इस गर्भिणी अवस्था में पति से अलग किया है, उसी तरह तुझे भी अपने पति से विलग होना पड़ेगा।

काल चक्र घूमा और शास्त्र इस बात का प्रमाण है, कि सीताजी को धोबी के आक्षेप के कारण स्वयं अपने पति राम द्वारा गर्भावस्था में अयोध्या से निष्कासित किया गया था और बाद में राजमहलों की सीताजी को वाल्मीकि आश्रम में पति के वियोग में ही मृत्यु तुल्य जीवन जीने को विवश होना पड़ा था। कर्मों के फल को तो भुगतना ही पड़ता हैं

पूर्व जन्म के इन शापों का शमन करना अति आवश्यक है, क्योंकि इन पाप-शाप के रहते व्यक्ति का सफल होना दुष्कर ही होता है। **अध्यात्म एवं साधना पथ पर बढ़े साधक को तो विशेष प्रयास कर अपने गुरु से इन शापों और पाप-दोषों का निवारण कर उद्धार करने की प्रार्थना करनी ही चाहिए।**

साधनाओं में सफलता या जीवन में किसी भी क्षेत्र में सफलता तब तक नहीं मिल सकती जब तक कि इन शापों का शमन न किया जा सके ...और यह शमन हो सकता है सद्‌गुरु कृपा से दीक्षा के रूप में, और दीक्षा के इसी रूप को शास्त्रों में **शापोद्धार दीक्षा** के नाम से जाना जाता है।

यह दीक्षा तो एक तरह से सभी साधकों के लिए अनिवार्य ही है, क्योंकि बिना पूर्व जन्म के शापों का, पापों का उद्धार किए बिना सिद्धि की कल्पना करना ही मूर्खता है। कूड़े के ढेर पर सुगन्ध का स्थापन नहीं हो सकता है, अतः जब कर्म दोषों का सद्‌गुरु के शक्तिपात से, सद्‌गुरु के शक्ति प्रवाह से भस्मीकरण होता है तभी उसके जीवन में सौभाग्य का उदय होता है, फिर वह जिस भी दिशा में प्रयास करता है, उसे दैवीय कृपा, पितृ कृपा, गुरु कृपा, कुटुम्ब कृपा सभी सहयोग रूप में प्राप्त होती है और वह अल्प प्रयास से ही वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है, जिस हेतु वह कर्मशील होता है।

जब गुरुदेव देखते हैं, कि शिष्य का पूर्व जन्म बहुत ही दोषयुक्त है, तो उन्हें यह दीक्षा कई चरणों में सम्पन्न कराते हैं अन्यथा सामान्यतः गुरुदेव यह दीक्षा एक ही चरण में पूर्णता के साथ शिष्य को प्रदान कर देते हैं।

यह दीक्षा तो प्रायः हर साधक को अनिवार्यतः लेनी ही चाहिए, क्योंकि जब तक शापों से उद्धार नहीं होगा, तब तक हम कितनी ही साधनाएं क्यों न कर लें, साधनाओं में अनुकूलता संदिग्ध ही रहेगी। जन्म-जन्म के इस जमी धूल को झाड़ कर पौंछ देने का उपाय ही है यह **शापोद्धार दीक्षा।**

डाक व्यय पत्र प्राप्त करने वाले द्वारा दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8
जोधपुर प्रधान डाकघर
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

सेवा में

व्यवस्थापक : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान**
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यय पत्र प्राप्त करने वाले द्वारा दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8
जोधपुर प्रधान डाकघर
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

सेवा में

व्यवस्थापक : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान**
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यय पत्र प्राप्त करने वाले द्वारा दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8
जोधपुर प्रधान डाकघर
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

सेवा में

व्यवस्थापक : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान**
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

प्रिय सम्पादक जी, (पृष्ठ संख्या 22 पर प्रकाशित) दिनांक : .... मई 2010

मैं लोकप्रिय पत्रिका मंत्र–तंत्र–यंत्र विज्ञान का 'वार्षिक सदस्य' बनना चाहता हूं। कृपया आप मुझे सम्बन्धित उपहार ***'तिब्बती धन प्रदाता लामा यंत्र'*** स्वरूप भेज दें। 303/– की वी.पी.पी. आने पर (258/– वार्षिक सदस्यता शुल्क + 45/– डाक व्यय) के रूप में जमा कर मुझे रसीद भेज दें। वी.पी.पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धनराशि दे कर वी.पी.पी. छुड़ा लूंगा एवं हर माह मुझे पत्रिका भेजते रहें अथवा आप मेरे मित्र को हर माह पत्रिका भेजते रहें।

मेरा नाम : ....

पूरा पता : ....

....

....

....

मेरे मित्र का नाम : ....

उसका पूरा पता : ....

....

....

....

(4)

प्रिय सम्पादक जी, दिनांक : .... मई 2010

'मंत्र–तंत्र–यंत्र विज्ञान' में प्रकाशित निम्न ऑडियो/वीडियो कैसेट्स–सी.डी वी.पी.पी. से भेज दें, वी.पी.पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धनराशि दे कर छुड़ा लूंगा।

<u>कैसेट्स के नाम</u>

....

....

....

....

मेरा नाम/पता : ....

....

(5)

प्रिय सम्पादक जी, (पृष्ठ संख्या 40 पर प्रकाशित) दिनांक : .... मई 2010

मुझे निःशुल्क उपहार स्वरूप पूर्ण मंत्रसिद्ध, चैतन्य, प्राण प्रतिष्ठा युक्त ***'धूमावती साधना'*** सामग्री भिजवा दें। मैं 570/– की वी.पी.पी. आने पर उसे छुड़ा लूंगा। मेरा पता निम्न है –

नाम व पता : ....

पता : ....

और मेरे दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित पत्रिका भेजते रहें। मेरे दोनों मित्रों के नाम व उनके पूरे पते निम्न हैं

1. .... 2. ....

....

....

....

(6)

यदि आप दीक्षा प्राप्त करने के इच्छुक हों, तो समय एवं स्थान का निर्धारण सुनिश्चित कर सकते हैं या आप अपना फोटो सम्बन्धित न्यौछावर राशि के साथ जोधपुर कार्यालय के पते पर भेज कर भी फोटो द्वारा दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

मंत्र–तंत्र–यंत्र विज्ञान, डॉ0 श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.) फोन : 0291–2432209, 2433623 टेलीफैक्स : 0291–2432010

चन्द्र ग्रहण

सौम्य साधनाओं का शुभ मुहूर्त

चन्द्र ग्रहण इस वर्ष ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा, 26 जून 2010 शनिवार को सांय 6.09 से 6.30 मिनट के मध्य होगा। ग्रहण का स्पर्श काल 3.47 मिनट से प्रारम्भ हो जायेगा।

विशिष्ट साधनाएं

चन्द्रमा ही मन को शीतलता, आनन्द देने वाला ग्रह है। मन के भाव का अधिदेव चन्द्र ही है। मन के भाव सौन्दर्य, रस, कामना, वशीकरण, आकर्षण, सम्मोहन, प्रेम, भोग, ऐश्वर्य हैं। अतः चन्द्र ग्रहण के समय जीवन के इन सभी भाव पक्षों की साधना करना शीघ्र फलदायक होता है।

जब सूर्य, पृथ्वी और चन्द्रमा एक लाइन में आते हैं तो चन्द्र ग्रहण की स्थिति बनती है और सभी जानते हैं कि पूरे वर्ष में एक दो बार ऐसी स्थिति का निर्माण होता है। जब भी ऐसी स्थिति बने तब साधक के लिये आवश्यक है कि वह उन क्षणों को पूर्ण रूप से ग्रहण कर ले तथा चन्द्र ग्रहण का तात्पर्य है, चन्द्रमा को अपने भीतर उतार लेना। यही जीवन की जीत है, जीवन का आनन्द है। जब जीवन में आनन्द के क्षणों को साधना तत्व के द्वारा पकड़ कर अपने भीतर स्थाई रूप से उतार देते हैं तो जीवन को देखने का नजरिया ही बदल जाता है। यही तो चन्द्र ग्रहण का रहस्य है, इस सम्बन्ध में पिछले अंकों में कई बार लिखा गया है, प्रस्तुत अंक में कुछ विशेष साधनाओं के बारे में आपका ध्यान आकर्षित किया जा रहा है। जिससे आप निश्चित रूप से इन साधनाओं को सम्पन्न करें।

लीलावती अप्सरा साधना (जुलाई 2007)

लीलावती अप्सरा साधना पूर्ण रूप से सिद्धि प्राप्ति करना है, सिद्धि प्राप्त करने का तात्पर्य जीवन में कई प्रकार के भौतिक सुखों में वृद्धि, यौवन, सुख, सौन्दर्य एवं सौभाग्य की प्राप्ति होती है। साधक साधना के समय स्नान कर सुन्दर, उत्तम प्रभावशाली सजे हुए वस्त्र धारण करें, और सुन्दर पीले रंग के रेशमी आसन पर उत्तर की ओर मुख कर बैठें, पूजा स्थान में इत्र, घी के दीपक तथा अच्छी खुशबू वाली अगरबत्ती अवश्य जलायें, अपने सामने **'लीलावती अप्सरा यंत्र'** लाल चावलों पर स्थापित करें, साथ ही सामने सुन्दर **'अप्सरा चित्र'** भी हो।

सर्वप्रथम साधक यह ध्यान करे कि **चन्द्रमुखी लीलावती पीले वस्त्रों को धारण कने वाली मधुर भाषिणी, सुगन्धित द्रव्यों के विलेप से सुगन्धित शरीर वाली कान्तिमय, लीलावती अप्सरा मुझे सिद्धि प्रदान करे तथा पूरे जीवन भर प्रेमिका रूप में ग्रहण कर मेरे जीवन को धन्य बनाये।**

इस प्रकार का ध्यान कर **'लीलावती माला'** अप्सरा यंत्र पर अर्पित करें, इस विशेष माला का प्रयोग अत्यन्त आवश्यक है। यंत्र तथा माला के चारों ओर पुष्पवर्षा करते हुए निरन्तर ध्यान (जो कि ऊपर दिया गया है) करते रहें, उसके पश्चात् लीलावती अप्सरा मंत्र जप प्रारम्भ करें, पूरे चन्द्र ग्रहण (चन्द्र ग्रहण स्पर्श से चन्द्र ग्रहण पूर्ण हाने तक) के समय जितनी माला शुद्ध रूप से जप सकते हैं उतना जप अवश्य करें।

लीलावती अप्सरा मंत्र

॥ॐ हुं लीलावती कामेश्वरी अप्सरा सिद्धि हुं हुं॥

चन्द्र ग्रहण की समाप्ति के साथ-साथ और मंत्र जप पूरा होते होते साधक को अप्सरा प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देगी, तब

साधक को चाहिये कि वह अप्सरा से अपने जीवन में पूर्ण सहयोग देने का वचन अवश्य ले लें। पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने वाले साधकों को अप्सरा वचन अवश्य ही देती हैं।

जब भी साधक जीवन में लीलावती अप्सरा को बुलाना चाहे तो यह माला गले में धारण कर 11 बार मंत्र जप करने से अप्सरा उसके सामने उपस्थित हो जाती है, और उसके कार्य को पूर्ण करती हैं।

वास्तव में यह अत्यन्त गोपनीय चामत्कारिक अप्सरा प्रयोग उचित समय पर अर्थात् चन्द्र ग्रहण के समय सम्पन्न करने से जो फल प्राप्ति होती है, वह तो साधक स्वयं ही अनुभव कर सकेगा।

साधना सामग्री - 390/-

सर्व मनोकामना पूर्ति मंत्र

(सम्पूर्ण साधना विधान - जुलाई 2008)

ऋषिजन जानते थे, कि कलियुग का व्यक्ति तेजयुक्त और तपस्या का धनी नहीं होगा, अतः उन्होंने ऐसी साधनाएं निर्मित कीं, जो अनेक इच्छित फल एक बार में ही देने में सक्षम थीं।

'सर्व मनोकामना पूर्ति' का अर्थ है - **जो कुछ भी मन की इच्छाएं, अभिलाषाएं हों, वे पूर्ण हों, व्यक्ति अपनी मनोनुकूल स्थिति प्राप्त करे ही और हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सके...**

वैसे तो मनोकामना पूर्ति साधना किसी भी दिन सम्पन्न की जा सकती है और इसके द्वारा सभी प्रकार की इच्छाएं पूर्ण होती देखी गई हैं, परन्तु **यदि चन्द्र ग्रहण के अवसर पर उसे सम्पन्न किया जाय, तो अपने-आप ही हजार गुणा फल प्राप्त होता है** और जिस कार्य के लिए व्यक्ति साधना करता है, यह सम्पन्न होता ही है...

सर्व मनोकामना मंत्र

॥ॐ ऐं श्रीं ह्रीं श्रीं ऐं ॐ॥

✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧

सम्मोहन वशीकरण

(सम्पूर्ण साधना विधान - जुलाई 2008)

यह सम्मोहन वशीकरण प्रयोग दूसरों के लिए नहीं अपितु स्वयं के लिए सम्पन्न किया जाता है, इस प्रयोग से साधक का शरीर विशेष प्रकार का चुम्बकीय तथा आकर्षण युक्त हो जाता है, चाहे उसका शरीर दुबला पतला हो, कमजोर हो परन्तु चेहरे पर कुछ ऐसा आकर्षण आ जाता है कि जो भी उसे देखता है, स्वतः ही वश में हो जाता है।

सम्मोहन मंत्र

॥ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि तन्नश्चक्रः प्रचोदयात्॥

✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧

दिव्यांगना अप्सरा

(सम्पूर्ण साधना विधान - नवम्बर 2009)

अप्सरा साधना का सर्वोच्च मुहूर्त तो चन्द्र ग्रहण का अवसर ही है

अप्सरा... चाहे वो उर्वशी हो, नाभिदर्शना अप्सरा हो, मृगाक्षी अप्सरा हो, त्रिलोत्तमा अप्सरा हो, रत्नमाला अप्सरा हो, यौवन गर्विता सुगन्ध मोदिनी अप्सरा हो, रम्भा अप्सरा हो, रूपोज्जवला अप्सरा हो अथवा अन्य कोई भी अप्सरा हो, अप्सरा जब साधक के जीवन में उतरती है तो प्रत्येक साधक-साधिका के जीवन में आनन्द भाव, कल्पना शक्ति, ऐश्वर्य, संगीत, कला, सौन्दर्य, माधुर्य, यश, कीर्ति का संचार कर देती है। ऐसी ही एक श्रेष्ठ अप्सरा है दिव्यागंना अप्सरा।

वास्तव में वे साधक सौभाग्यशाली होते हैं जिन्हें जीवन में अप्सरा साधना में सफलता मिलती है। अप्सरा साधना **'काम साधना'** नहीं अपितु दिव्यता की आध्यात्मिक साधना है। जिससे भौतिक जीवन में आनन्द आ सके।

दिव्यांगना अप्सरा मंत्र

॥ॐ ह्रीं दिव्यांगना वशमानाय ह्रीं फट्॥

✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧

मोती शंख के सम्बन्ध में लिखना अथवा उसके गुणों और प्रभाव की प्रशंसा केवल कुछ सीमित पृष्ठों में तो सम्भव ही नहीं है। लक्ष्मी के हाथ में स्थित यह शंख देवी का सबसे महत्वपूर्ण आभूषण है, श्रीयंत्र की साधना तो सभी करते हैं, लेकिन जो मोती शंख की साधना करता है और अपने कार्य-स्थल, व्यापार स्थल, घर अथवा भण्डार में मोती शंख स्थापित कर ले तो लक्ष्मी का वहीं स्थायी वास हो जाता है।

आज मैं सत्तर से भी ज्यादा उम्र का हो गया हूं और जब मैं मात्र ग्यारह वर्ष का था, तभी मैंने संन्यास की दीक्षा ले ली थी, उसके बाद मेरे जीवन का अधिकांश हिस्सा संन्यास की मर्यादाओं का पालन करने और हिमालय स्थित उच्चकोटि के संन्यासियों के साथ समय बिताने के साथ-साथ ज्ञान प्राप्त करने का रहा है।

जब पूज्य गुरुदेव ने मुझे दीक्षा दी, तो उन्होंने सबसे पहले यह कहा था, कि तुम्हें भारत की दुर्लभ और श्रेष्ठ सामग्रियों पर शोध करना है और यह ज्ञात करना है कि इन सामग्रियों पर किस प्रकार से साधना की जाय, किस विधि से अनुष्ठान सम्पन्न किया जायें और क्या इस प्रकार की विधियों से लाभ होता है या नहीं, इन सारे तथ्यों की प्रामाणिक जानकारी ही तुम्हारे जीवन का लक्ष्य होना चाहिए और अपना पूरा जीवन इसी पर समर्पित करो।

गुरु की आज्ञा का पालन करना मेरे जीवन का प्रमुख लक्ष्य रहा है और गुरु दीक्षा के दिन से आज तक मैं उन दुर्लभ वस्तुओं पर प्रयोग करता रहा हूं और इन प्रयोगों में मुझे आश्चर्यजनक अनुभव तथा सफलताएं प्राप्त हुई हैं।

मैंने सियारसिंगी, हत्थाजोड़ी, एकाक्षी नारियल, श्वेतार्क गणपति और ऐसी सैकड़ों हजारों देव दुर्लभ वस्तुओं के बारे में जानकारी प्राप्त की, इनसे सम्बन्धित जितने भी प्रामाणिक ग्रंथ थे उनको खंगाल डाला, जहां जहां से भी इनसे सम्बन्धित साधनाएं उपलब्ध हो सकती थीं, उन साधनाओं को प्राप्त किया और ऐसी हजारों हस्तलिखित पुस्तकों को नोट किया, जिनमें इस प्रकार की सामग्री तथा सम्बन्धित अनुष्ठान विधि उपलब्ध थी।

यद्यपि भारतवर्ष में दक्षिणावर्ती शंख का विशेष महत्व जन साधारण में व्याप्त है, परन्तु मोती शंख अपने आप में दुर्लभ और महत्वपूर्ण शंख है। इसकी चमक मोती के समान होने के कारण ही इसे मोती शंख कहा जाता है। यह एक गोल आकार का सुन्दर, सुरम्य शंख होता है जो कि अपने आप में कई विशेषताएं समेटे हुए है।

यह शंख छोटे बड़े कई साइजों में [illegible] होता है, यह प्रकृति का वरदान है जो मनुष्यों को [illegible] ही प्राप्त है।

मैंने दक्षिणावर्ती शंख पर ही कई अनुष्ठान किये हैं और उनमें मुझे आशातीत सफलताएं मिली हैं, परन्तु मोती शंख में यह विशेषता है कि इस पर प्रयोग करने से साधारण गृहस्थ को भी विशेष सफलता प्राप्त हो जाती है यदि इस शंख की मैं विशेषताएं गिनाने बैठूं तो एक पूरा ग्रंथ [illegible] हो सकता है। इतने लम्बे समय के अनुभव के [illegible] मैं यह कह सकता हूं कि यह शंख लक्ष्मी का दूसरा [illegible] और प्रत्येक गृहस्थ को अपने घर में इस प्रकार [illegible] चाहिए,

क्योंकि न मालूम कब इससे सम्बन्धित प्रयोग किसी साधु से प्राप्त हो जाय या किसी ग्रंथ में पढ़ने को मिल जाय, और प्रयत्न करने पर इस प्रकार का शंख मिलना कठिन ही होता है।

मैं आगे के पृष्ठों में कुछ विशेष प्रयोग इस शंख पर दे रहा हूं, मुझे विश्वास है कि वे प्रयोग गृहस्थ साधकों के लिए विशेष रूप से उपयोगी और सार्थक होंगे।

आयुर्वेदिक प्रयोग

आयुर्वेद की दृष्टि से भी इस शंख का विशेष महत्व है, इस शंख की [illegible] ही कुछ इस प्रकार से है, कि इसमें जल रखने पर उसमें [illegible] शंख के संयोग से कुछ विशेष प्रतिक्रिया हो जाने से [illegible] विशेष प्रभावयुक्त हो जाता है-

1. [illegible] शंख में जल भर कर रख दें तथा प्रातः काल इस जल को निकाल कर शरीर पर लगावें तो स्वतः ही [illegible] रोग समाप्त हो जाते हैं।
2. इसी प्रकार इस शंख में बारह घंटे जल भर कर वह जल यदि शरीर पर पाये जाने वाले सफेद दाग पर लगावें और ऐसा कुछ समय तक करें तो धीरे-धीरे ये सफेद दाग समाप्त हो जाते हैं और नैसर्गिक, शरीर से मेल खाती हुई चमड़ी वहां प्राप्त हो जाती है।
3. रात्रि को इस शंख में जल भर कर रख दें तथा प्रातः काल इस जल में कुछ गुलाब जल मिला कर अपने बालों में लगावें तो धीरे-धीरे सफेद बाल काले हो जाते हैं और स्थाई रूप से काले रहते हैं, इसी प्रकार वह जल भौंहों पर या दाढ़ी पर लगाने से वहां वहां के भी बाल काले हो जाते हैं।
4. यदि पेट में तकलीफ या आतों में सूजन हो अथवा आंतों में किसी प्रकार का जख्म हो तो इस प्रकार बारह घंटे तक [illegible] में रखे हुए जल का एक चम्मच नित्य पान करें तो [illegible]रे आंतों का जख्म मिट जाता है और पेट [illegible] समाप्त हो जाते हैं।
5. [illegible] बारह घंटे तक रखा हुआ जल दूसरे सामान्य [illegible] मिलाकर यदि प्रातः काल आंखों पर वह जल [illegible] तो आंखें निरोग, स्वस्थ और तन्दुरुस्त हो [illegible] यदि कुछ समय तक इसका नियमित [illegible] तो आंखों पर लगा हुआ नजर का चश्मा [illegible] और आंखे सामान्य स्वस्थ हो जाती हैं।

आर्थिक [illegible]

[illegible] का अत्यन्त प्रिय आभूषण बताया है और [illegible] का ही प्रतिरूप माना गया है, अतः जिसके घर में पूजा स्थान में यह शंख रहता है उसके घर में निरन्तर लक्ष्मी का वास बना रहता है।

1. यदि प्रातः काल स्नान करते समय इस शंख में से थोड़ा सा जल लेकर वह बाल्टी से भरे हुए पानी में मिला कर स्नान करें तो शरीर पुण्यवान और कान्तिमय होता है।
2. यदि इस प्रकार के शंख को कारखाने में स्थापित किया जाय तो स्वंतः ही उनकी दरिद्रता समाप्त हो जाती है, और आर्थिक उन्नति होने लगती है, इस शंख को विशेष रूप से दारिद्रय निवारक कहा जाता है, और इसके रहने से उसके व्यापार में वृद्धि होती रहती है।

दैहिक प्रयोग

1. मेरा ऐसा अनुभव है कि यदि प्रातःकाल स्नान कर शरीर को पोंछ कर इस शंख को अपने चेहरे पर हल्के हल्के रगड़ें तो धीरे-धीरे चेहरे की झुर्रियां मिट जाती हैं और चेहरा कान्तिमय बन जाता है।
2. जिनको अपने चेहरे की सुन्दरता को यथावत् बनाये रखने की इच्छा हो या जो अपने चेहरे को कान्तियुक्त बनाये रखना चाहते हों उन्हें इस प्रकार का प्रयोग अवश्य ही करते रहना चाहिए।
3. यदि इस शंख को पूरे शरीर पर हल्के हल्के फेरा जाय और कुछ दिनों तक ऐसा प्रयोग किया जाय तो अवश्य ही पूरा शरीर मोती की तरह स्वस्थ, सुन्दर एवं लावण्यमय बन जाता है।
4. कभी-कभी आंखों के नीचे काले-काले से दाग बन जाते हैं, जिससे चेहरे की सुन्दरता समाप्त हो जाती है, यदि इस शंख को नित्य प्रातः काल उठकर आंखों के नीचे धीरे-धीरे फेरा जाय और इस प्रकार कुछ दिनों तक करें तो अवश्य ही ये दाग समाप्त हो जाते हैं, ऐसा अनुभव है।

अनुष्ठान

इस शंख पर कई प्रकार के अनुष्ठान सम्पन्न किये जाते हैं पर मेरा मूल रूपेण अनुभव है कि लक्ष्मी प्राप्ति से संबंधित तथा वशीकरण से सम्बन्धित अनुष्ठान इस पर पूर्ण सफल और प्रभावकारी होते हैं। मैं दो अनुभूत प्रयोग नीचे दे रहा हूं।

1. जीवन में सफलता प्राप्ति का प्रयोग

यदि घर में कलह हो या पति-पत्नी में मतभेद हो या पति/पत्नी चाहे कि उसका जीवन साथी सदैव उसके अनुकूल रहे या कोई व्यक्ति किसी अन्य को अपने वश में करना चाहता हो या किसी शत्रु को अपने अधीन करना चाहता हो तो ऐसे सभी कार्यों में नीचे लिखा प्रयोग उपयोगी हो सकता है।

यह प्रयोग किसी भी रविवार से प्रारम्भ किया जा सकता है, प्रातःकाल उठ कर स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने इस **'मोती शंख'** को रख दें और इस पर कुंकुम आदि लगा दें, इसके बाद एक घृत का दीपक इसके सामने रख कर **'स्फटिक माला'** से निम्न मंत्र की एक माला फेरें। इस प्रकार तीस दिनों तक नित्य नियम पूर्वक करें तो निश्चय ही वह अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर लेता है, इस प्रकार के प्रयोग में नित्य मात्र 10-15 मिनट लगते हैं और ऐसा प्रयोग करने पर व्यक्ति मनोवांछित सफलता प्राप्त कर लेता है।

मंत्र

॥ ॐ क्रीं अमुकं मे वशमानय स्वाहा ॥

यह मंत्र अपने आप में विशेष शक्ति समेटे हुए है। इसकी विधि यह है कि मोती शंख एक पात्र में अपने सामने रख दें। और चावल के साबुत दाने अपने सामने किसी पात्र में रख दें इस बात का ध्यान रखें कि चावल के दाने खण्डित न हों।

इसके बाद उपरोक्त मंत्र पढ़ कर एक दाना मोती शंख के मुंह में डाल दें, इस प्रकार नित्य 108 दाने 108 बार मंत्र पढ़ कर डाल दें।

मंत्र में जहां **'अमुकं'** लिखा हुआ है, वहां उस पुरुष या स्त्री का नाम उच्चारण करें जिसे वश में करना है, जब माला पूरी हो जाय, तब वह शंख एवं चावल एक कपड़े में बांधकर वहां से उठा कर सुरक्षित स्थान पर रख दें।

दूसरे दिन भी इस प्रकार 108 बार मंत्र पढ़ कर चावल के दाने चढ़ायें, इस प्रकार जब 30 दिन तक प्रयोग कर लें तो वे चावल के दाने किसी सफेद कपड़े में बांधकर अपने सन्दूक या किसी सुरक्षित स्थान पर रख दें, ऐसा करने पर वह पुरुष या स्त्री प्रयोग करने वाले के वश में रहेगी और वह जैसा चाहता है, उसी प्रकार से कार्य सम्पन्न होगा।

साधना सामग्री - 150/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

2. लक्ष्मी प्राप्ति प्रयोग

यह शंख लक्ष्मी प्राप्ति, आर्थिक उन्नति, व्यापार वृद्धि आदि में भी विशेष रूप से सहायक है। कर्जा उतारने में तो यह प्रयोग अत्यधिक महत्व पूर्ण एवं प्रभावयुक्त है।

जो व्यक्ति इस प्रकार का प्रयोग चाहता है या अपने जीवन में पूर्ण आर्थिक उन्नति एवं व्यापार वृद्धि चाहता है, उसे प्रयोग अवश्य करना चाहिए।

यह प्रयोग किसी बुधवार को प्रातः स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने एक पात्र में **'मोती शंख'** को रख दें और उस पर केशर से स्वस्तिक चिन्ह बना दें, इसके बाद निम्न मंत्र जप करें, मंत्र जप में **'स्फटिक माला'** का ही प्रयोग किया जाना चाहिए।

मंत्र

॥ ॐ श्रीं ह्रीं दारिद्रय विनाशिन्यै धनधान्य समृद्धिं देहि देहि नमः ॥

इस मंत्रोच्चारण के साथ एक-एक चावल इस शंख के मुंह में डालते रहें, इस बात का ध्यान रखें कि चावल टूटे हुए न हों इस प्रकार नित्य एक माला फेरें, यह प्रयोग भी 30 दिन का है, जो अपने आपमें अचूक और प्रभाव युक्त है।

पहले दिन की माला समाप्त होने के बाद उसमें अर्पित अक्षत एक पात्र में रख दें और दूसरे दिन भी उसी प्रकार मंत्र जप करते हुए उसमें एक-एक मंत्र के साथ एक-एक चावल के दाने डालते रहें।

तीस दिन पर यह प्रयोग समाप्त होने के बाद चावलों सहित इस शंख को सफेद कपड़े में बांध कर अपने घर में पूजा स्थान में रख दें या कारखाने फैक्ट्री या व्यापारिक स्थल में स्थापित कर दें, यह शंख साधक के पास जब तक रहेगा, तब तक उसके जीवन में आर्थिक अभाव नहीं होगा, तथा निरन्तर आर्थिक व्यापारिक उन्नति होती रहेगी, यह भी स्पष्ट है कि ऐसा प्रयोग करने पर शीघ्र ही व्यक्ति कर्जे से मुक्ति पा लेता है, और सभी दृष्टियों से उन्नति करता रहता है।

दीपावली के दिन भी इस शंख का पूजन किया जा सकता है और जिस प्रकार लक्ष्मी की पूजा होती है उसी प्रकार इसका पूजन किया जाना चाहिए।

वस्तुतः यह शंख अत्यधिक महत्वपूर्ण, दुर्लभ एवं प्रभावयुक्त है तथा ऐसे बिरले ही सौभाग्यशाली होंगे जिनके घर में इस प्रकार का दुर्लभ महत्वपूर्ण शंख पाया जाता होगा, पर इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इस प्रकार का शंख तभी सफलता देने वाला हो सकता है जब वह प्राण संजीवनी क्रिया से सिक्त मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त हो।

वस्तुतः यह शंख प्रत्येक साधु संन्यासी और गृहस्थ के लिए उपयोगी है और मैंने इस पर कई प्रयोग सम्पन्न किये हैं, आगे फिर कभी इस शंख पर किये गये प्रयोगों का विवरण देने का प्रयत्न करुंगा।

साधना सामग्री - 300/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

मेष –

इस माह आपको आय में वृद्धि एवं निवेश के शुभ अवसर प्राप्त हो सकते हैं, आप इन अवसरों को समझ एवं पकड़ पायें तो भविष्य में आप दीर्घ लाभ की स्थिति प्राप्त करेंगे। आपको विभिन्न कारणों से राजकीय एवं प्रशासनिक कार्यालयों के चक्कर लगाने पड़ सकते हैं। दाम्पत्य जीवन में भी आ रही बाधाएं समाप्त होंगी, घर-परिवार में किसी नये व्यक्ति का आगमन हो सकता है। बेरोजगारों को रोजगार प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे। आप **'चन्द्रिका यक्षिणी साधना'** (मार्च 2010) करें। शुभ तिथियां - 7, 12, 13, 16, 18 हैं।

वृष –

इस माह आपको अपने जीवन के कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लेने पड़ सकते हैं, जिस का प्रभाव आपके भविष्य पर पड़ेगा। आपके लिये हितकारी होगा कि शुभचिन्तकों से विचार विमर्श के पश्चात् ही कोई निर्णय करें। इस माह आपका आत्मविश्वास एवं जोश देखने लायक होगा। परिवार में किसी की बीमारी के कारण आपको अस्पताल के चक्कर भी लगाने पड़ सकते हैं। दाम्पत्य जीवन में प्रेम का प्रस्फुटन होगा। प्रेम-प्रसंगों में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। आप **'हनुमान साधना'** (फरवरी 2010) करें। शुभ तिथियां - 2, 9, 16, 19, 30 हैं।

मिथुन –

पूरे माह आप ऐसे कार्यों में व्यस्त रह सकते हैं जिसका सीधा सम्बन्ध आप से अथवा आपके परिवार से नहीं हो। इस कारण आपके परिवार में तनाव भी उत्पन्न हो सकता है। वैसे पारिवारिक दृष्टि से यह माह आपके लिये कठिन ही सिद्ध होगा। इसके विपरीत मित्रों, समाज, कार्यालय अथवा व्यवसाय में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि हो सकती है। आर्थिक दृष्टि से भी आपको आकस्मिक लाभ के योग प्राप्त होंगे। यात्रा एवं वाहन चलाते समय स्वयं का ध्यान रखें, दुर्घटना के योग हैं। आप **'बटुक भैरव साधना'** (अप्रैल 2010) करें। शुभ तिथियां - 4, 10, 13, 18, 29 हैं।

कर्क –

इस माह आय की अपेक्षा व्यय अधिक होने के योग हैं, आप किसी मांगलिक कार्यक्रम, शादी, समारोह में भाग ले सकते हैं अथवा आयोजन करना पड़ सकता है। मांगलिक आयोजन के कारण आपकी आर्थिक स्थिति खराब हो सकती है, परन्तु आपको घबराने की आवश्यकता नहीं है। आयोजन के लिये धन आपको सहजता से ही उपलब्ध हो जायेगा। माह के अंत तक स्थिति धीरे-धीरे आपके पक्ष में होनी प्रारम्भ होगी। आप **'तारा साधना'** (अप्रैल 2010) करें। शुभ तिथियां - 1, 5, 15, 19, 24 हैं।

सिंह –

यह माह आपके जीवन में बदलाव का होगा जो कि आपके लिये अच्छा सिद्ध होगा। व्यक्तियों को उनके द्वारा किये हुए कार्यों, कर्मों का फल अवश्य प्राप्त होता है। आपको भी आपके द्वारा किये गये कार्यों एवं सद्कर्मों का फल प्राप्त होगा। आप माह के अंत में किसी यात्रा पर भी जा सकते हैं। परिवार में प्रेम, घनिष्ठता एवं सौहार्द में वृद्धि होगी। आप स्वयं को पहले की अपेक्षा अधिक ऊर्जावान महसूस करेंगे। अविवाहित युवक-युवतियों के परिणय-सूत्र में बंधने के प्रबल योग हैं। आप **'हैलत्व ग्रह दोष निवारण साधना'** (मार्च 2010) करें। शुभ तिथियां - 6, 12, 17, 21, 26 हैं।

कन्या –

वैसे तो यह माह आपके लिये अच्छा है, परन्तु आपको मित्रों के चयन में विशेष सावधानी बरतनी होगी, इस माह आपके पथ भ्रष्ट होने अथवा बुरी संगत, गलत कार्यों में लगे व्यक्तियों के साथ आपका सम्पर्क हो सकता है। अगर आपने स्वयं पर नियन्त्रण नहीं रखा तो आप पर उनकी संगत का असर पड़ सकता है। आर्थिक दृष्टि से भी किसी प्रकार की हानि हो सकती है। आपके लिये श्रेष्ठ होगा कि अपने इष्ट एवं गुरु का ध्यान करें। परिवार में किसी नये व्यक्ति का आगमन हो सकता है। आप **'वांछा कल्पलता - तांत्रोक्त साधना'** (अप्रैल 2010) करें। शुभ तिथियां - 1, 19, 24, 27 हैं।

तुला -

आपके मित्रों, शुभ-चिन्तकों एवं रिश्तदारों से आपको सहयोग प्राप्त होगा, आपके आत्म विश्वास में भी वृद्धि होगी। राजकीय एवं प्रशासकीय परेशानियां धीरे-धीरे हल हो सकती हैं। आपको किसी कार्यवश यात्रा पर भी जाना पड़ सकता है, जो कि आपके लिये फायदेमंद ही सिद्ध होगी। आप किसी नये व्यापार अथवा कार्य-विस्तार की योजना भी बनायेंगे, परन्तु अभी उसके पूर्ण होने की संभावनाएं कम ही लगती हैं। बेरोजगारों एवं विद्यार्थियों को कठिन परिश्रम करना पड़ सकता है। आप **'वार्ताली स्तम्भन साधना'** (अप्रैल 2010) करें। शुभ तिथियां - 3, 21, 25, 31 हैं।

वृश्चिक -

आपको इस माह अन्य व्यक्तियों एवं सहयोगियों की अपेक्षा अधिक मेहनत एवं प्रयास करने होंगे, आप अपने कार्यक्षेत्र में पूर्ण निष्ठा एवं लगन से कार्य करते रहें। वर्तमान में नहीं तो दीर्घकाल में तो आपको अवश्य ही अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे। धन की आवक कम होने के कारण आप चिन्तित हो सकते हैं। परिवार में चला आ रहा विवाद किसी की मध्यस्थता से हल होने की संभावना है। प्रेम-प्रसंगों में सावधानी बरतें, अन्यथा सामाजिक स्तर पर हानि उठानी पड़ सकती हैं। महिलाएं संयम एवं शांति से रहें। आप **'विष्णु साधना'** (अप्रैल 2010) करें। तिथियां - 1, 6, 27, 29, 31 हैं।

धनु -

इस माह आपको अपने शत्रुओं एवं प्रतिस्पर्धियों से सावधान रहने की आवश्यकता है। विरोधीपक्ष आपको असफल करने के लिये योजनाएं बनायेंगे। इस माह आपको किसी कारणवश कर्ज भी लेना पड़ सकता है परन्तु घबराने की आवश्यकता नहीं है, आप जल्द ही ऋण मुक्त हो जायेंगे। आय-व्यय के संतुलन को बनाये रखें अन्यथा आप परेशानी में फंस सकते हैं। प्रभावशाली व्यक्तियों के साथ आपकी घनिष्ठता बढ़ सकती है। महिलाएं वाद-विवादों एवं उलझनों से स्वयं को दूर ही रखें। आप **'अक्षय पात्र साधना'** (अप्रैल 2010) करें। शुभ तिथियां - 2, 7, 8, 25, 31 हैं।

मकर -

यह माह आपके व्यापार, नौकरी, पेशा इत्यादि के लिये बहुत सहायक सिद्ध हो सकता है। इस माह आप बड़ी-बड़ी योजनाओं, अनुबन्धों को भी प्राप्त करने में सफलता प्राप्त कर सकते हैं, समाज में भी आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। संतान पक्ष से भी आपको अच्छे समाचार प्राप्त हो सकते हैं। इन सब के बीच आपको एक बात से भी सावधान रहने की जरूरत है। कि माह के अंत में कोई आकस्मिक हानि जैसे चोरी, सट्टे या जुए में हानि, दुर्घटना आदि का सामना भी करना पड़ सकता है। आप **'हरिद्रा गणपति साधना'** (जनवरी 2010) करें। तिथियां - 1, 5, 9, 11, 27 हैं।

> **योग:** सिद्ध योग 5, 11, 14, 22, 27, 28 मई/9, 17, 23, 29 जून ☆
> सर्वार्थ सिद्ध योग - 2, 6, 15, 23, 30 मई/3, 12, 20, 24 जून ☆
> त्रिपुष्कर योग - 25 मई ☆

कुंभ -

माह का प्रारम्भ मौज-मस्ती, आनन्द एवं उत्साह के साथ होगा। आप पूरे परिवार के साथ किसी भ्रमणीय स्थान की यात्रा भी कर सकते हैं। पारिवारिक जीवन में आपसी विश्वास एवं प्रेम में वृद्धि होगी। घर-परिवार में सुखद वातावरण आपको मानसिक शांति प्रदान करेगा। माह के अंत में आपको आय में बढ़ोतरी के साधन भी प्राप्त हो सकते हैं। मित्रों एवं शुभचिन्तकों के सहयोग से पद, प्रतिष्ठा, व्यापार में बढ़ोतरी तथा बेरोजगारों को रोजगार प्राप्ति हो सकती है। आप **'वर लक्ष्मी साधना'** (अप्रैल 2010) करें। शुभ तिथियां - 2, 3, 7, 8, 12, 30 हैं।

मीन -

प्रशासनिक एवं सरकारी कार्यों में आपको सफलता प्राप्त होगी तथा पुराने लम्बित मामलों, योजनाओं को प्रारम्भ करने में आप सफलता भी प्राप्त कर सकते हैं। इस माह ईश्वर के प्रति विश्वास एवं श्रद्धा में बढ़ोतरी होगी, आप धार्मिक कार्यों में सक्रियता से भाग लेंगे। माह के अंत में व्यर्थ एवं फालतू कार्यों में समय खराब होने से आप परेशान भी हो सकते हैं। महिलाओं के लिये यह माह बहुत अच्छा होगा। परिवार में कोई मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकता है एवं किसी नये व्यक्ति का आगमन हो सकता है। आप **'उत्कीलन साधना'** (मार्च 2010) करें। तिथियां - 4, 6, 10, 15, 23 हैं।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

24 मई	वैशाख शु.	- 11	सोमवार	मोहिनी एकादशी
25 मई	वैशाख शु.	- 12	मंगलवार	प्रदोष व्रत
26 मई	वैशाख शु.	- 14	बुधवार	नृसिंह जयंती
27 मई	वैशाख शु.	- 15	गुरुवार	पूर्णिमा व्रत
29 मई	ज्येष्ठ कृ.	- 02	शनिवार	नारद जयंती
02 जून	ज्येष्ठ कृ.	- 05	बुधवार	वटसावित्री
09 जून	ज्येष्ठ कृ.	- 12	बुधवार	प्रदोष व्रत
12 जून	ज्येष्ठ कृ.	- 30	शनिवार	शनैश्चरी अमावस्या

मैं समय हूं

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है।

वार/दिनांक		श्रेष्ट समय
रविवार (मई 30) (जून 6, 13, 20)	दिन	06:00 से 08:24 तक 11:36 से 02:48 तक 03:36 से 04:24 तक
	रात	06:48 से 10:00 तक 12:24 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
सोमवार (मई 31) (जून 7, 14, 21)	दिन	06:00 से 07:30 तक 09:12 से 11:36 तक
	रात	08:24 से 11:36 तक 02:48 से 03:36 तक
मंगलवार (जून 1, 8, 15, 22)	दिन	10:00 से 11:36 तक 04:30 से 06:00 तक
	रात	06:48 से 10:00 तक 12:24 से 02:48 तक 05:12 से 06:00 तक
बुधवार (जून 2, 9, 16, 23)	दिन	06:48 से 10:00 तक 02:48 से 05:12 तक
	रात	07:36 से 09:12 तक 12:00 से 02:48 तक
गुरुवार (जून 3, 10, 17, 24)	दिन	06:00 से 07:36 तक 10:00 से 11:36 तक 04:24 से 06:00 तक
	रात	09:12 से 11:36 तक 02:00 से 04:24 तक
शुक्रवार (मई 28) (जून 4, 11, 18, 25)	दिन	06:00 से 06:48 तक 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 03:36 तक
	रात	07:36 से 09:12 तक 10:48 से 11:36 तक 01:12 से 02:48 तक
शनिवार (मई 29) (जून 5, 12, 19, 26)	दिन	06:00 से 06:48 तक 10:30 से 12:24 तक
	रात	08:24 से 10:48 तक 02:48 से 03:36 तक 05:12 से 06:00 तक

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

जून

1. आज **मंगल स्तोत्र** का पाठ अवश्य करें।
2. आज पांच लौंग पान में रखकर घर के बाहर रख दें। आने वाली बाधा समाप्त होगी।
3. आज गुरु पूजन सम्पन्न कर, गुरु सेवा का प्रण लेकर ही दिन का प्रारम्भ करें।
4. आज मीठा खाकर ही घर से निकलें, दिन सफलता दायक रहेगा।
5. **शनि मुद्रिका** (न्यौछावर 90/-) का पूजन कर सरसों तेल में डाल कर पीपल के वृक्ष पर चढ़ा आयें, बाधा समाप्त होगी।
6. प्रातः ***ह्रीं आदित्या स्वाहा*** मंत्र का जप करते हुए सूर्य भगवान को जल अर्पित करें।
7. आज प्रातः **मधुरूपेण रुद्राक्ष** (न्यौछावर 100/-) का पूजन कर पूजा कक्ष में रख दें। इच्छित कार्य सम्पन्न होगा।
8. हनुमान जी को सिन्दूर व तेल चढ़ाएं, बल प्राप्ति होगी।
9. प्रातः काल ***ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं क्लीं ह्रीं ऐं ब्लूं स्त्रीं नील तारे सरस्वती द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः*** मंत्र का 11 बार उच्चारण करें।
10. आज **विशिष्ट गुरु पूजन** ऑडियो कैसेट (न्यौछावर 30/-) में दिये पूजन को सम्पन्न करें।
11. आज किसी ब्राह्मण को भोजन करायें, आने वाली बाधा समाप्त होगी।
12. **गोमती चक्र** (न्यौछावर 21/-) का संक्षिप्त पूजन कर किसी शिवालय में अर्पित करें, लक्ष्मी प्राप्त होगी।
13. आज कुंकुम मिश्रित जल से सूर्य भगवान को अर्घ्य प्रदान करें।
14. आज पांच बिल्व पत्तों पर स्वास्तिक बनाकर किसी शिव मंदिर में चढ़ाएं।
15. आज सरसों के तेल को दान करें। बाधा समाप्त होगी।
16. आज प्रातः ***ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हूं सौः जगत्प्रसूत्यै नमः*** मंत्र का 21 बार उच्चारण करें।
17. **प्रातः कालीन गुंजरित वेद ध्वनि** ऑडियो कैसेट (न्यौछावर 30/-) का श्रवण करें।
18. आज प्रातः दूध का दान करें।
19. आज एक कागज पर **महामृत्युंजय मंत्र** लिखकर भगवान शिव के मन्दिर में रख दें। मनोकामना पूर्ण होगी।
20. प्रात ब्रह्म मुहूर्त में स्नान आदि सम्पन्न कर, **सरस्वती मुद्रिका** (न्यौछावर 90/-) का संक्षिप्त पूजन कर उसे धारण करें, तेजस्विता प्राप्त होगी।
21. गुरु जन्म दिवस पर गुरु पूजन कर **'गीता गीता'** का पाठ करें तथा गुरु कार्य करने का संकल्प करें।
22. प्रातः उठते ही बिस्तर पर बैठे-बैठे ***सौं सौभाग्य नमः*** मंत्र का पांच मिनट तक जप करें।
23. प्रातः उठते ही अपने इष्ट का स्मरण अवश्य करें।
24. आज प्रातः ***ॐ बृं बृहस्पत्ये नमः*** मंत्र का दस मिनट तक जप कर कार्य हेतु जायें, सफलता मिलेगी।
25. **राजलक्ष** (न्यौछावर 50/-) का पूजन संक्षिप्त पूजन कर भगवती लक्ष्मी का ध्यान करें। अगले दिन जल में प्रवाहित कर दें, धन लाभ होगा।
26. आज प्रातः गुड़-घी खाकर ही घर से निकलें।
27. आज अपने भोजन में सफेद वस्तुओं (दूध, दही, चावल, दूध से बनी मिठाई आदि) को प्राथमिकता प्रदान करें।
28. आज **गायत्री मंत्र** की 5 माला मंत्र जप करें।
29. **रोग हरणा गुटिका** (न्यौछावर 90/-) का संक्षिप्त पूजन कर, जल में विसर्जित कर दें। स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होगा।
30. आज पीपल के वृक्ष में अवश्य जल अर्पित करें।

कठोपनिषद में यम तथा नचिकेता के संवाद का विवरण विस्तार से आता है। कथा के अनुसार नचिकेता जो महर्षि उद्दालक के पुत्र थे, ऋषि द्वारा एक विश्वजीत यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ की पूर्णता पर धन, धान्य, गऊदान इत्यादि की परम्परा रही है। उसी प्रकार ऋषि उद्दालक ने भी, अपने आश्रम की समस्त गायों को जिनमें से अधिकांश बूढ़ी और बीमार थीं, उन्हें दान में दे दिया। बालक नचिकेता को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उसके विद्वान पिता इन बीमार गायों को क्यों दान कर रहे हैं जो किसी के लिये भी काम की नहीं है। उसने अपने पिता से बार-बार इसके सम्बन्ध में जिज्ञासा की और उनके ज्ञान और विवेक पर प्रश्न उठाया। बालक नचिकेता ने कहा कि - जिस वस्तु का आप दान कर रहे हैं, वह उपयोगी है अथवा नहीं है इसका ज्ञान अवश्य होना चाहिए। उसने आगे और प्रश्न किया कि क्या मुझे भी दान कर देंगे? ऋषि को क्रोध आ गया और उन्होंने कहा कि मैं तुम्हें मृत्युदेव यमराज को दान देता हूं।

नचिकेता ने पिता की आज्ञा को स्वीकार करते हुए उनसे विदा ली और मृत्युदेव के लोक यमलोक सशरीर पहुंचा। उस समय यमराज कहीं अन्यत्र गये हुए थे। लेकिन नचिकेता ने तीन दिन तक बिना खाए-पिए उनकी प्रतीक्षा की और जब तीन दिन बाद यमराज आए और अपने द्वार पर बालक को प्रतीक्षारत पाया तो बड़ी ही ग्लानि हुई और उन्होंने उससे आने का कारण पूछा तथा तीन दिन की प्रतीक्षा के कारण तीन वर मांगने को कहा -

नचिकेता को मृत्युदेव यम से कोई भय नहीं था और उन्होंने स्पष्ट शब्दों में तीन उपहार मांगे।

1. मेरे पिता का क्रोध शांत हो जाए और वे पहले की भांति मुझसे स्नेह करने लगें।
2. मृत्यु लोक में भय, विवाद, दुर्भाग्य, वृद्धावस्था, बीमारी, पीड़ा सब कुछ है लेकिन इस यमलोक, स्वर्गलोक में ये सब स्थितियां नहीं है। वह कौन सी विद्या है, जिसके द्वारा इन सारी विपरीत स्थितियों से मुक्ति प्राप्त की जा सकती है? उस विद्या को मैं जानना चाहता हूं।
3. नचिकेता का अंतिम प्रश्न था कि अग्नि विद्या के ज्ञान से ही मनुष्य के भीतर ज्योति जाग्रत होती है और वह देह आत्मा इत्यादि से सम्बन्धित सारे प्रश्नों के सन्देह से

मुक्त हो सकता है। नचिकेता ने कहा – 'आप सूर्य पुत्र हैं इस कारण आप इस अग्नि विद्या का ज्ञान मुझे ज्ञान प्रदान करें।'

नचिकेता के इन प्रश्नों से एक बात स्पष्ट होती है कि मृत्यलोक ही नरकलोक है, जहां प्राणी विभिन्न प्रकार के दुःख कष्ट पीड़ा, उठाता है और उन्हें भोगता है और जब उसके जीवन में अग्नि अर्थात् प्रकाश जाग्रत हो जाता है वह इन सारे संशयों से मुक्त हो जाता है।

इसी विवेचन से यह भी स्पष्ट होता है कि धर्मराज यमराज मूल रूप से धर्म के अधिपति धर्मराज हैं जो मनुष्य के भीतर वास्तविक ज्ञान, धर्म का जागरण करते हैं। इसी लिये इन्हें मृत्यु का अधिपति कहा गया है अर्थात् जो मनुष्य के जीवन में मृत्युभाव को समाप्त कर सकें।

मृत्यु के अधिपति यमराज को धर्मराज भी कहा जाता है क्योंकि रोग, शोक, दुःख, पीड़ा और मृत्यु का धर्म के अनुसार निर्णय करने वाले प्रधान यमराज ही हैं, इन्हीं विपदाओं के रहते कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में पूर्ण उन्नति की ओर अग्रसर नहीं हो सकता है, मानसिक बाधा के प्रभाव स्वरूप उसके जीवन की शक्तियों का ह्रास होता है, अतः जहां देवताओं का पूजन मनन आवश्यक है, वहीं धर्मराज यमराज की पूजा भी अत्यन्त आवश्यक है।

विभिन्न प्रकार के शारीरिक, मानसिक तथा दैहिक रोगों की उत्पत्ति के कारणों में व्यक्ति द्वारा किये गये उसके पूर्व जन्म के कर्म तथा वर्तमान जन्म के कर्म प्रधान रहते हैं, वर्तमान जन्म के कर्म पर तो नियंत्रण किया जा सकता है, लेकिन पूर्व जन्म में किये गये कर्मों के कारण इस जन्म में जो दुर्भाग्य, बाधा, पीड़ा झेलनी पड़ती है उस पर नियंत्रण कैसे किया जाय?

मंत्र महोदधि ग्रंथ में लिखा है, कि –

पाथः संयुतमेघसन्निभतनुः प्रद्योतनस्यात्मजो,
नृणां पुण्यकृतां शुभावहवपुः पापीयसां दुःखकृत।
श्रीमद्दक्षिणदिक पतिर्महिषगोभूषांभरालङ्कृतो,
ध्येयः संयमनीपतिः पितृगणस्वामी यमो दण्डभृत॥

अर्थात् जल से भरे हुए बादल के समान श्याम शरीर वाले, सूर्य के पुत्र, श्रेष्ठ कार्य करने वाले मनुष्यों को उत्तम फल देने वाले, दुराचारियों को दुःख देने वाले, दक्षिण दिशा के स्वामी, भैंसे की सवारी पर आरूढ़, विभिन्न प्रकार के श्रेष्ठ आभूषणों से सुशोभित, पितृगणों एवं नरकपुरी के स्वामी दण्डधारी यमराज को प्रणाम।

यह स्पष्ट है, कि यमराज सूर्य के पुत्र हैं, अतः यमराज की पूजा करने से सूर्य पूजा का भी फल प्राप्त होता है। सूर्य मनुष्य के व्यक्तित्व के स्वामी प्रधान देव हैं, जिनके चारों ओर सभी ग्रह परिक्रमा करते हैं। ऊपर लिखित मंत्र धर्मराज यमराज का ध्यान मंत्र है।

धर्मराज साधना

यह तो स्पष्ट है कि सभी प्रकार की बाधाओं, रोग, शोक का मूल कारण मनुष्य के कर्म हैं और उनका निर्णय करने का अधिकार केवल धर्मराज यमराज को ही है, अतः धर्मराज यमराज की पूजा एवं साधना करने से मनुष्य को शरीर, मन, कार्य की दृष्टि से पूर्णता प्राप्त होती है, विभिन्न रोग पूर्ण नियंत्रण में रहते हैं।

आप जो कार्य करते हैं, उनका प्रभाव आपके परिवार पर भी पूर्ण रूप से पड़ता है, अतः धर्मराज यमराज की साधना पूरे परिवार के लिए अत्यन्त आवश्यक है, **'रहस्य तंत्रम् ग्रंथ'** में कहा गया है, कि –

मृत्युंजयेन पुटितं धर्मराजस्य मंत्र जपेत्।
सर्वोपद्रव सन्त्यक्तो लभते वांछितं फलम्॥

अर्थात् जो व्यक्ति मृत्युंजय मंत्र से सम्पुटित धर्मराज मंत्र का जप एवं साधना करता है, वह सब उपद्रवों से मुक्त हो कर वांछित फल को प्राप्त करता है।

शारीरिक व्याधि से अधिक पीड़ा कारक मानसिक व्याधि है, जिसके कारण से मनुष्य हर समय चिन्तित रहता है, और उसके जीवन में उन्नति नहीं हो पाती है, मानसिक व्याधियों का मूल कारण पारिवारिक अशांति, राजकीय बाधा, सभी कार्यों में निरन्तर रुकावट, विभिन्न प्रकार की शारीरिक पीड़ाएं होती हैं, अतः मन को श्रेष्ठ कर लेने से शरीर श्रेष्ठ हो जाता है और इस कार्य के लिए धर्मराज साधना हर दृष्टि से उपयुक्त है।

इस साधना के फलस्वरूप वर्तमान समय के दुःखों का समाधान तो प्राप्त होता ही है, आने वाले समय में भी आने वाली बाधाओं के निवारण में पूर्ण अनुकूलता प्राप्त होती है।

जो व्यक्ति भय को जीत लेता है, वह संसार को जीत सकता है, तथा धर्मराज साधना वह अद्भुत साधना है जिसका पूर्ण फल प्राप्त होने पर सभी कार्य निरन्तर सफल होते रहते हैं।

साधना समय

सभी साधनाओं के लिए कुछ विशेष समय तथा दिन निर्धारित किये गये हैं, जिसके कारण साधना का पूर्ण लाभ प्राप्त हो सके, पूरे वर्ष में कोई भी साधना किसी भी समय

सम्पन्न की जा सकती है, लेकिन निश्चित समय पर साधना प्रारम्भ करने से उसका फल कई गुना अधिक प्राप्त होता है, यमराज सूर्यपुत्र होने के कारण इस साधना को रविवार को ही प्रारम्भ एवं सम्पन्न करना उचित है।

साधना विधान

इस विशिष्ट साधना हेतु विशेष सामग्री की आवश्यकता रहती है, और इस सामग्री में 11 **गोमती चक्र**, 11 **हकीक पत्थर** तथा **एक ऋतु फल** आवश्यक है। यदि तरबूज का फल प्राप्त हो सके, तो अत्यन्त उत्तम रहता है, इसके अलावा काजल, धूप, दीप, नैवेद्य, कुंकुम, लाल चंदन, पुष्प इत्यादि पहले से लाकर रखें।

सर्व प्रथम स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर, अपने पूजा स्थान में रात्रि को बैठें, लकड़ी के बाजोट (चौकी) पर लाल वस्त्र बिछाकर काजल से एक त्रिकोण के सबसे ऊपर वाली भुजा पर **'3 गोमती चक्र'** तथा **'3 हकीक पत्थर'** रख दें, तथा त्रिकोण की दूसरी दोनों भुजाओं पर **'3 गोमती चक्र'** तथा **'3 हकीक पत्थर'** रखें, सबसे नीचे त्रिकोण के नीचे पर **'2 गोमती चक्र'** तथा **'2 हकीक पत्थर'** रखें, इस प्रकार प्रत्येक भुजा पर तीन-तीन बिन्दु हो जायेंगे, त्रिकोण के मुंह के पास दो-दो गोमती चक्र तथा उस पर दो हकीक पत्थर रखें, ये दोनों यमराज के द्वारपाल हैं, त्रिकोण के मध्य में एक ऋतुफल रखें।
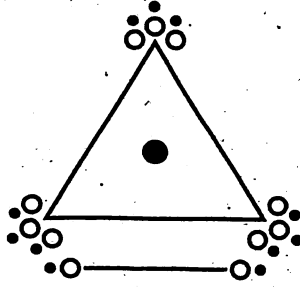
इस साधना को रात्रि को ही सम्पन्न करना आवश्यक है, साधना के समय तेल का दीपक तथा धूप अवश्य जलायें, उपरोक्त तिथि को अथवा किसी भी रविवार को साधना प्रारम्भ करने से पहले संक्षिप्त रूप से गुरु पूजन करें, और उसके पश्चात् साधना सामग्री ऊपर दिये गये विवरण के अनुसार रखकर धर्मराज यमराज साधना प्रारम्भ करें, साधना प्रारम्भ करते समय निम्न लिखित मंत्र पढ़कर यमराज का ध्यान करें, यह साधना का संकल्प है -

मम सकलापदां विनाशनाय सर्वरोगाणां प्रशमनाय श्री धर्मराज मन्त्रजपऽहंकरिष्ये।

इसके पश्चात् इस लेख में दिये गये ध्यान मंत्र का जप 11 बार करें और यदि संस्कृत में जप संभव न हो सके तो उसके हिन्दी अनुवाद का जप करें, प्रत्येक बार मंत्र जप के साथ ही एक गोमती चक्र पर अपने हाथ रखें, इस प्रकार सामने बाजोट पर बनाये गये प्रत्येक बिन्दु पर एक-एक बार हाथ रखकर ध्यान आवश्यक है।

प्रत्येक बार ध्यान मंत्र का जप करते हुए मानसिक रूप से संकल्प आवश्यक है और जिस प्रकार की बाधाओं के निराकरण हेतु ये साधना की जा रही है, उन विशेष बाधाओं का नाम लेकर **'मेरा कार्य सफल करो'** यह कहना आवश्यक है। इसके पश्चात् **'काली हकीक माला'** से निम्न मंत्र की 11 माला जप वहीं आसन पर बैठ कर करें।

मंत्र

॥ॐ ह्रीं क्रों आं वैवस्वताय धर्मराजाय भक्तानुग्रहकृते नमः॥

इस मंत्र का जप नियमित रूप से ही किया जा सकता है, सात दिन नियमित रूप से इस मंत्र का जप करने से परिणाम सामने दिखाई देते हैं।

मंत्र समाप्ति के पश्चात् त्रिभुज के बीच में रखे हुए तरबूज को काटें, और उसमें से कुछ हिस्सा धर्मराज को अर्पित करें, यह बलि विधान है, शेष तरबूज उसी स्थान पर बैठे स्वयं ग्रहण करें।

साधना की पूर्णता के पश्चात सब सामग्री तथा वस्त्र किसी पीपल के वृक्ष अथवा नदी में अर्पित कर दें।

उड्डीस तंत्र में लिखा है कि -

॥मृत्योर्मा नित्यं यः करोति दिने दिने तस्य रोगाः प्रणश्यन्ति दीर्घायुश्च प्रजायते॥

अर्थात् जो व्यक्ति प्रति दिन धर्मराज यमराज मंत्र का जप करता है, उसके सभी रोग नष्ट हो जाते हैं, और वह दीर्घायु तथा समस्त सुखों के साथ प्राप्त करता है, धर्मराज यमराज सूर्य के पुत्र हैं, तथा शुक्र के भ्राता हैं, शुक्र मनुष्य के जीवन में ऐश्वर्य, भोग, सांसारिक सुख एवं कामनाएं देने वाला ग्रह है अतः धर्मराज की पूजा करने से शुक्र पूजा का लाभ भी प्राप्त होता है, यह भी निश्चित है, कि जब दुःखों का व बाधाओं का अन्त होता है, तभी सुखों का प्रारम्भ होता है, बाधाओं के रहते, सुखों का पूर्ण आनन्द लिया ही नहीं जा सकता है।

वर्तमान युग में समय, देश, काल को देखते हुए यह मंत्र विधान तथा पूजा अत्यन्त ही आवश्यक एवं लाभकारी है, प्रत्येक साधक को अपने कार्यों में अनुकूलता पूर्ण रूप से प्राप्त करने हेतु यह साधना अवश्य सम्पन्न करनी चाहिए यदि संभव हो सके तो नियमित रूप से सोते समय यम मंत्र का जप अवश्य करें।

साधना सामग्री - 400/-

त्रिशक्ति स्तोत्र

ब्रह्माण्ड की तीन आदि शक्तियां, जिन्हें महालक्ष्मी –महासरस्वती और महाकाली कहा गया है, उन तीनों के समन्वय से ही जीवन श्रेष्ठ बनता है। ये तीनों शक्तियों इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति और कर्म शक्ति का स्वरुप है। इन तीनों का बीज मंत्र 'श्रीं– ह्रीं – क्लीं' यह अपने आप में महान मंत्र है। इस स्तोत्र में उन बीज मंत्रों की व्याख्या के साथ इन तीनों शक्तियों की प्रार्थना की गई है। साधक यह संकल्प अवश्य लें कि वे जीवन में तीनों शक्तियों से युक्त होते हुए धर्म, अर्थ और काम में पूर्णता प्राप्त करें, जिससे उन्हें जीवन का पूर्ण भाव, परमभाव प्राप्त हो सके। मूलतः यह स्तोत्र संन्यासियों को छोड़कर सबके लिए है। बालकों के लिए यह सरस्वती स्तोत्र है, तंत्र साधना वाले के लिए यह महाकाली स्तोत्र है, वहीं सामान्य गृहस्थ के लिए यह लक्ष्मी स्तोत्र है।

वराभीति ह हस्तं द्वि बाहुं प्रसन्नं, शिवं सु प्रसन्नं स्व ह शक्त्योपविष्टम्।
प्रसन्नास्य बिम्बं प्रकाश स्वरुपं, शिरः पद्म मध्ये गुरुं भावयामि॥१

वकं वह्नि संस्थं त्रि मूर्त्या प्रजुष्टं, शशाङ्केन युक्तं तवाद्यं स्व ह बीजम्।
सुवर्ण प्रभं ये जपन्ति त्रि शक्ते, श्रियं सौभगत्वं लभन्ते [illegible]॥२

नभो वायु मित्रं ततो वाम नेत्रं, सुधा ह धाम बिम्बं नियोज्यैक वक्त्रम्।
द्वितीय स्व बीजं सुर श्रेणि वन्द्यं, त्वदीयं विभाव्य श्रियं प्राप्नुवन्ति॥३

विरिञ्चं क्षितिस्थं ततो वामहनेत्रं, विधुं नाद युक्तं दिनेशाय बीजम्।
विभाव्यैव सम्मोहयन्ति त्रिलोकीं, जपादीश्वरत्वं लभन्ते नरेन्द्राः॥४

त्रयं सन्नियोज्य स्मरारि प्रिये ये, त्रि सन्ध्यं जपन्ति त्वदङ्गं विभाव्य।
न तेषां रिपुर्वाक् प्रयोगं करोति, स्मरास्तेऽङ्गनानां गृहे श्रीस्तु तेषाम्॥५

मुखे भारती यस्य ह पद्य प्रबन्धा, न हिंसन्ति हिंस्राः सुरास्तान्नमन्ति॥
तदंघ्रि द्वयं भूषणं मूर्ध्नि राज्ञाम्, करे सिद्धयो दुर्[illegible]॥६

वने पारिजात द्रुमाणां पृथिव्याम्, सुवर्ण प्रभायां मणि व्यूह गेहे।
स्मरेद् वेदिकाया लसद् रत्न सिंहासने, पद्ममष्टास्मं संनिविष्टम्॥७

कर्णिकायां पर योनि युग्मम्, तदन्तर्गतामुष्ण हेम प्रभां याम्।
कुण्डलामिन्दु वक्त्रां त्रिनेत्राम्, स्फुरत् कम्बु कण्ठां सु वक्षोज नम्राम्॥८

कज्जोह्लसद् बाहु वृन्दैः, सु पद्म द्वयं पाशकं कार्मुकं च।
बाणान् दधानाम्, बृहद् रत्न भूषां सु मध्यां सुकाञ्चीम्॥९

कोटि सम्य स्फुरत् पाद पद्माम्, किरीटाग्रलङ्कार युक्तां प्रसन्नाम्।
चामरे दर्पणं तत् करण्डम्, समुद्गं सु कर्पूर पूर्णं धृताभिः॥१०

जगत् ताप हर्त्रीम्, जगत् क्षोभ कर्त्रीं जगल्लोक धात्रीम्।
क्षरार्द्ध वर्णाम्, त्रि बिन्दु स्वरुपां त्रि शक्तिं भजामि॥११

यित्वा तवेतत् स्वरुपाम्, पुरो यन्त्र मध्ये समावाह्य भक्त्या।
पूनादिभिः पूजयित्वा, चतुर्वर्ग सिद्धिं लभेत् पामरोऽपि॥१२

र्वतीमीश्वरं च, रति काम देवं षडङ्गेन सार्द्धम्।
नुत्या भवानीम्, क्रमात् पूजयित्वा नरेन्द्रो भवेत् सः॥१३

श्री च पार्श्व द्वये संविभाव्य, प्रपूज्या महिष्यस्ततो लोक पालाः।
स्त्राणि तद् दलाग्रे प्रपूज्य, भवस्याष्ट सिद्धिं लभेन् मानवोऽपि॥१४

धात्री जगत्सृष्टि कर्त्री, त्वमापोऽपि विष्णुर्जगत्पालिका च।
रुद्री जगत् क्षोभ कर्त्री, त्वमैश्वर्य युक्ता जगद् वायु रुपा॥१५

त्वा शिवे ! शम्भु कान्ते ! शरण्ये, जगद् ब्रह्म रन्ध्रे सदारं भ्रमीषि।
धार गम्या भवस्यैक पुण्या, त्वमाकाश कल्पा भवानि! प्रसीद ॥१६

मध्ये निपात्यैव सर्वम्, मुनीनां च गर्व सु खर्व करोषि।
जाले चिदानन्द रुपे, प्रकाश स्वरुपे भवानि! प्रसीद ॥१७

त्वा भवत्या जनो मन्द चेता, जपन्नेक लक्षं कवित्वं करोति।
स्य स्वरुपं त्वदीयं त्रि लोक्याम्, लभेद् दुर्लभत्वं भवानि! प्रसीद ॥१८

कि त्वमाद्येय रुपा, जगद् व्यापिका त्वं जगद् व्याप्य रुपा।
गुणातीत रुपा, त्वमेवासि भावो भवानि! प्रसीद ॥१९

णुस्त्वं विभुस्त्वं त्वमेवासि विश्वं, स्तुतिः का भवत्या जगत्यां विभाति।
त्वदीया गुणा मां दिशन्ति, स्तुतिं कर्तुमेवं भवानि! प्रसीद ॥२०

॥ फलश्रुति ॥

गूं नरा ये, पठन्ति त्रि सन्ध्यं कुलान्ते जपित्वा।
लोकी जनानाम्, लभन्ते स्वरुपं भवानि! प्रसीद ॥२१

त्रि-शक्ति स्तोत्र (हिन्दी अर्थ)

सर्व प्रथम मैं अपने सद्गुरुदेव का ध्यान अपने शिर के सहस्त्रार कमल में करता हूं, जो द्विभुज हैं, अपने दोनों हाथों में वर और अभय मुद्रा धारण किए हुए हैं। अपनी पूर्ण शक्ति सहित कल्याणकारी, सुप्रसन्नभाव में विराजमान हैं। तेजोमय मुख मंडल युक्त सद्गुरुदेव को मैं नमन करता हूं।१।

हे त्रि–शक्ति–रूपीणी त्रिपुटे! 'वक' अर्थात् 'श' और 'वह्नि' अर्थात् 'र' में 'त्रिमूर्ति' अर्थात् 'ई' का योग कर उसमें 'शशांक' अर्थात् चंद्र बिन्दु का योग करने से जो बीज मंत्र बनता है वह 'श्रीं' है, मैं स्वर्णकान्तिवाले ऐसे बीज मंत्र का जप करता हूं। उससे मुझे जीवन में पूर्ण लक्ष्मी और सौभाग्य प्राप्त हो। २।

'नभ' अर्थात् 'ह', 'वायुमित्र' (अग्नि) अर्थात् 'र' 'वामनेत्रा' अर्थात् 'ई', 'चन्द्र' अर्थात् (ँ) इन वर्णो को एकत्र मिलाने से आपका दूसरा बीज 'ह्रीं' बनता है। देवताओं द्वारा पूजित इस 'ह्रीं' बीज मंत्र को मैं जप करता हूं तो मुझे जीवन में पूर्ण ज्ञान प्राप्ति हो।३।

'विरिञ्चि' – 'क', 'क्षिति' – 'ल' 'वामनेत्र' – 'ई', बिन्दु (ं)– इन वर्णो को मिलाने से आपका तीसरा बीज 'क्लीं' होता है। सूर्य के समान इस तेजस्वी बीज मंत्र का जप कर साक्षात् महाकाली सिद्ध होती है। मैं इस बीज मंत्र का जप करते हुए जीवन में पूर्ण शक्ति प्राप्त करने हेतु आपका नमन करता हूं।४।

हे महान् देवी! जो व्यक्ति आपके इन तीन बीज मंत्रों का सामूहिक तीन संध्याओं में जप करते हैं, ध्यान करते हैं, इन के समस्त शत्रु वाक् शक्ति से विहीन हो जाते हैं, व्यक्तित्व कामदेव के समान आकर्षक बन जाता है और लक्ष्मी निरन्तर विराजमान रहती है। मैं आपका नमन करता हूं।५।

आपके मंत्र जप के प्रभाव से धाराप्रवाह श्रेष्ठ वाणी निकलने लगती है, हिंसक प्राणी भी उनके प्रति हिंसा भाव नहीं रखते, देव गण सहयोगी होते हैं, राज्य का सौभाग्य प्राप्त होता है, अष्ट सिद्धियां हाथ में रहती हैं, दुष्टग्रह दूर ही रहते हैं। मैं आपके यह शक्तिशाली मंत्र जप करते हुएं नमन करता हूं।६।

पारिजात वृक्षों के वन में स्वर्णमय भूमि के ऊपर एक विविध मणिमंडित गृह में शोभायमान रत्नसिंहासन पर आपका स्थान अष्टदल कमल है। आपको मैं बारम्बार नमन करता हूं।७।

इस अष्टदल कमल की कर्णिका में दो त्रिकोणों के मध्य में तप्तस्वर्ण जैसी कान्तिवाली देवी मूर्ति विराजमान हैं। आपके कानों में कुण्डल हैं। मुखमंडल चन्द्रमा के समान सुन्दर है। आप त्रिपुटा त्रिशक्ति को मैं नमन करता हूं।८।

आपकी सभी भुजाएं रत्न–हीरों अलंकारों से विभूषित हैं। हाथों में दो उत्तम कमल,पाश,धनुष, स्वर्णमय अंकुश और पुष्पबाण धारण किये हुए हैं। आपके उस स्वरूप को मैं नमन करता हूं। आप मेरे जीवन में विराजमान रहें।९।

आपके चरण कमलों में दो नूपुर शोभायमान हैं। मस्तक पर मुकुट धारण किये हुए है। आप की वन्दना के लिए विभिन्न देवियां विद्यमान है। हे! प्रसन्नमुखा त्रिपुटा शक्ति देवी आप मेरे जीवन में विराजमान हों।१०।

आप ही संसार के तीनों भुवनों की सृष्टि करती हैं, उनका संहार करती हैं। तीनों भुवनों को क्षुब्ध करती हैं, और तीनों भुवनों के लोगों का पोषण करती हैं। तथा नाद वर्ण जैसा आप का स्वरुप है। आप त्रि–बिन्दु – स्वरूपिणी हैं। आप त्रि– शक्तिमयी त्रिपुरा देवी की मैं आराधना करता हूं।११।

आप के प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'यंत्र' की, आपके इसी रुप मूर्ति की भावना एकाग्रचित्त में रखकर भक्तिपूर्वक आह्वान और पुष्पो से आपकी पूजा करता हूं। आपकी पूजा द्वारा अधम व्यक्ति भी धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष फल प्राप्त करता है। मैं आपकी पूजा करते हुए वंदना करता हूं।१२।

इस योनि में आकर आपके इस मूल मंत्र का उच्चारण करते हुए जो व्यक्ति छः देवताओं के साथ क्रमशः श्री, श्रीपति, पार्वती, ईश्वर, रति, कामदेव और भवानी की अर्चना करता है वह नर से नरेन्द्र हो

जाता है। मैं भी ऐसी ही कामना करते हुए आपकी पूजा अर्चना करता हूं।१३।

आपके 'यंत्र' के दोनों पार्श्व में स्थित दो निधियों अर्थात् 'शंख निधि' एवं 'पद्मनिधि' की पूजा करता हूं। 'यंत्र' में स्थित लोकपालों का पूजन करता हूं। पद्म के अग्रभाग में आप के अस्त्रों की पूजा करता हूं। ऋषि मुनि कहते हैं कि मनुष्य भी अष्टसिद्धियों को प्राप्त कर लेता है। मैं ऐसी हीं इच्छा रखते हुए आप की पूजा करता हूं।१४।

हे जननी! आप क्षितिस्वरूपमयी ब्रह्मा मूर्ति द्वारा जगत् की सृष्टि करती हैं, जल मयी विष्णु मूर्ति द्वारा जगत की रक्षा करती हैं, अग्नि मयी रुद्र मूर्ति द्वारा जगत् का संहार करती हैं। आप ऐश्वर्य रूपिणी हैं और ब्रह्माण्ड की वायु रूपिणी हैं।१५।

हे शिवे! हे शम्भुस्वरूपमहिषि! आप सबकी रक्षा करनेवाली आद्याशक्ति हैं। आप जगत् के सभी प्राणियों के ब्रह्म रन्ध्र में सदा भ्रमण करती रहती हैं। आप निराधार तेजोमयी मूर्ति में अधिष्ठान करती हैं। हे भवानी! आप गगन रूपिणी होकर भी एकमात्र शिव के पुण्य फल से स्वरूप धारण करती हैं। आप मुझ पर सदैव प्रसन्न हों।१६।

हे देवि भवानी! आप सभी को इस भव सागर में निमग्न कर बड़े से बड़े व्यक्ति का अहंकार भी चूर कर देती हैं। आप चिदानन्दस्वरूपिणी, प्रकाशस्वरूपमयी हैं। मैं अपनी सामान्य बुद्धि से आपको पहचानने में समर्थ नहीं हूं। आप सदैव मुझ पर प्रसन्न हों।१७।

हे भवानी! ऐसा कहते हैं कि मंदबुद्धि वाला व्यक्ति भी आपके मंत्र का एक लाख जप कर कवित्व शक्ति प्राप्त कर लेता है। इस त्रिलोक में जो आपके स्वरूप को जान लेता है, वह दुर्लभ को भी प्राप्त कर लेता हैं। आप मुझ पर प्रसन्न हों।१८।

हे भवानी! यद्यपि आप आधार शक्ति रूपिणी हैं तथापि आधेयस्वरूपिणी भी आप ही हैं। आप जगत् व्यापिनी होकर भी जगत् की व्याप्यस्वरूपिणी भी हैं। आप अभावस्वरूपिणी होकर भी भाव रूपिणी हैं। आप त्रिगुणातीता हैं। आप मुझ पर प्रसन्न हों।१९।

हे देवि! आप सूक्ष्मस्वरूपिणी हैं, फिर आप ही स्थूलस्वरूपिणी विभुस्वरूपमूर्ति भी है। अधिक क्या, आप ही समस्त विश्व हैं। हे भवानि ! इस विश्व में आपकी स्तुति करने कीं शक्ति किसमें हैं? केवल आपकी गुण राशि मुझे आपका स्तवन करने की प्रेरणा देती है। मैं अक्षम होने पर भी आपकी स्तुति करता हूं। आप मुझ पर सदैव प्रसन्न हों।२०।

।।फलश्रुति ।।

हे भवानि! जो तीनों सन्ध्या काल में जप के अन्त में आपके इस अति गोप्य स्तवन का पाठ करता हैं, उसके लिए इस त्रिभुवन में कोई भी कर्म असाध्य नहीं रहता। वह सभी कार्य करने में समर्थ होता है। आपका वास्तविक स्वरूप उसे ज्ञात हो जाता है। आप मुझ पर सदैव प्रसन्न हों।२१।

वास्तव में यह त्रिशक्ति त्रिपुटा स्तोत्र साधक के समस्त चक्रों को जाग्रत कर उसे परमानन्द प्रदान करता है, केवल इस स्तवन का पाठ ही विशेष कल्याणकारी है और यदि अपने घर में मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'त्रिशक्ति यंत्र' का नित्य पूजन कर इस स्तोत्र का संस्कृत अथवा हिन्दी में ही पाठ कर लिया जाए तो अत्यंत शुभकारी रहता है। त्रिशक्ति यंत्र के त्रिकोण में बिन्दु रूपेण देवी विद्यमान हैं और साथ में 'श्री, श्रीपति, पार्वती, ईश्वर, रति-कामदेव और भवानी' विराजमान हैं। दो पार्श्वों में 'शंख निधि' और 'पद्म निधि' विराजमान हैं। यंत्र में आठ दिशाओं में आठ लोकपाल आपके द्वारपाल स्वरूप हैं, ऐसा महान यंत्र जिसके घर में स्थापित होता है उस घर में दुःख, दारिद्र्य, रोग-शोक सदैव के लिए चले ही जाते है, नित्य गुरु पूजन के साथ त्रिशक्ति 'श्रीं ह्रीं क्लीं' का पूजन भी अवश्य करें।
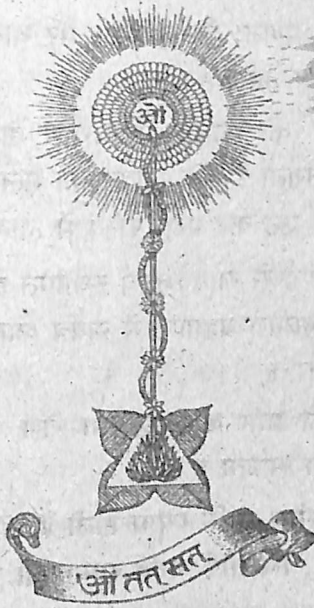
हृदय मानव शरीर का अद्भुत अंग है उस प्रकार आध्यात्मिक यात्रा क्रम में भी हृदय का प्रमुख स्थान है इसीलिए इस चक्र को अनाहत चक्र कहा गया है। अनाहत का तात्पर्य है जहां पूर्ण शान्ति हो, किसी प्रकार का कोलाहल विघ्न न हो, जब हृदय पक्ष जाग्रत होता है तो मनुष्य के हृदय और उस स्थान पर स्थापित मन में शान्ति, संतोष, शील की भावभूमि तीव्र होती है। अनाहत चक्र जाग्रत साधक ही गुरु से पूर्ण रुप से जुड़ पाता है क्योंकि गुरु का निवास भी शिष्य के हृदय में माना गया है।

हृदय से ही शरीर की सारी धमनियां-शिराएं निकलती हैं तो हृदय में ही जाकर पूर्ण होती हैं। इस प्रकार अनाहत चक्र का जाग्रत होना शरीर के प्रत्येक बिन्दु, रोम, प्रतिरोम के जागरण का प्रारम्भ है।

हृदय का इस मानव शरीर में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है। कहने को तो यह सिर्फ कुछ मांस-पेशियों से निर्मित एक अवयव मात्र है, परन्तु इसके साथ अनेक किंवदन्तियां जुड़ी हैं। मानव की समस्त भावनाओं का केन्द्र हृदय ही होता है, इसी से भावनाओं की उत्पत्ति होती है, क्योंकि मन का निवास हृदय में ही होता है।

हृदय के पास ही स्थित होता है **'अनाहत चक्र'**। इस चक्र का पूर्णतः चैतन्य होना वास्तव में बुद्धि पक्ष को परे हटा कर हृदय पक्ष को जाग्रत करना ही है। हृदय पक्ष के जाग्रत होने की इस क्रिया में व्यक्ति भावना प्रधान तो बन ही जाता है, साथ ही साथ उसे अपने मन पर भी नियन्त्रण प्राप्त हो जाता है। मन पर नियन्त्रण प्राप्त होने की यह क्रिया अध्यात्म में एक बहुत बड़ी विशिष्टता व उपलब्धि है। जिसे अपने मन पर नियन्त्रण प्राप्त हो गया, उसके लिए फिर अध्यात्म के सारे मार्ग स्वतः ही खुल जाते हैं और वह संयम व दृढ़ता के साथ उन रास्तों पर बढ़ता हुआ सहज ही पूर्णता, अद्वितीयता और श्रेष्ठता को प्राप्त कर लेने की क्रिया जान लेता है, क्योंकि उपनिषद में भी कहा गया है -

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयो।

अर्थात् 'मन ही मनुष्यों में बन्धन व मोक्ष का कारण है।' वास्तव में ही जब मन व्यक्ति के नियन्त्रण में नहीं होता, तब वह नाना प्रकार के सांसारिक बन्धनों में बंधा हुआ, अष्ट पाशों से आबद्ध पशु तुल्य ही होता है; परन्तु जब मन उसके नियन्त्रण में आ जाता है, तो फिर एक बार में ही उसके सारे

बन्धन समाप्त हो जाते हैं, उसे जीवन का अर्थ समझ में आने लगता है और वह साधना पथ का अवलम्बन लेता हुआ श्रेष्ठता की ओर गतिशील हो जाता है।

चिकित्सा विज्ञान के अनुसार व्यक्ति तभी तक जीवित है, जब तक कि उसका हृदय कार्यशील है, जब हृदय कार्य करना बंद कर देता है, तो उसके कुछ ही क्षणों के बाद व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त हो जाता है... और यह क्रिया सम्भव हो सकती है अनाहत चक्र को चैतन्यता प्रदान करने की क्रिया द्वारा।

अनाहत चक्र भारतीय वैदिक सिद्धान्त के पंच तत्त्वों में से वायु तत्त्व से आपूरित द्वादश दल युक्त कमल के समान होता है। इसका रंग लाल है, जो कि इस चक्र के पूर्णतः चैतन्य होने के पश्चात् प्रकट होने वाली रश्मियों का रंग है। इस चक्र के देवता **'ईशान रुद्र'** हैं और उनकी शक्ति **'काकिनी'** है।

यह शक्ति, जिसका कोमल शरीर बिजली की एक करोड़ कौंधों के समान सुन्दर है, त्रिकोण के रूप में इस कमल के भीतर विराजमान है। इस त्रिकोण के भीतर बाण नाम का स्वर्ग के समान चमकता हुआ शिवलिंग है जिसके सिरे पर मणि के छिद्र के समान अत्यन्त सूक्ष्म छिद्र है। यहीं पर लक्ष्मी का प्रकाशमान आवास है।

जो साधक इस हृदयकमल पर ध्यान जमाता है वह वाणी का स्वामी होकर ईश्वर के समान तीनों लोकों की रक्षा और संहार करने में समर्थ हो जाता है। यह कल्पवृक्ष के समान हृत्कमल शर्व (महादेव) का आवास स्थल है। और उस हंस (जीवात्मा) द्वारा अलंकृत है जो निर्वात स्थान में रक्खे हुए दीपक की लौ के समान स्थिर है। उसके मध्य भाग के चारों ओर सौर-मण्डल द्वारा प्रकाशित बड़े आकर्षक ज्योतिस्तन्तु हैं।

अनाहत चक्र के द्वारा निम्न भौतिक, आध्यात्मिक और चिकित्सकीय उपलब्धियां प्राप्त की जा सकती हैं -

1. अनाहत चक्र के पूर्णतः चैतन्य होने पर वायु तत्त्व पर नियन्त्रण स्थापित होता है।
2. 'आत्म जागरण' की क्रिया का प्रारम्भ होने पर यह अहसास होने लगता है, कि जीवन का मूल लक्ष्य देह की सीमा से परे उठ कर परम सत्य में लीन होना है।
3. आत्मा का ब्रह्माण्ड से सामञ्जस्य स्थापित होने लगता है और उसका संयोग ब्रह्माण्ड में सर्वत्र व्याप्त अखण्ड शक्ति से होने लगता है।
4. **इस अवस्था को प्राप्त कर अस्थमा रोग को पूर्णतः समाप्त किया जा सकता है।**
5. **हृदय में एक असीम शांति व्याप्त होती है और समस्त प्रकार के तनाव, चिन्ताएं आदि समाप्त हो जाते हैं।**
6. इसके द्वारा भूत काल का ज्ञान प्राप्त कर किसी का भी भूतकाल आंखों के सामने साकार किया जा सकता है।
7. वर्तमान काल के ज्ञान की क्षमता भी अनाहत चक्र को चैतन्य कर प्राप्त की जा सकती है।
8. इस चक्र की अन्य उपलब्धि है - भविष्य ज्ञान अर्थात् भविष्य में झांक कर किसी भी घटना क्रम को जान कर उसकी पूर्व घोषणा की जा सकती है।
9. इस चक्र को पूर्ण रूप से चैतन्यता प्रदान कर किसी भी व्यक्ति के मस्तिष्क में उठने वाले विचारों को जाना जा सकता है।
10. किसी भी व्यक्ति के विचारों में हस्तक्षेप कर उसमें अपनी इच्छा के अनुकूल परिवर्तन लाया जा सकता है।
11. इस चक्र के पूर्णतः चैतन्य होने पर 'ब्रह्माण्ड भेदन' की क्षमता प्राप्त होती है तथा ब्रह्माण्ड के समस्त रहस्यों से परिचय प्राप्त होने लगता है।
12. **इसके माध्यम से शरीर का 'कायाकल्प' किया जा सकता है और वृद्धावस्था को यौवनावस्था में परिवर्तित किया जा सकता है, साथ ही शारीरिक विकृतियों को भी दूर किया जा सकता है।**
13. अपने व्यक्तित्व में एक अद्भुत सम्मोहन शक्ति का समावेश किया जा सकता है, जिससे सभी उसकी ओर आकर्षित होने लगते हैं। अनाहत चक्र पर सम्मोहन की पहली अवस्था प्राप्त होती है, जिसकी

पूर्णता विशुद्ध चक्र के पूर्णतः चैतन्य होने पर सम्भव होती है।

14. मणिपुर चक्र से प्रारम्भ होने वाली ध्यान की अवस्था अनाहत चक्र पर समाधि की अवस्था में परिवर्तित होने लगती है और समाधि की प्राथमिक अवस्था की प्राप्ति होती है।
15. इस चक्र को पूर्ण चैतन्यता व स्पन्दन प्रदान कर मन पर नियन्त्रण स्थापित किया जा सकता है।
16. **यदि उच्च रक्तचाप या निम्न रक्तचाप की शिकायत हो, तो उसे दूर किया जा सकता है।**
17. **यदि हृदय की धड़कन असामान्य या अनियन्त्रित हो, तो यह प्रयोग उचित उपादेय है।**
18. **यदि हृदय के आकार में वृद्धि हो गई हो, तो अनाहत चक्र के स्पन्दन में वृद्धि द्वारा उसे पुनः सामान्य आकार प्रदान किया जा सकता है।**
19. **यदि हृदय की मांसपेशियां संकुचित या कठोर हो गई हों, तो भी इस प्रयोग को सम्पन्न करना चाहिए।**
20. **यदि हृदय में कोई अवरोध हो या धमनियों में कोई रुकावट उत्पन्न हो गई हो, तो उसे दूर किया जा सकता है।**
21. **जिन व्यक्तियों को हृदय रोग हो या दिल का दौरा पड़ चुका है, उन्हें तो इस साधना को अवश्य ही सम्पन्न कर लेना चाहिए।**

साधना विधान

इस प्रयोग को सम्पन्न करने के लिए 'अनाहत यंत्र' की आवश्यकता होती है, जो कि प्राण प्रतिष्ठित एवं मंत्र सिद्ध हो।

किसी भी गुरुवार को प्रातः काल ब्रह्म मुहूर्त में स्नानादि नित्य कर्म से निवृत्त होकर लाल रंग के स्वच्छ वस्त्र धारण कर लाल रंग के आसन पर बैठ जायें, दिशा उत्तर या पूर्व की ओर हो। सामने बाजोट पर लाल रंग का वस्त्र बिछा कर उस पर **'अनाहत यंत्र'** की स्थापना करें।

सबसे पहले अपने गुरुदेव का ध्यान कर उनका पूजन सम्पन्न करें -

ध्यान

पूर्णो स वातं गुरु वै प्रणम्यम्,
सदाहं भजामि भवदेव नित्यं।

अनाहत चक्र

हृदय के सामने मेरुदण्ड के भीतर सुषुम्ना में १२ दलों वाले कमल के समान, बीज यं, शक्ति काकिनी और अधिष्ठातृ देव ईश्वर हैं। इसमें एक लिङ्ग कहते हैं। इस बाणलिङ्ग के ऊपर एक अत्यन्त सूक्ष्म छिद्र है जिस पर हृत्पुण्डरीक कमल है। इसी पर योगी अपने उपास्य देवता का ध्यान किया करते हैं। यह चक्र समान प्राण का संचालन करता है।

एको हि रूपं ममतां प्रणेशं;
गुरुत्वं शरण्यं गुरुत्वं प्रणम्यम्॥

गुरु पूजन के उपरान्त अनाहत यंत्र का भी कुंकुम, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप तथा नैवेद्य चढ़ाकर पूजन करने के पश्चात् उसे ध्यान पूर्वक देखते हुए पूर्ण एकाग्र होकर निम्न मंत्र का 30 मिनट तक जप करें -

मंत्र

॥ॐ यं यं अनाहत चक्र जाग्रय स्फोटय यं यं ॐ॥

इस प्रयोग को तीन दिन तक नित्य सम्पन्न करें। ऐसा करने पर यंत्र में संग्रहीत शक्तियों का स्थापन शरीर स्थित अनाहत चक्र में हो जाता है, फलस्वरूप अनाहत चक्र चैतन्य हो जाता है। साधना सम्पन्न होने के पश्चात् यंत्र को नदी में विसर्जित कर दें।

अब उपरोक्त 21 बिन्दुओं में से आप जो भी उपलब्धि प्राप्त करना चाहते हैं या जिस इच्छा को पूर्णता देना चाहते हैं, उसके लिए गुरुवार के दिन प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में दैनिक नित्य कर्म के पश्चात् स्वच्छ लाल रंग के वस्त्र धारण कर लाल आसन पर बैठ जायें तथा गुरु पूजन सम्पन्न कर मनोवाञ्छित संकल्प ले कर ईशान रुद्र और उनकी शक्ति काकिनी से उस इच्छा की पूर्ति की प्रार्थना करते हुए अनाहत चक्र पर अपना ध्यान केन्द्रित कर उपरोक्त मंत्र का 10 मिनट तक जप करें। ऐसा करने पर अनाहत चक्र में निहित ऊर्जा स्पन्दित होकर आपको शक्ति प्रदान करेगी और इस प्रकार आपकी इच्छा पूर्ण हो सकेगी।

साधना सामग्री - 240/-

हस्त रेखा विज्ञान

क्या हाथ की रेखाएं कुछ कहती हैं?
स्वयं अपना हाथ देखें और जाने समझे

भाग्य रेखा

संसार में किन्हीं भी दों मनुष्यों के भाग्य एक-से नहीं होते। इसी प्रकार संसार में किन्हीं दो व्यक्तियों की हथेलियों में एक-सी रेखाएं नहीं होती। हथेली में मुख्यत: तो चार या पांच रेखाएं दिखाई देती हैं, परन्तु सूक्ष्मता से देखें तो पता चलेगा कि हथेली में छोटी-छोटी सैकड़ों रेखाएं हैं, और उन सब रेखाओं का एक दूसरे से सम्बन्ध है। दिन में ये रेखाएं धूमिल सी दिखाई देती हैं, पर यदि प्रात:काल हथेली को देखें तो हमें छोटी-छोटी सूक्ष्म रेखाएं भी स्पष्ट दिखाई देंगी। इसीलिए प्रात:काल का समय हस्तरेखा देखने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त समय है।

भाग्य रेखा को अंग्रेजी में फेट लाइन कहते हैं। हिन्दी में इसे भाग्य रेखा, ऊर्ध्व रेखा अथवा प्रारब्ध रेखा भी कहते हैं।

यह रेखा सभी व्यक्तियों के हाथों में दिखाई नहीं देती। साथ ही इस रेखा के उद्‌गम भी कई होते हैं, परन्तु एक बात भली प्रकार से समझ लेनी चाहिए, कि **जिस रेखा की समाप्ति शनि पर्वत पर होती है, वही रेखा भाग्य रेखा कहला सकती है। जब तक यह शनि पर्वत पर नहीं पहुंच जाती, तब तक इस रेखा को भाग्य रेखा कहना उचित नहीं।**

कई हाथों में यह रेखा बुध पर्वत पर भी पहुंच जाती है, परन्तु वास्तव में यह रेखा भाग्य रेखा न होकर कोई अन्य रेखा ही होती है। इस रेखा का विकास हथेली में नीचे से ऊपर की ओर होता है। कुछ हाथों में यह रेखा शुक्र पर्वत से प्रारम्भ होती है, तो कुछ हाथों यह रेखा मणिबन्ध से प्रारंभ होकर ऊपर की ओर उठती हुई दिखाई देती है। कुछ हाथों में यह रेखा सूर्य पर्वत के पास से भी निकल कर शनि पर्वत पर पहुंच जाती है। **अत: जैसा कि ऊपर कहा है, कि इस रेखा का उद्‌गम अलग-अलग होता है, अत: इसकी समाप्ति के स्थान से इसके उद्‌गम का पता लगाना चाहिए।**

यद्यपि मानव के जीवन में सब कुछ होता है, पर यदि उसका भाग्य साथ नहीं देता है, तो एक प्रकार से उसका पूरा जीवन व्यर्थ कहा जाता है। चाहे व्यक्ति के पास भव्य व्यक्तित्व हो, चाहे हृदय से वह कितना ही उदार हो, चाहे स्वास्थ्य की दृष्टि से उसमें सभी प्रकार की श्रेष्ठता हो, परन्तु यदि उसका भाग्य उसका साथ नहीं देता है, तो उसका जीवन एक प्रकार से निष्क्रिय हो जाता है। कहा जाता है कि यदि व्यक्ति का भाग्य साथ देता तो और यदि वह मिट्टी भी छू ले, तो वह सोना बन जाती है। इसके विपरीत यदि भाग्य साथ नहीं देता, तो सोने को भी स्पर्श करने पर वह मिट्टी के समान हो जाता है।

वस्तुतः जीवन में भाग्य का महत्व सबसे अधिक माना गया है। इसीलिए हाथ में भी भाग्य रेखा या प्रारब्ध रेखा को महत्व दिया जाता है। यह रेखा जितनी अधिक गहरी, स्पष्ट और निर्दोष होती है, उसका भाग्य उतना ही ज्यादा श्रेष्ठ कहा जाता है। यदि व्यक्ति के हाथ में रेखाएं दूषित एवं कमजोर हों, परन्तु यदि उसकी भाग्य रेखा अपने आप में अत्यन्त श्रेष्ठ हो, तो यह बात निश्चित है, कि उसके ये सारे दुर्गुण छिप जाते हैं, और वह जीवन में पूर्ण प्रगति करने में समर्थ हो पाता है। अतः हस्त रेखा विशेषज्ञ को चाहिए, कि वे हथेली का अध्ययन करते समय भाग्य रेखा का सावधानी से अध्ययन करें।

सभी हाथों में यह भाग्य रेखा नहीं पाई जाती है और मेरा तो यह अनुभव है, कि लगभग 50 प्रतिशत हाथों में भाग्य रेखा का अभाव ही होता है। **परन्तु मेरे कथन का यह अभिप्राय नहीं लिया जाना चाहिए, कि जिसके हाथ में भाग्य रेखा नहीं होती, वह व्यक्ति भाग्यहीन होता है। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि भाग्य रेखा के अभाव में प्रयत्न करने पर भी व्यक्ति को पूर्ण सफलता नहीं मिल पाती। भाग्य रेखा होने से व्यक्ति थोड़ी सी प्रतिभा और परिश्रम से ही कार्य को अपने**

अनुकूल बना लेता है।

इस रेखा को शनि रेखा भी कहा जाता है, क्योंकि इस रेखा की समाप्ति शनि पर्वत पर होती है। यद्यपि यह रेखा व्यक्ति के हाथों में अलग-अलग स्थानों से प्रारम्भ होती है, तथापि इस रेखा की समाप्ति शनि पर्वत पर ही होती देखी गई है। इसीलिए भी इसको शनि रेखा के नाम से पुकारते हैं।

जिन हाथों में यह रेखा कमजोर होती है या नहीं होती है, उन व्यक्तियों की उन्नति तो होती है, परन्तु उनकी उन्नति में भाइयों, सम्बन्धियों या रिश्तेदारों का किसी प्रकार का सहयोग उसे उसके जीवन में नहीं मिलता। इस प्रकार से वह जो भी प्रगति करता है, स्वयं के प्रयत्नों से ही कर पाता है। ऐसे लोगों को न तो समाज से किसी प्रकार का कोई सहयोग मिलता है और न परिवार से सहयोग मिलता है। जिन लोगों के हाथों में शनि रेखा का अभाव हो, तो यह समझ लेना चाहिए कि इसके जीवन में जो भी दिखाई दे रहा है वह सब इसके प्रयत्नों से ही संभव हुआ है।

यह रेखा नीचे से ऊपर की ओर बढ़ती है, जैसा कि मैंने स्पष्ट किया है कि हथेली में इस रेखा के उद्गम स्थान अलग-अलग होते हैं, परन्तु इस रेखा की समाप्ति शनि पर्वत पर ही जाकर होती है। इस रेखा के माध्यम से मानव की इच्छाओं, भावनाओं उसका बौद्धिक एवं मानसिक स्तर तथा उसकी क्षमताओं का अनुमान हो जाता है। भाग्य रेखा के माध्यम से यह जाना जा सकता है, कि यह व्यक्ति जीवन में कितनी प्रगति करेगा, इसके जीवन में आर्थिक दृष्टि से क्या स्थिति होगी? क्या इसको जीवन में धन, मान, पद, प्रतिष्ठा आदि मिल सकेंगे? क्या इसका जीवन परेशानियों से भरा हुआ है? क्या वह व्यक्ति अपने जीवन में इन बाधाओं को पार कर सफलता प्राप्त कर सकता है? ये सारे तथ्य भाग्य रेखा के माध्यम से ही जाने जा सकते हैं।

मध्यमा उंगली (बीच वाली) के मूल में शनि पर्वत होता है। यदि कोई रेखा कहीं से भी प्रारम्भ होकर बिना किसी अन्य रेखा का सहारा लिए शनि पर्वत तक पहुंच जाती है, तो निःस्सन्देह ऐसी रेखा प्रबल भाग्य वर्द्धक एवं श्रेष्ठ मानी जाती है, परन्तु यदि भाग्य रेखा शनि पर्वत को पार कर मध्यम उंगली के पौर तक पहुंचने की कोशिश करती है, तो ऐसी रेखा दूषित कहलाती है।

पाठकों को **एक बात ध्यान में रखनी चाहिए कि जो भी रेखा शनि पर्वत को स्पर्श करती है, वास्तव में वही रेखा भाग्य रेखा कहलाने की अधिकारी है। इसका उद्गम हथेली में किसी भी स्थान से हो सकता है।** यदि किसी के हाथ में एक से अधिक भाग्य रेखाएं हों और दोनों की समाप्ति शनि पर्वत पर होती हो, तो उन दोनों रेखाओं का मिला-जुला फल उस व्यक्ति को जीवन में देखने को मिलेगा।

भाग्य रेखा क्या कहती है?

1. यदि भाग्य रेखा सीधी तथा स्पष्ट हो और शनि पर्वत से होती हुई सूर्य पर्वत की ओर जा रही हो, तो वह व्यक्ति कला के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करता है।
2. यदि यह रेखा लाल रंग की हो तथा मध्यमा उंगली के प्रथम पोर तक पहुंच जाए, तो उस व्यक्ति की दुर्घटना में मृत्यु होती है।
3. यदि यह रेखा हृदय रेखा को काटते समय जंजीर के समान बन जाए तो उसे प्रेम के क्षेत्र में बदनामी का सामना करना पड़ता है।
4. यदि हृदय रेखा हथेली के मध्य में फीकी या पतली अथवा अस्पष्ट हो, तो व्यक्ति का यौवनकाल दुःखमय होता है।
5. यदि व्यक्ति के हाथ में भाग्य रेखा के साथ-साथ सहायक रेखाएं भी हों तो उसका जीवन अत्यन्त सम्मानित होता है।
6. यदि भाग्य रेखा जंजीरदार अथवा लहरदार हो, तो जीवन में उसे बहुत अधिक दुःख भोगना पड़ता है।
7. जिस व्यक्ति के हाथ में भाग्य रेखा नहीं होती, उसका जीवन अत्यन्त साधारण और नगण्य सा होता है।
8. यदि भाग्य रेखा प्रारम्भ से ही टेढ़ी-मेढ़ी हो, तो उसका बचपन अत्यन्त कष्टदायक होता है।
9. भाग्य रेखा अपने उद्गम स्थल से प्रारम्भ होकर जिस पर्वत की ओर भी मुड़ती है या शनि पर्वत से उसमें से कोई शाखा निकलकर जिस पर्वत की ओर जाती है, उस पर्वत से सम्बन्धित गुणों का विकास उस व्यक्ति के जीवन में मिलता है।
10. यदि भाग्य रेखा चलते-चलते रुक जाए तो वह व्यक्ति जीवन में बहुत अधिक तकलीफ उठाता है।
11. हथेली में भाग्य रेखा जिस स्थान में भी गहरी, निर्दोष और स्पष्ट होती है, जीवन के उस भाग में उसे विशेष लाभ या सुख मिलता है।
12. भाग्य रेखा हथेली में जितनी बार भी टूटती है, जीवन

में उतनी ही बार महत्वपूर्ण मोड़ आते हैं या कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

13. यदि भाग्य रेखा मणिबन्ध से प्रारम्भ होकर मध्यमा के ऊपर चढ़े तो वह दुर्भाग्यशाली होता है। जिसकी भाग्य रेखा ऐसी होगी, उसे जीवन में किसी प्रकार का कोई सुख या आनन्द नहीं मिलेगा।

14. यदि भाग्य रेखा प्रथम मणिबन्ध से नीचे हो अर्थात् प्रथम मणिबन्ध से नीचे उसका उद्गम स्थल हो, तो उसे जीवन में जरूरत से ज्यादा कष्ट उठाना पड़ता है।

15. यदि भाग्य रेखा में कोई सहायक रेखा हो, तो यह शुभ कहा जाता है। यदि उंगलियां लम्बी हों और भाग्य रेखा का प्रारम्भ चन्द्र पर्वत से हो, तो ऐसा व्यक्ति प्रसिद्ध तांत्रिक होता है।

16. यदि चन्द्र पर्वत को काटकर भाग्य रेखा आगे बढ़ती हो, तो वह व्यक्ति जीवन में कई बार विदेश यात्रा करता है।

17. यदि भाग्य रेखा के उद्गम स्थान पर त्रिकोण का चिन्ह हो, तो वह व्यक्ति अपनी ही प्रतिभा से उन्नति करता है।

18. यदि भाग्य रेखा से कुछ शाखाएं निकल कर ऊपर की ओर आ रहीं हों, तो उसे अतुलनीय धन लाभ होता है।

19. यदि भाग्य रेखा मस्तिष्क रेखा से प्रारम्भ हो और मार्ग में कई जगह आड़ी तिरछी रेखाएं हों, तो उस व्यक्ति को बुढ़ापे में सफलता मिलती है।

20. यदि भाग्य रेखा शनि पर्वत पर वृत्ताकर बन जाए तो उसके जीवन में अत्यधिक परिश्रम के बाद सफलता आती है।

21. यदि भाग्य मस्तिष्क रेखा से प्रारम्भ हो और उसकी शाखाएं गुरु, सूर्य तथा बुध पर्वत पर जाती हों, तो वह व्यक्ति विश्वविख्यात होता है।

22. यदि भाग्य रेखा के उद्गम स्थान पर तीन या चार रेखाएं निकली हों, तो ऐसे व्यक्ति का भाग्योदय विदेश में होता है।

23. यदि भाग्य रेखा उद्गम स्थान से एक सहायक रेखा शुक्र पर्वत की ओर जाती हो, तो किसी स्त्री के मा[illegible] से उसका भाग्योदय होता है।

24. यदि भाग्य रेखा मस्तिष्क रेखा के पास समाप्त हो जाती हो, तो उसे जीवन में बार-बार निराशा का सामना करना पड़ता है।

कई व्यक्तियों के हाथ में भाग्य रेखा या तो टूटी फूटी होती है अथवा स्पष्ट नहीं होती। ऐसे व्यक्तियों के जीवन में अनेक प्रकार की बाधाएं आती हैं, छोटे से छोटे कार्यों को करने में भी कई अड़चनें आती हैं और अथक परिश्रम करना पड़ता है।

व्यक्ति के भाग्य का जिम्मेदार वह स्वयं होता है, परन्तु यदि उसकी झोली में दुर्भाग्य के पन्नों की संख्या ज्यादा है, तो बिना गुरु कृपा के उसे कोई अन्य दूर नहीं कर सकता है।

इसलिए व्यक्ति को चाहिए, कि वह सद्गुरु से प्रार्थना कर के **'तीव्र भाग्योदय दीक्षा'** प्राप्त करे। इस दीक्षा के माध्यम से गुरुदेव शक्तिपात की क्रिया द्वारा दुर्भाग्य को भस्मीभूत कर शिष्य के मस्तक पर सौभाग्य का नवलेखन करते हैं।

25. भाग्य रेखा पर जितनी ही आड़ी-तिरछी रेखाएं होती हैं, वे उसकी प्रगति में बाधक होती हैं।

26. यदि भाग्य रेखा की समाप्ति पर तारे का चिन्ह हो, तो उसकी वृद्धावस्था अत्यन्त कष्टमय होती है।

27. यदि भाग्य रेखा और विवाह रेखा परस्पर मिल जाए तो गृहस्थ जीवन दुःखमय रहता है।

28. यदि भाग्य रेखा से कोई सहायक रेखा निकलती हो, तो वह भाग्य को प्रबल बनाने में सहायक होती है।

29. यदि इस रेखा के ऊपर या नीचे शाखाएं हों, तो आर्थिक कष्ट उठाना पड़ता है।

30. भाग्य रेखा के अन्त में क्रॉस या जाली हो, तो उसकी क्रूर हत्या होती है।

31. यदि रेखा के अन्त में चतुर्भुज हो, तो उस व्यक्ति की धर्म में विशेष आस्था होती है।

32. भाग्य रेखा पर धन (+) का चिन्ह शुभ माना गया है।

33. भाग्य रेखा गहरी स्पष्ट और लालिमा लिए हुए होती है, तो व्यक्ति जीवन में शीघ्र ही प्रगति करता है।

[illegible]स्तुतः भाग्य में ही जीवन का सब कुछ सार संग्रहीत होता है। अतः जिसकी हथेली में भाग्य रेखा प्रबल, स्पष्ट और सुन्दर होती है, वह व्यक्ति अपने भाग्य से शीघ्र उन्नति करता है और समाज में सम्माननीय स्थान प्राप्त करता हुआ पूर्ण भौतिक सुखों का भोग करता है।

जीवन में विजय कैसे प्राप्त हो?

साधना से...

सम्पन्न करें

भगवती दुर्गा की प्रधान शक्ति

जिस प्रकार कालचक्र निरन्तर घूमता रहता है, प्रत्येक दिन अलग प्रकार का होता है उसी प्रकार शाक्त साधना के क्षेत्र में शत्रु बाधा निवारण, कार्य-विजय, विवाद-विजय के लिये विजया एकादशी के श्रेष्ठ मुहूर्त है, इस बार यह शुभ मुहूर्त दिनांक 8 जून 2010 को आ रहा है। उस दिन एकाग्र चित्त होकर यह साधना अवश्य करें।

विजया एकादशी यानि विजय प्राप्ति पर्व, जो देता है उन्नति, सम्पन्नता, पूर्णता और श्रेष्ठता। आज के युग में प्रत्येक व्यक्ति का जीवन विभिन्न समस्याओं, बाधाओं, कष्टों आदि से घिरा रहता है। वह हर क्षण परेशान, चिन्तित व दुःखी सा दिखाई देता है, और उन दुःखों से मुक्ति पाने के लिए वह अनेकानेक उपाय कर डालता है, परन्तु किसी भी कार्य को करने से पूर्व वह हर क्षण आशंकित सा दिखाई देता है, उसके मन में किसी भी कार्य को सम्पन्न करने से पहले यह विचार अवश्य आता है - क्या यह कार्य सम्पन्न होगा? क्या इस कार्य में मुझे सफलता मिलेगी? ऐसे अनेक प्रश्न उसके मानस-पटल पर अपना आधिपत्य पहले से ही जमा कर बैठ जाते हैं, जिसका परिणाम यह होता है कि वह कार्य प्रारंभ करने से पूर्व ही निराश हो जाने के कारण उसमें पूर्णरूप से सफलता प्राप्त नहीं कर पाता।

धन, वैभव, मान, प्रतिष्ठा, व्यापार आदि सभी क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने के लिए व्यक्ति हर क्षण प्रयासरत रहता है, किन्तु सफलता उसके हाथ नहीं लगती। साधारणतः आम जीवन में तो प्रत्येक व्यक्ति ऐसी ही समस्याओं व बाधाओं से ग्रस्त रहता है, किन्तु इन सभी कष्टों से, इन सभी बाधाओं से उसे छुटकारा मिल सकता है, यदि उसे उस क्षण विशेष में उस दुर्लभ साधना का ज्ञान हो, जिसे **'विजया एकादशी प्रयोग'** कहते हैं।

यह जीवन के सभी क्षेत्रों में विजय प्राप्त करने का एकमात्र उपाय है, यदि व्यक्ति को इस प्रयोग का ज्ञान हो, तो वह अपने अभावयुक्त जीवन से शीघ्र ही निजात पा सकता है। यह एक दुर्लभ एवं महत्वपूर्ण प्रयोग है, जिसे प्रत्येक व्यक्ति को सम्पन्न करना ही चाहिए।

जीवन का मतलब सुख और शांति के साथ समय व्यतीत करना होता है, हम अपने जीवन में जितना परिश्रम करें उतना फल हमें प्राप्त हो जाए, पर अधिकतर ऐसा नहीं होता, हम अपने जीवन में देखते हैं कि बहुत अधिक परिश्रम करने पर भी उतनी अधिक सफलता हमें प्राप्त नहीं हो पाती।

व्यापार में हम दिन-रात मेहनत करते रहते हैं, और समय आने पर उसका जो कुछ लाभ प्राप्त होना चाहिए, वह प्राप्त नहीं हो पाता, हम अपनी तरफ से परिवार में कोई कलह या मन-मुटाव नहीं चाहते, परंतु प्रयत्न करने के बावजूद भी परिवार में जो सुख, शांति और आनन्द होना चाहिए, वह नहीं हो पाता।

विजया एकादशी प्रयोग को सम्पन्न कर व्यक्ति अपने जीवन के समस्त मनोरथों को पूर्ण करने में सक्षम एवं समर्थ हो पाता है। ग्रंथों के अनुसार यदि व्यक्ति विजया एकादशी के दिन इस प्रयोग को सम्पन्न कर लेता है, तो उसे सफलता मिलती ही है, क्योंकि विजया एकादशी अपने आप में ऐसा ही श्रेष्ठक्षण है, जिसका लाभ कोई भी व्यक्ति या साधक पूर्णतः उठा सकता है।

आज मानव कई छोटी-बड़ी परेशानियों में उलझकर अपने महत्वपूर्ण क्षणों को व्यर्थ गंवा बैठता है, जिस कारण वह निराशावादी, नीरस व अभावयुक्त जीवन जीने पर मजबूर हो जाता है, जैसे -

1. यदि व्यक्ति निर्धन हो तथा आर्थिक दृष्टि से दुःखी व पीड़ित हो।
2. यदि वह बीमार हो, उसका स्वास्थ्य ठीक न रहता हो।
3. किसी तनाव से चिन्ताग्रस्त होने के कारण यदि व्यक्ति बार-बार आत्महत्या करने की सोच रहा हो।
4. यदि विवाह सम्पन्न न हो रहा हो।
5. विवाह सम्पन्न करने के पश्चात् यदि संतान उत्पन्न न हो रही हो।

जीवन के प्रत्येक पक्ष, प्रत्येक क्षेत्र में विजय प्राप्त कर सुख-वैभव, पद-प्रतिष्ठा प्राप्त करना प्रत्येक साधक का अधिकार है... लेकिन यह सम्भव है उस विशेष क्षण को पकड़ कर उस साधना को सम्पन्न कर लेने के द्वारा जो कि सभी प्रकार से विजय प्राप्त कर लेने की...

6. यदि परीक्षा में या जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त न हो रही हो।
7. पुत्र या पुत्री आज्ञाकारी न हो।
8. यदि आपका कोई शत्रु हो या अकारण ही किसी से शत्रुता बढ़ जाए अथवा हर समय शत्रुभय बना रहता हो।
9. यदि समाज में कोई सम्माननीय स्थान प्राप्त न हो रहा हो।
10. यदि मकान, जमीन-जायदाद आदि के लिए किसी विपत्ति या परेशानी का सामना करना पड़ रहा हो
11. यदि बहुत प्रयत्न करने पर भी आपके कार्य सफल नहीं हो रहे हों।
12. यदि राज्य की तरफ से बराबर अड़चनें आ रही हों, और प्रयत्न करने पर भी अधिकारियों से मतभेद दूर नहीं हो रहे हों।
13. यदि नौकरी में उन्नति व प्रमोशन न मिल रही हो।
14. जीवन में बहुत बड़ा भाग व्यतीत करने पर भी भाग्योदय नहीं हो रहा हो, हर क्षण बाधाओं का सामना करना पड़ रहा हो।

इस प्रकार की समस्त बाधाओं, अड़चनों का निराकरण इस विजया एकादशी प्रयोग से ही सम्भव है, जो धन, यश, मान, पुत्र, पौत्र, व्यापार, नौकरी, विवाह आदि समस्याओं को दूर करने में सक्षम है।

वास्तव में ही यह एक अद्वितीय एवं अचूक प्रयोग है, जिसे सम्पन्न कर व्यक्ति शीघ्र ही लाभ प्राप्त कर सकता है। यह प्रयोग पूर्णतः प्रामाणिक है, क्योंकि पूज्य गुरुदेव द्वारा अपने कुछ शिष्यों को दिया गया यह अद्वितीय प्रयोग अपनी प्रामाणिकता को सिद्ध करता है, जिसे सम्पन्न कर उन शिष्यों या साधकों ने महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की, और आज भी जीवन के प्रत्येक पक्ष, प्रत्येक क्षेत्र में विजय प्राप्त कर वे सुख-वैभव, पद-प्रतिष्ठा, पुत्र-पौत्र सभी कुछ प्राप्त कर एक श्रेष्ठ व पूर्ण सम्पन्नता युक्त जीवन का निर्माण करने में सक्षम हो सके हैं।

विजया एकादशी तो समस्त कार्यों में विजय प्रदान करने वाली एकादशी है। यह **सौभाग्यदायक दिवस** 08 जून 2010 को एक विशेष पर्व में रूप में आपके सामने उपस्थित हो रहा है, यदि उसका साधनात्मक दृष्टि से उचित प्रयोग किया जाए, तो यह प्रयोग विशेष उन्नतिदायक एवं सफलतादायक है।

इस प्रयोग को कोई भी व्यक्ति अपने घर पर बैठकर सम्पन्न कर सकता है। यह एक सहज सफलतादायक प्रयोग है, जिससे साधक जीवन के प्रत्येक पक्ष, प्रत्येक समस्या पर विजय प्राप्त कर एक सुखी जीवन का निर्माण कर सकता है।

साधना विधान

इस प्रयोग को सम्पन्न करने के लिए **श्रेष्ठ तिथि ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष एकादशी** (08 जून 2010) है। यह रात्रिकालीन साधना है, इसमें साधक या साधिका स्नान कर, शुद्ध पीले वस्त्र धारण कर, पीले आसन पर पश्चिम की ओर मुख कर बैठ जाएं, इसके पश्चात् बाजोट के ऊपर पीला वस्त्र बिछाकर, उस पर कुंकुम से अष्टदल कमल अंकित कर **विजया यंत्र** को उस पर रख दें, फिर उस यंत्र पर अष्टदल से 11 बिन्दियां लगाएं तथा 11 **घुंघचियों** को अर्द्धचन्द्राकार रूप में यंत्र के सामने रख दें, इसके बाद कुंकुम, अक्षत व 11 पीले पुष्प उस यंत्र व घुंघचियों के समक्ष अर्पित कर दें, तथा एक घी का दीपक यंत्र के सामने प्रज्ज्वलित कर दें, ध्यान रखें कि दीपक पूरे साधनाकाल में जलता रहे, फिर इसके पश्चात् बेसन से बने भोग को नैवेद्य के रूप में समर्पित करें।

इस प्रयोग को सम्पन्न करने के लिए किसी भी प्रकार की माला की कोई आवश्यकता नहीं है, केवल 60 मिनट तक शांतचित्त होकर निम्न मंत्र का जप करें -

मंत्र

ॐ श्रीं ह्रौं विजयायै नमः

मंत्र-जप करने के पश्चात् गुरु आरती सम्पन्न करें तथा बेसन से बना प्रसाद वितरित करें।

इस प्रकार पूर्ण विधि-विधान पूर्वक पूजन सम्पन्न कर, पूरे परिवार के साथ प्रसाद ग्रहण कर भोजन कर लें। अगले दिन प्रातः काल उठकर साधक उस यंत्र का पुनः संक्षिप्त पूजन करे, जिस वस्त्र पर यंत्र स्थापित किया है, उसी में यंत्र और घुंघचों को लपेटकर उसे मौली से बांध दें, फिर किसी नदी में या किसी पवित्र सरोवर में उस पोटली को विसर्जित कर दें।

साधना विधान - 270/-

नि:शुल्क उपहार

पीताम्बरा विजय सिद्धि माला एवं कवच

व्यक्ति जब उन्नति की ओर अग्रसर होता है, तो उसकी उन्नति से, प्रतिष्ठा से ईर्ष्याग्रस्त होकर कुछ मित्र ही उसके शत्रु बन जाते हैं और उसे सहयोग देने के स्थान पर वे उसकी उन्नति के मार्ग को अवरुद्ध करने के लिए प्रयासरत हो जाते हैं। ऐसे शत्रुओं से निपटने के लिए 'पीताम्बरा विजय सिद्धि माला एवं कवच' को सिद्ध व प्राण प्रतिष्ठित किया गया है। इसके माध्यम से समस्त प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष शत्रु समाप्त होंगे, वहीं इस माला एवं कवच के प्रभाव से आपके कार्यों में भी सफलता मिलेगी, आपकी कहीं पराजय नहीं होगी। यह माला एवं कवच निश्चय ही उन्नति और आत्मरक्षा के लिए विशेष लाभप्रद हैं। समस्त प्रकार के शत्रु इसके प्रभाव से स्वतः ही शान्त हो जाते हैं, सामने आने से ही कतराते हैं।

विधिः- किसी भी मंगलवार को प्रातः अथवा रात्रि में कवच को धारण कर इस माला से बगलामुखी मंत्र *'ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ॐ ह्रीं फट् स्वाहा'* की तीन माला जप करें। इस तरह अगले 11 दिनों तक इसी माला से नित्य 3 माला जप करें। फिर माला को किसी निर्जन स्थान पर छोड़ आएं तथा कवच को धारण किये रखें। तीन माह पश्चात् कवच को जल सरोवर में डाल दें।

जीवन का सर्वश्रेष्ठदान-'ज्ञानदान'

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, अपने मित्रों को, धार्मिक परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे वंचित हैं। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

क्या करें आप?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्टकार्ड क्रमांक 3) भेज दें, कि ''मैं यह अद्वितीय उपहार प्राप्त करना चाहता हूं एवं 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूं। आप निःशुल्क मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित **'पीताम्बरा विजय सिद्ध माला'** 492/-(20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क 402/-+ डाक व्यय 90/-) को वी. पी. पी. से भिजवा दें, वी. पी. पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर छुड़ा लूंगा। वी. पी. पी. छूटने के बाद मुझे 20 पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें'', आपका पत्र आने पर हम 402/-+ डाक व्यय 90/-=492/- की वी. पी. पी. से मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित **'पीताम्बरा विजय सिद्ध माला'** भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके।

-: सम्पर्क :-

अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राजस्थान)

फोन - 0291 - 2432209, 2433623 टेलीफैक्स - 0291 - 2432010

प्रत्येक साधना निःशुल्क

गुरुधाम जोधपुर

जिस भूमि पर सैकड़ों प्रयोग और असंख्य दीक्षाएं सम्पन्न हो चुकी हैं, उस सिद्ध चैतन्य दिव्य भूमि

पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग

समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारंभ हुई है। इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर जोधपुर **'सिद्धाश्रम'** में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं, जो कि उस दिन शाम **6** से **8** बजे के बीच सम्पन्न होती हैं। यदि श्रद्धा व विश्वास हो, तो उसी दिन से साधनाओं में सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

शुक्रवार, 11-06-10 **तंत्र बाधा शांति ज्वालामालिनी प्रयोग**

इतने प्रयासों के बाद भी आज तंत्र के नाम से लोग भय खाते हैं, तो उसके पीछे कारण यही है कि लोगों ने इसका उपयोग जनहित की बजाय निजी स्वार्थ और लालच के लिए अधिक किया है। आज कल गांवों और शहरों में ऐसे अनेक दुष्ट एवं स्वार्थी तांत्रिक अपने ग्राहकों से कुछ रुपये लेकर किसी के ऊपर घटिया स्तर के टोने टोटके कर देते हैं, जिससे एक सीधे सादे व्यक्ति का हंसता-खेलता जीवन विनाश के कगार पर आ जाता है। व्यक्ति यह समझ नहीं पाता, कि क्यों अचानक उसके परिवार में लोग बीमार पड़ रहे हैं, क्यों उसके बच्चे कक्षा में पिछड़ रहे हैं, क्यों हर जगह असफलता ही मिल रही है? इन सबके पीछे प्रायः उससे ईर्ष्या करने वाले किसी शत्रु द्वारा कराये गये मूठ आदि तंत्र प्रयोग होते हैं। ज्वालामालिनी प्रयोग ऐसे सभी प्रयोगों को समाप्त कर साधक के जीवन में आ रही सभी बाधाओं का नाश कर सौभाग्य पथ खोल देता है।

शनिवार, 12-06-10 **तीव्र भाग्योदय साधना**

प्रायः साधक भाग्योदय साधना की उपेक्षा कर देते हैं, जबकि साधनाओं में या अन्य कार्यों की सफलता में भाग्य की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भाग्य दोष के कारण व्यक्ति - (1) मात्र कुछ अंकों से परीक्षा में अच्छी श्रेणी प्राप्त करते-करते रह जाता है, (2) व्यापार में पूंजी निवेश करता है, परन्तु परिश्रम के बावजूद प्रत्याशित लाभ नहीं मिलता, (3) नौकरी के लिए आवेदन किया जाता है, परन्तु योग्यता होते हुए भी आप वंचित रह जाते हैं, (4) समस्याएं और असफलताएं आपके पास ही आती हैं। इन सबका कारण भाग्य दोष ही है, जिसे इस साधना द्वारा मिटाया जा सकता है।

रविवार, 13-06-10 **तीव्र लक्ष्मी वशीकरण प्रयोग**

लक्ष्मी को उसकी पूजा या आराधना कर प्राप्त नहीं किया जा सकता। लक्ष्मी तो पुरुषार्थ के द्वारा ही साधक के पास आ सकती है। यदि लक्ष्मी का वशीकरण कर लिया जाए तो वह साधक को सिद्ध होकर उसके भौतिक जीवन को संवारने को बाध्य हो जाती है। यह ऐसा ही सफल प्रयोग है जिसके द्वारा लक्ष्मी को पूर्ण आबद्ध कर घर में स्थायित्व दिया जा सकता है। इस अद्भुत प्रयोग को संपन्न कर जीवन में धन, यश, सम्मान प्राप्त किया जा सकता है। यह एक अचूक प्रयोग है जिसके द्वारा शीघ्र अतिशीघ्र धन प्राप्त कर सम्पन्न हुआ जा सकता है। जिस भी साधक ने इस प्रयोग को सम्पन्न किया उसे सफलता अवश्य प्राप्त हुई। विश्वामित्र प्रणीत यह साधना लक्ष्मी सिद्धि की श्रेष्ठतम साधना है।

इन तीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे

1. आप अपने किन्ही दो मित्रों अथवा स्वजनों को (जो पत्रिका के सदस्य नहीं हैं) मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर जोधपुर, गुरुधाम में सम्पन्न होने वाले किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। पत्रिका की एक सदस्यता का वार्षिक शुल्क रुपये 303/- है, जबकि आपको दो सदस्यों का शुल्क मात्र रुपये 570/- ही जमा करवाना है। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष मंत्रसिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठित सामग्री (यंत्र गुटिका, आदि) आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।

2. यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक मित्र के लिए पत्रिका की वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।

3. पत्रिका-सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को ऋषि-परम्परा की इस पावन साधनात्मक ज्ञान-धारा से जोड़कर एक पुनीत एवं पुण्यदायी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयास से एक परिवार में अथवा कुछ प्राणियों में ईश्वरीय चिन्तन, साधनात्मक चिंतन आ पाता है तो यह आपके जीवन की सफलता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो निःशुल्क हैं और गुरु-कृपा द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की न्यौछावर-राशि को अर्थ के तराजू में नहीं तोल सकते।

गुरुधाम में दीक्षा व साधना का महत्व

शास्त्रों में वर्णन आता है कि मंदिर में मंत्र-जप किया जाए तो अति उत्तम होता है, उससे भी अधिक पुण्यदायी होता है; यदि नदी के किनारे करें, उससे भी अधिक समुद्र तट, और उससे भी अधिक पर्वत में करें तो; और पर्वत में भी यदि हिमालय में किया जाए तो और भी कई गुना श्रेष्ठ होता है। इन सबसे भी श्रेष्ठ होता है, यदि साधक गुरु चरणों में बैठकर साधना सम्पन्न करें; और यदि गुरुदेव अपने आश्रम, अर्थात् गुरुधाम में ही यह साधना प्रदान करें तो इससे बड़ा सौभाग्य तो और कुछ होता ही नहीं।

कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहां दिव्य शक्तियों का वास सदैव रहता ही है। जो सद्गुरु होते हैं, वे सूक्ष्म रूप से अथवा सशरीर, प्रतिपल अपने धाम में अवस्थित रहते हुए प्रत्येक गतिविधि का सूक्ष्म रूप से संचालन करते ही रहते हैं। इसलिए यदि शिष्य गुरुधाम में पहुंच कर गुरु से साधना, मंत्र एवं दीक्षा प्राप्त करता है और गुरु-चरणों का स्पर्श कर उनकी आज्ञा से साधना प्रारम्भ करता है तो उसके सौभाग्य से देवगण भी ईर्ष्या करते हैं।

तीर्थ-स्थल पुण्यप्रद हैं, पर शिष्य अथवा साधक के लिए सभी तीर्थों से भी पावन तीर्थ गुरुधाम होता है। जिस धाम में सद्गुरुदेव का निवास स्थान रहा हो, ऐसे दिव्य स्थान पर गुरु-चरणों में उपस्थित होकर गुरु-मुख से मंत्र प्राप्त करने की इच्छा ही साधक में तब उत्पन्न होती है, जब उसके सत्कर्म जाग्रत होते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए साधकों के लाभार्थ गुरुदेव की व्यस्तता के बावजूद भी जोधपुर गुरुधाम में तीन दिवसों में तीन साधनात्मक प्रयोगों की श्रृंखला निर्धारित की गई है।

योजना केवल इन 3 दिनों के लिये 11-12-13 जून 2010

किन्हीं पांच व्यक्तियों को वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 300x5=Rs.1500/- जमा करा के या उपरोक्त राशि का बैंक ड्राफ्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर सदस्यों के डाक पते लिखवाकर उपहार स्वरूप ये दीक्षा आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

यदि दीक्षा फोटो द्वारा प्राप्त करना चाहें तो निर्धारित तिथियों के पूर्व ही अपना फोटो एवं पांच सदस्यों की सदस्यता शुल्क की राशि का ड्राफ्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर जोधपुर कार्यालय के पते पर भेजें। आपका फोटो, पांच सदस्यों के नाम, पते एवं ड्राफ्ट हमें उपरोक्त तिथि से पूर्व ही प्राप्त हो जाने चाहिए। पत्र विलम्ब से मिलने पर दीक्षा संभव न हो सकेगी। यदि राशि मनीऑर्डर से भेजना चाहें तो फोटो एवं मनीऑर्डर जोधपुर कार्यालय भेजें।

शक्तिपात युक्त दीक्षा

नवग्रह दीक्षा

क्या आपको लगता है कि आपके कार्य नहीं हो रहे है? भाग्य बाधा बार-बार आ रही है? व्यवसाय में प्रगति नहीं हो रही है अथवा कोई शारीरिक व्याधि बार-बार हो रही है, तो जानिये यह सब किसी न किसी ग्रह दोष के कारण है।

यह जीवन ग्रहों के अधीन है और 'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे' अर्थात् जो कुछ शरीर में है वह ब्रह्माण्ड में है और जो ब्रह्माण्ड में है वह इस शरीर में अवश्य है। ग्रहों की गति मनुष्य जीवन की गति से जुड़ी हुई है। जब मनुष्य के ग्रह अनुकूल होते हैं तो वह निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है, लेकिन ग्रह दोष के कारण उत्पन्न बाधा से जीवन हर प्रकार के कष्ट कारक हो जाता है। मंत्र के माध्यम से, तंत्र के माध्यम से ग्रहों को अपने अनुकूल बनाया जा सकता है। ऐसी ही एक श्रेष्ठ दीक्षा जिसे प्रत्येक साधक अवश्य ग्रहण करें।

* दीक्षा आज के युग में एक प्रामाणिक उपाय है सफलता की ऊंचाईयों को प्राप्त कर लेने का, जीवन के अभाव को, अधूरेपन को दूर कर देने का, जीवन में अतुलनीय बल, साहस, पौरुष एवं शौर्य प्राप्त कर लेने का, साधना में सिद्धि प्राप्त कर लेने का ...।
* गुरु-प्रदत्त शक्तिपात द्वारा शिष्य जिस कार्य हेतु जो दीक्षा प्राप्त करना है, उसमें निपुणता प्राप्त कर लेना है, क्योंकि वह सफलता और श्रेष्ठता प्राप्त करने का एक लघु उपाय है ...
* दीक्षा में भाग लेने वाले साधकों को जल से अमृत-अभिषेक करने के उपरान्त विशेष शक्तिपात प्रदान किया जाएगा। यह दीक्षा इन तीनों दिवसों में सांय 7 बजे प्रदान की जाएगी।

सम्पर्क - मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर, फोन-0291-2432209, 2433623 टेलीफैक्स-0291-2432010

Any Wednesdya

River of Gold

Kanakdhara Sadhana

If all ancient texts were to perish and just the secret Sadhana of Kanakdhara Yantra survived, it would be enough to make rivers of gold to flow in our lives and make us the richest and most prosperous nation. - *Tantra Master Trijata Aghori.*

Is it not an anomaly that poverty prevails in a country whose ancient knowledge promises limitless wealth and success through easy rituals? It sure appears surprising, but not when one peers into the minds of the masses and beholds the utter disbelief and lack of faith and devotion that they nurture towards the science of Mantras and Sadhanas.

And hardly a few centuries back desperate men and women would seek audience of spiritual Gurus like Gorakhnath, in the hope of receiving some Mantra or ritual that could end their troubles. Hardly a millennium has passed since the great Master of Tantra, Adi Shankaracharya tread the soil of India doling out precious pieces of ancient knowledge to help the common man overcome adversities in life.

In fact, bound by the vows of ascetic life when one day Shankaracharya sought some food from a house all he got was sad tears and sighs of the lady of the house. On enquiry the Guru was appalled to hear that there was nothing to eat in that home except for a dry gooseberry, which the lady readily offered to him, not willing to turn away a Sanyasi empty handed from her door.

Touched by her selflessness Shankar assumed a meditative posture at the very spot and propitiated Laxmi, the Goddess of Wealth. The Goddess however expressed her helplessness saying, "This old woman's bad Karmas from the past shall never let her enjoy riches in this life. "

"But how can you be helpless Mother?" said Shankar. "Kindly suggest someway."

The Goddess reflected upon the problem for a few moments and then said, "There is but one way. Establishing **Kanakdhara Yantra** (कनकधारा यंत्र) in this home can sure reverse her ill fate."

Guru Shankaracharya did just that and opened the doors to fortune for the impoverished family So many avenues of earning opened up suddenly that it seemed that a river of gold had been diverted to the house.

The ritual could be effective even today, yet the preparation of the Yantra is not so easy. No less than 16 are its boons, namely wealth, rich foods, land, property and buildings, fame, longevity, high social status, vehicles, handsome spouse, children, state accolades, good health, joy, pleasures, trade success and total fulfillment.

Goddess Laxmi is worshipped through this Yantra and once appeased the deity banishes all traces of poverty from one's life and endows one with riches and splendors. According to the ancient treatise Kanak-dhara Yantra Rahasya this Yantra must be inscribed on a copper plate in special astrologically propitious moments known as the **Sanjeevani Kaal.** Only such a Yantra can., if placed at home, work place, shop or business centre, bring forth the above mentioned results.

Wednesday is the best day for permanently placing this wealth-pulling Yantra in one's home or office. This must be accompanied by the following ritual devised by Bhagawatpad Shankaracharya. Early in the morning have a bath and sit facing South on a white mat having donned white clothes. On a bed of roses place the Yantra and light a ghee lamp. Next offer unbroken rice grains, vermilion, flowers and sweet on the Yantra and chant thus.

Sarsij Nihalaye Saroj Haste Dhaval Tamaanshuk Gandh Maalya Shobhe. Bhagwati Hari Vallabhe Manogye Tribhuvan Bhooti Kari Praseed Mahyam.

Thereafter with a **Laxmi Var Varad rosary** (लक्ष्मी वरवरद माला) chant 11 rounds of the following Mantra.

Om Vam Shreem Vam Ayeim Hreem Shreem Kleem Kanakdhaaraayei Namah.

॥ॐ वं श्रीं वं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कनकधारायै नमः॥

The Yantra itself is capable of drawing wealth but still better results are assured if the Sadhak chants the Mantra 11 times each morning before the Yantra. After the ritual place the Yantra in your home or office and drop the rosary in a river or pond.

Sadhana Articles: 405/-

Soundarya Sadhana

To have true joy in life is not a mean accomplishment. It is something for which Yogis have done tough Sadhanas for thousands of years. And it is a fact that if a person is truly determined then there is nothing impossible for him in life. Through Saddhanas one can gain confidence and a divine radiance on one's face.

A face lit by true happiness – can there be a better definition of beauty? Beauty does not epitomise only good looks.. Beauty means to be free of tensions and full of joy and love for life.

Today men and women spend so much on external devices just to look beautiful. Only if they knew that the true source of beatuy lies within. Through surgery one sure can obliterate wrinkles but can surgery bring glow and confidence on one's features?

We have had great Rishis like Dhanvantari, Ashwini and Chyavan who spent their entire lifetime trying to find out means of transforming old age into youth and freeing the body of all ailments and infirmities. And this process they called Kayakalp or physical transformation. Kayakalp means an alchemy that could make a 60 year old feel energetic and enthusiastic like a 16 year old person. It is not just the aging body but also one's thoughts that make us feel old.

And to be joyful is being young. Beauty is the basis of life. It is a God given gift and everyone has a right to look and feel beautiful. I have seen thousands of years old sadhaks and Sadhikaas in Siddhashram who look so divinely beautiful in spite of their age.

The secret of their youth and beauty is Soundarya Sadhana. It is a ritual which even the Apsaras or heavenly nymphs try in order to look ever enchanting. This Sadhana can be tried irrespective of whether you are a man or a woman.

The Sadhana must be tried on a **Friday** between 9 pm and midnight. Have a bath and wear fresh clothes. Sit facing north on a white seat. Cover a wooden seat with a white cloth, keep a tumbler filled with water in it. Cover the mouth of the tumbler with a plate filled with dyed yellow rice grains.

Take a **Soundarya Yantra** and bathe it with water. Apply fragrance to the Yantra. Light ghee lamp and incense. Place the Yantra on the rice. Then make five marks with saffron on the Yantra. On the Yantra place a **Neelkarnna Mudrika.** Make a mark on the Mudrika too. Offer rice grains on the Yantra and Mudrika. Then offer flowers. Join both palms and chant this verse.

SOUNDARYA BHAVATEERAHOKE, MAADHURYA OJAM TEJASTAHEDAM. ROOPO-JWALAA ROOPDIVHYAA PRAPANNAA, YAACHE YA NITYAM TVAMDEHI MAATAH.

Then chant 54 rounds of the following mantra with a **Roopaa rosary.**

OM SHREEM SOUNDARYAABHI-VAAPTAYE SHREEM NAMAH

After the chanting, chant one round of Guru Mantra. Do this for two days. Each day after Sadhana sprinkle the water of the tumbler over your body and drink a part of it. The third day wear the Mudrika (Ring) on any finger and drop the other Sadhana articles in a river or pond.

Within a few days one starts feeling a subtle change within which makes one feel enthusiastic and energetic than ever before provided Sadhana is done with faith.

Sadhana Articles 240/-

Bhuvaneshwari Sadhana

The Sadhak who accomplishes this ritual becomes rich and powerful like Lord Indra! It is said in "Rig Veda" that only through the good Karmas of past lives and grace of the Guru can one obtain Bhuvaneshwari Sadhana.

When Lord Ram was being crowned his Guru Vashishtth said to him - O Ram! In this world a poor man is treated with contempt even by relatives while a rich man is honoured even by strangers.

He further stated - In the world of Sadhanas there is no more powerful Sadhana for becoming prosperous than that of Goddess Bhuvaneshwari.

Lord Ram did just that and his reign was called Ramrajya in which there was prosperity and joy everywhere.

Even Lord Krishna accomplished this Sadhana and was able to found the wonderful city of Dwarka which was full of riches and wealth.

Lord Shiva has said that even a person who has been fated to be poor can become rich through. this wonderful Sadhana.

Bhuvaneshwarl is the Goddess who rules over the riches of the whole world and She is worshipped even by the gods and Yogis.

According to the great Yogi Gorakhnath following are the benefits of this Sadhana.

After this Sadhana has been done wealth starts to flow into one's life on its own. The person gains a magnetic personality and is easily can influence others, even his enemies.

He is ever protected from peril by the kind Goddess and he remains healthy and fit all through life. He also leads a happy family life and there never is any paucity in his life.

He gains respect and fame in the society and is honoured for his work. Bhuvaneshwari Sadhana is a key to success in life no matter which field one has chosen.

The Sadhana must be tried on a **Full Moon night** between 9 pm and midnight. Have a bath and wear yellow clothes. Sit facing North on a yellow seat.

Cover a wooden seat with a yellow cloth.

On a mound of rice grains place **Bhuvaneshwari Yantra**. On the Yantra place a **Bhuvantray rosary**. Offer vermilion, rice grains and rose petals on the Yantra.

Light ghee lamp and incense. On the right hand side of the Yantra place an Eishwarya Gutika.

Chant one round of Guru Mantra

Then chant 21 rounds of the following Mantra with a **Bhuvantray rosary**.

Om Hreem Shreem Kleem
Bhuvaneshwaryei Namah

After this chant one round of Guru Mantra. Do this regularly for three days. Wear the Gutika in a thread around your neck. Drop the Yantra and rosary bundled. in a river or pond.

Offer food and gifts to a girl below ten years in age. After eleven days drop the Gutika in the river too. This is really a very effective Sadhana that cannot fail even in the present age of Kaliyug.

Sadhana articles - 300/-

08-09 मई 2010

चामुण्डा शिवशक्ति साधना शिविर, पालमपुर

स्थल: शहीद कैप्टन विक्रम बत्रा मैदान, पालमपुर, कांगड़ा

◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆

16 मई 2010

पूर्ण बाधा निवारण साधना शिविर, नाशिक

शिविर स्थल: श्रीस्वामी नारायण मंदिर, इंग्लीश मिडीयम स्कूल, आग्रारोड, न्यू आडगांव नाका, पंचवटी, नाशिक (महाराष्ट्र)

आयोजकः राज पोखरेल - 098230-66475/093704-94900 ○श्रीराम चित्ते - 093739-00900 ○सौ. मंगला चित्ते - 093724-39807 ○राकेश कापडनीस - 093267-84907 ○रूपाली कापडनीस ○मिलींद भावसार - 093700-99635 ○श्री. गिलडा - 095610-82680 ○दिनेश शर्मा - 080550-21645 ○विलांस लांडगे - 090229-87068 ○अजय म्हसके - 099204-05717 ○तुलसी महतो - 099671-63865 ○सौ. कल्पना दिघे - 093706-52200 ○पंकज बागुल ○मनवेन्द्र सिंग - 093217-88314 ○सौ. पियूश - 093217-88314 ○दिलीप शर्मा - 098678-38683 ○दिवाकर शर्मा - 098603-13624 ○संतोष काजळे - 093701-79864 ○निलेश भावसार - 097641-89039 ○नितीन नामदेव सोनार - 098231-49356 ○राजेन्द्र भावसार ○विकास पाटील ○नंदू वडनेरे - 099601-89864 ○भगवान जाधव ○देवराज जगताप ○बापूराव खैरनार - 092262-13730 ○सौ. प्रमिला सोनू वाघ - 093263-24198 ○सौ. वंदना खैरनार ○सौ. पदमाबेन - 094267-40645 ○अनिल जगताप ○त्र्यंबक चौधरी ○वाल्मीक भामरे ○रवि जाधव ○योगेश दावळे ○भरत मोरे ○सुनिल पाटणकर - 092726-30110 ○पुरुषोत्तमदास मेहता ○श्रीनिवास मांदने ○वसंत गोविंद ○निलेश दावळे ○एस.पी. पांडे ○मनोज भावसार ○जितेन्द्र जाधव ○विजय जाधव ○जिभाऊ खैरनार ○सुरेन्द्र वाघ ○संजय आहीरे ○शिवम भावसार ○सुनिल बागुल ○विशाल मोरे ○दिलीप मोतीरामानी - 093269-69171 ○कालीभाई पटेल - 094227-75603 ○जयंतीभाई पटेल - 094239-77496 ○मुलचंद भाई - 094222-79452 ○ॲड. पंकज पाटील - 099230-97990 ○भुषण अग्रणी - 098906-52816 ○शैलेश पांडे - 098231-18189 ○महेन्द्र कुमार नाफडे - 093703-61329 ○राजेन्द्र प्रजापती - 094227-85744 ○जे. पी. कान्हेरेसर - 092267-35209 ○शिवाजी सोनार - 093718-40720 ○राऊत - 099233-12302 ○वसंत गोविंद - 094231-81168 ○बुद्धीराम पांडे - 098190-00414 ○कैलास कौदे - 096195-35092 ○सुभाष शंकर भावसार - 093739-20737 ○शिवाजी सोनार - 093718-40720 ○

◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆

22-23 मई 2010

त्रिशक्ति साधना शिविर, छिन्दवाड़ा

शिविर स्थल: पोलो ग्राउंड, नागपुर रोड, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

नोट - शिविर स्थल पर नागपुर (128 KM.), पिपरिया (130 KM.) एवं जबलपुर (220 KM.) से पहुंच सकते हैं।

आयोजकः डा. रामभाऊ मेटाणगडे - 094258-45821 ○रमेश चन्द्र सावरकर - 098937-20917 ○एस.एल.धुर्वे - 099931-55888 ○आर.एन.गढ़वाल - 094067-25439 ○ईश्वर प्रसाद ढाकरे - 098937-58809 ○बी.डी.दवडे - 094244-61118 ○पी.एल.काकोड़े - 093292-80803 ○दीपक पाण्डेय - 094243-23905 ○कमलाकर धांड्से - 094256-70011 ○राजकुमार हिराउ - 094249-61241 ○मनोज मालवे - 094078-03554 ○श्रीमती भागवती टांडेकर ○**सौंसरः** शेषराव गावंडे - 094249-36049 ○अशोक राव दुबे - 093709-49968 ○लक्ष्मण थाके - 093296-01001 ○अवधेश प्रसाद गर्ग - 093296-83001 ○नरेन्द्र पाण्डे - 093731-07057 ○सुरेन्द्र श्रीवास्तव - 094528-95851 ○नरेन्द्र गढ़वाल - 094258-89001 ○विजय पराडकर - 093023-41085 ○शशिकांत पाण्डे - 090095-30310 ○अभिषेक पुरोहित - 094070-23324 ○राजू गावंडे - 094247-24144 ○सुधाकर परतेती - 097537-44059 ○सौ. सुनीता शेषराव गावंडे - 093003-22473 ○सौ. शोभा डफरे - 095895-10765 ○विठोबा उईके ○रामदास यूनांती ○ओझेलाल कुमरे ○**ब्राह्मण पीपलाः** दशरथ वानखेड़े - 097539-26345 ○**लोधीखेड़ाः** डॉ. सुरेश कुमार इरपाची - 096309-27337 ○**बोरगांवः** सुधाकर खुलगे- 099817-21563 ○राजकुमार मोहबे - 093013-45701 ○**भीलापारः** सुरेश भोंगाड़े ○**पांदुर्नाः** मधुकरराव जवने - 093017-33605 ○दशरथ भांगे - 096309-67057 ○बी.आर.सिरसाम - 094249-91433 ○नरेन्द्र शिवहरे - 094258-97322 ○कैलाश खरवड़े ○रामेश्वर बघाले ○शालीराम कोल्हे ○भैयाजी दारोकार ○हेमराज घोडे ○कुण्डलिक सावरकर ○हंसराज नसीने ○सुभाष तहकित ○शान्ताराम बालपाण्डे ○रमेश परतेती - 0716-4202722 ○दहिवाले बाबू ○सीताराम अहासे ○बेबीबाई कोल्हे ○**तीगांवः** डा. आर. डी बालके - 094070-55283 ○**नांदनवाड़ीः** नरेश आरसिया - 090094-64307 ○**सावजपानीः** योगीराज परतेती - 07164-202743 ○**रैयतवाडी ढानाः** सुरेश कुमरे - 096856-43726 ○**खड़कीः** गणेश भादे - 0948261-66414

❍**धावड़ीखापाः** रामेश्वर सिरसाम - 091658-07611 ❍विश्वेश्यर इरपाची ❍**नीलकंठः** पोलजी वटके - 099773-32432 ❍**भुयारीः** सिद्धार्थ वाहने ❍**दमुआः** अरविन्द कुमार सिंह - 094067-58989 ❍लखन प्रजापति ❍भगवान दास पाटिल ❍दीपा प्रजापति - 094073-46058 ❍शंकर चौहान - 092296-72658 ❍रंगलाल ठाकरे ❍रामेश्वर साहू ❍विजय मिगलानी ❍**नंदनः** रमेश जावलकर ❍**जुन्नारदेवः** गजानन मालवीय - 094249-60608 ❍कमल किशोर कुरोलिया - 094067-26149 ❍जिनेन्द्र कुमार माहोरे - 094070-74365 ❍ललित शर्मा - 099939-65906 ❍सहदेव शर्मा - 07160-230987 ❍नेतराम डेहरिया - 094249-91092 ❍विनोद चौरसिया - 094243-91636 ❍संजय कुरेलिया - 099933-59847 ❍दिलीप यादव - 07160-230436 ❍**परासियाः** प्रदीप राय - 099770-44744 ❍रोमन सहगल - 098266-85363 ❍नीरजलाल - 098262-85425 ❍उदय सिंह गौतम - 099265-85343 ❍**न्यूटन११ नं.:** पवन मसराम - 099264-44921 ❍**चॉदामेटाः** रामपाल सिंह - 094247-21380 ❍वेदवती पाल ❍लता देशमुख ❍**पगाराः** संतोष भलावी - 096693-42735 ❍**झिरपाः** देवीसिंह राय - 094069-45547 ❍**पिपरियाः** पूरन गढ़वाल - 099934-14311 ❍**सावनेरः** गुणवंत राउत - 094224-92349 ❍**नागपुरः** राजेन्द्र सेंगर - 098230-19750 ❍**घुघ्घुसः** वासुदेव ठाकरे - 094209-62749 ❍**कन्हानः** भाऊराव ठाकरे - 093728-40421 ❍**होशंगाबादः** सरनामसिंह ठाकुर - 098931-90771 ❍**बैतुलः** जनकलाल मवासे - 094253-61761 ❍मनोज अग्रवाल - 098276-78341 ❍**सारनीः** शिवकुमार धाड़से ❍**भोपालः** आई.एस.पदाम - 099939-52685 ❍**नरसिंगपुरः** रत्नेश शर्मा - 094244-31515 ❍**खण्डवाः** रंजीत सिंह यादव - 095752-02248 ❍**गढ़चिरोलीः** प्रवीन नागरकर - 097660-19983 ❍**कटनीः** महेन्द्र सिंह उइके - 094250-03544 ❍**शाजापुरः** बी.एस.संकत - 096935-75765 ❍

❖❖ ❖❖ ❖ ❖❖ ❖❖❖ ❖❖ ❖ ❖❖ ❖❖❖

11 जुलाई 2010

महामृत्युंजय साधना शिविर, मुम्बई

शिविर स्थलः रेल्वे वेलफेयर हॉल, मध्य रेल्वे वर्कशॉप, अम्बेडकर रोड, वी.आई.पी. शोरूम के सामने, परेल (ईस्ट), मुम्बई

❖❖ ❖❖ ❖ ❖❖ ❖❖❖ ❖❖ ❖ ❖❖ ❖❖❖

23-24-25 जुलाई 2010

गुरु पूर्णिमा महोत्सव, हरिद्वार

शिविर स्थलः हरिद्वार

आयोजकः अशोक शर्मा - 098888-39585 ❍अशोक खुराना - 094160-84960 ❍विजय नागरू - 093125-66369 ❍विजय शास्त्री - 094161-17631 ❍पी.सी.सौपरर्ण - 094164-17344 ❍श्रवण कुमार - 092552-74770 ❍कपिल वांसल - 098298-00999 ❍गौतम - 098133-41100 ❍कपिल चानना - 097299-00999 ❍पंकज चन्देल - 098722-31666 ❍कमल मनचंदा - 098991-53867 ❍कृष्णा खुराना - 094165-47994 ❍जगदीश पाण्डेय - 093695-20921 ❍अजय गावा - 094165-65547 ❍गोपाल - 098961-87061 ❍पी.एन. पाण्डेय - 094311-27345 ❍विजय कुमार झा - 094313-79234 ❍के.के.तिवारी - 098279-55731 ❍राजीव चौपडा - 093547-48956 ❍तेजीन्दर अरोड़ा - 098966-51405 ❍हरिश (काकू) - 093548-45858 ❍प्रमोद वर्मा - 093190-74567 ❍सिद्धाश्रम साधक परिवार, फरीदाबाद - 099106-05725 ❍सिद्धाश्रम साधक परिवार, सहारनपुर - 099271-20654/094114-06812, 099176-66670 ❍सिद्धाश्रम साधक परिवार, चण्डीगढ़ ❍सिद्धाश्रम साधक परिवार, देहरादून ❍सिद्धाश्रम साधक परिवार, बिजनौर ❍इन्द्रपाल - 098183-83931 ❍राधेश्याम ❍सुरेश भारद्वाज - 094160-31474 ❍श्रीमती नीलम शर्मा - 098888-39585 ❍के. एल. छाबडा - 094666-94070 ❍सिद्धाश्रम साधक परिवार, लुधियाना ❍सिद्धाश्रम साधक परिवार, अमृतसर ❍प्रद्युमन शर्मा - 090458-03135 ❍अजय सिंह ❍राजवीर सिंह ❍अभय नारायण सिंह ❍वरूणेन्द्र श्रीवास्तव ❍करूणेन्द्र श्रीवास्तव ❍सुनील कुमार ❍प्रियदर्शी ❍राम आसरे मिश्रा ❍रामचन्द्र मिश्रा ❍राजकुमार ❍मोती चौहान ❍सुजीत राय ❍आनन्द तिवारी ❍एम. पी. सिंह ❍डॉ. चन्द्र प्रकाश ❍राम नारायण पटवा ❍एस. बी. सिंह ❍महेन्द्र प्रताप सिंह ❍हरिनारायण सिंह बिसेन ❍ईश्वर प्रसाद सिंह ❍रणविजय सिंह ❍आशीर्ष मौर्य ❍अनिल गुप्ता ❍प्रदीप भारद्वाज ❍सिद्धाश्रम साधक परिवार, रायबरेली ❍अच्छेलाल ❍बी. के. भाई ❍रामबाबू सक्सेना ❍सावित्री चन्द्र प्रकाश शर्मा ❍प्रकाश यादव ❍लालमणी निखिल ❍शिवशंकर यादव ❍के.के. निखिल ❍सिद्धाश्रम साधक परिवार, आगरा ❍श्रीमती चन्द्रावती आर्या ❍दिनेश चन्द्र पाण्डेय ❍श्याम सिंह यादव ❍तेहराज सिंह ❍गोकरन सिंह ❍वीरेन्द्र त्रिवेदी ❍ओमकार सिंह ❍राजेन्द्र सिंह ❍योगी प्रकाशानन्द ❍भगवान सिंह राणा ❍डॉ. धर्मेन्द्र सुरीरा ❍डॉ. सूर्यमणि डंगवाल ❍डॉ.एम.बी.भास्कर ❍लक्ष्मण सिंह विष्ट ❍हुकुम सिंह विष्ट ❍अब्बल सिंह ❍केदार सिंह ❍शैलेन्द्र लिंगवाल ❍कल्याण सिंह ❍एस.एन.डिमरी ❍कर्ण सिंह ❍शिवाजी ❍

❖❖ ❖❖ ❖ ❖❖ ❖❖❖ ❖❖ ❖ ❖❖ ❖❖❖

मैं ग्रंथ लिखता हूं सजीव, सप्राण

सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी

के ज्ञान और चेतना की अनमोल कृतियां

ये ग्रंथ कोरे कागजों पर स्याही से नहीं लिखे हैं,
अपितु चेतना से, शिष्यों के हृदय पत्र पर गहराई में डूब कर लिखे हैं

पुस्तक	मूल्य
☆ मूलाधार से सहस्रार तक	150/-
☆ फिर दूर कहीं पायल खनकी	150/-
☆ गुरु गीता	150/-
☆ ज्योतिष और काल निर्णय	150/-
☆ ध्यान धारणा और समाधि	150/-
☆ हस्त रेखा विज्ञान और पंचागुली साधना	120/-
☆ निखिलेश्वरानन्द स्तवन	120/-
☆ भौतिक साधना और सफलता	120/-
☆ विश्व की श्रेष्ठ दीक्षाएं	96/-
☆ निखिलेश्वरानन्द सहस्रनाम	96/-
☆ विश्व की आलौकि साधनाएं	96/-
☆ लक्ष्मी प्राप्ति	60/-
☆ अमृत बूंद	60/-
☆ भैरव साधना	40/-
☆ दीक्षा संस्कार	30/-
☆ तांत्रोक्त गुरु पूजन	30/-
☆ सर्व सिद्धि प्रदायक यज्ञ विधान	20/-
☆ महाकाली साधना	20/-
☆ षोडशी त्रिपुर सुन्दरी	20/-
☆ तंत्र साधना	20/-
☆ भुवनेश्वरी साधना	20/-
☆ मैं सुगन्ध का झोंका हूं	20/-
☆ हंसा उड़हूं गगन की ओर	20/-
☆ मैं बाहें फैलाये खड़ा हूं	20/-
☆ अप्सरा साधना	20/-
☆ बगलामुखी साधना	20/-
☆ धन वार्षिणी तारा (महासरस्वती)	20/-

सम्पर्क :-

मंत्र-यंत्र-तंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : 0291-2432209, 2433623, फैक्स : 0291-2432010

दिल्ली कार्यालय - सिद्धाश्रम 306, कोहाट एन्क्लेव पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-27352248, टेली फैक्स 11-27356700

रजिस्ट्रेशन नं. 55791/93 A.H.W डी. एल. नं. 19070/96

माह : जून में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)
11-12-13 जून

पूज्य गुरुदेव निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगें व दीक्षा प्रदान करेंगें। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)
25-26-27 जून

प्रेषक -
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - 342031 (राजस्थान)
फोन : 0291-2432209,2433623,
टेलीफैक्स - 0291-2432010

वर्ष - 30 अंक - 05